

एस्ट्रोसॉज पत्रिका

शेयर बाजार में
तेज़ी-मंदी
के कारण

गुल रिवायगा साल
का अंतिम सूर्यग्रहण ?

बड़ी कठिन है इगर
उद्धव की

2020 में
भारत का भविष्य

क्यों ज़रूरी
है शादी के लिए
कुँडली मिलान ?

दिसंबर, 2019 (वर्ष-1, अंक 3) बीटा

एस्ट्रोसेज पत्रिका

दिसंबर, 2019

वर्ष : 1 अंक : 3

प्रधान सम्पादक
पुनीत पाण्डे

सहायक सम्पादक - मृगांक शर्मा

सलाहकार सम्पादक - पीयूष पाण्डे

डिजाइनर - शान्तनु निगम
कोमल सक्सेना

संयोजक - विजय पाठक
रवि ठाकुर
लीशा चौहान

मार्केटिंग प्रमुख - हरीश नेगी
विशाल भारद्वाज

सम्पादक से पत्राचार हेतु पता:

सम्पादक, एस्ट्रोसेज पत्रिका

A -139, सैक्टर 63, नोएडा - 201307.(India)

Phone : +91 9560670006

Mail : info@astrosage.com

Website : www.astrosage.com

संपादकीय



मित्रों,

एस्ट्रोसेज पत्रिका को देश की सबसे बड़ी पत्रिका बनाने के लिए धन्यवाद। एस्ट्रोसेज द्वारा ज्योतिष के क्षेत्र में किया छोटा सा प्रयोग मात्र तीन माह में अभिनव साबित हुआ है। दूसरा अंक 70 हजार से अधिक डाउनलोड हुआ, जो न केवल हमारा उत्साह बढ़ाता है, बल्कि बताता है कि एक स्तरीय ज्योतिषीय पत्रिका की कितनी कमी है और लोग ज्योतिष की अच्छी पत्रिका को लेकर कितने उत्साहित हैं। दिसंबर अंक आपके हाथ में हैं। इस अंक में हमने 2020 में देश के हाल संबंधी रिपोर्ट को अपनी कवर स्टोरी बनाया है। इसके अलावा उद्घव ठाकरे के राजनीतिक भविष्य से लेकर भजन की अनूठी दुनिया और दिसंबर में आने वाली फिल्मों के विषय तक पर ज्योतिषीय टिप्पणियां हैं। अब आपकी प्रतिक्रिया की प्रतीक्षा है। आप यदि बतौर लेखक एस्ट्रोसेज पत्रिका के लिए लिखना चाहते हैं तो भी आपका बहुत बहुत स्वागत है। हमारा ई-मेल पता है

magazine@ojassoft.com

आपका

पुनीत पाण्डे (प्रधान सम्पादक)

विषय सूची

विषय	पृष्ठ संख्या	विषय	पृष्ठ संख्या
1. 2020 में भारत का भविष्य	01	18. व्रत रखते समय इन 10 बातों का अवश्य रखें ध्यान	68
2. तनाव भगाएं, खुश रहें	11	19. सितारों के आईने में दो बड़ी फिल्में	70
3. बड़ी मुश्किल डगर है उद्धव ठाकरे की	14	20. आस्था का मामला है ज्योतिषः इनामुल हक़	74
4. नए साल में अपनाएं वास्तु टिप्प्स और सप्ने करें साकार!	16	21. भक्ति का एक मार्ग भजन	75
5. गुल खिलाएगा साल का अंतिम सूर्यग्रहण ?	18	22. हस्त रेखा ज्ञान को समझें	77
6. सामूहिक भाग्य का महत्व	25	23. राशिफल, दिसंबर 2019	79
7. कमाल करे गायत्री मंत्र	27	24. जानिये व्यक्ति को कैसे डुबो देता है जन्मकुंडली में बना गुरु चांडाल योग	82
8. हर किचन में मौजूद होती हैं ये आयुर्वेदिक औषधि	30	25. ज्योतिष सीखें भाग-3	85
9. अंक ज्योतिष का जीवन पर प्रभाव	33		
10. शीघ्र विवाह के अचूक उपाय	36		
11. क्यों ज़रूरी है शादी के लिए कुंडली मिलान?	40		
12. गीता का महत्व बताती गीता जयंती	43		
13. नाम के पहले अक्षर में छिपे हैं आपके जिंदगी के कई राज़!	45		
14. देशभर में इन जगहों पर अपने अनोखे अवतारों में विराजमान हैं शनिदेव	49		
15. ये 7 रुप जो बदल सकते हैं आपकी दुनिया	52		
16. मंगल का वृश्चिक राशि में गोचर क्या कमाल दिखाएगा ?	56		
17. शेयर बाजार में तेज़ी-मंदी के ज्योतिषीय कारण	63		

2020 में भारत का भविष्य



ना जाने क्या-क्या सोचते, समझते और रोजमर्रा के कामों से जूझते हुए 2019 बीत ही गया और आज हम साल के अंतिम महीने में हैं, लेकिन जैसे उगते हुए सूर्य की पहली किरण जीवन में उत्तरि और प्रकाश लेकर आती है, ठीक उसी प्रकार आने वाला हर साल हमारे जीवन में नई उम्मीदें लेकर आता है और हमारे भीतर उत्साह का संचार करता है। हम सभी 2020 के आगमन की प्रतीक्षा कर रहे हैं और आशा कर रहे हैं कि आने वाला साल सच में हैप्पी न्यू ईयर कहलाए। अर्थात हम सभी वास्तविक रूप से तरक्की कर पाएँ और हमारा देश आर्थिक, सामाजिक, सामरिक और हर मोर्चे पर दुनिया से आगे निकलकर विश्व गुरु बन जाए ताकि हम गर्व से कह सकें कि हम भारतीय हैं।

अब जब हम 2020 की दहलीज पर खड़े हैं तो कई प्रश्न हमारे मन में उठ रहे हैं कि आने वाला साल हमारे लिए कैसा रहेगा। वैदिक ज्योतिष इस संदर्भ में हमारी मदद करता है, क्योंकि ग्रहों राशियों और अन्य आधार भूत

सिद्धांतों के आधार पर ज्योतिष यह बता सकता है कि आने वाले वर्ष में हमारे देश के लिए किस प्रकार की संभावनाएं बन रही हैं। इसी को ध्यान में रखते हुए हमने कुछ कुंडलियों की सहायता से यह जानने का प्रयास किया है कि हमारे देश की आर्थिक स्थिति, राजनीतिक स्थिति, प्राकृतिक स्थिति वर्ष 2020 में कैसी रहने वाली है। क्या मोदी सरकार चुनौतियों का सामना कर पाने में सफल रहेगी? क्या विधानसभा चुनावों में कोई उलटफेर तो नहीं होगा? क्या भारत आर्थिक मोर्चों पर आगे बढ़ पाएगा? क्या आने वाला T20 वर्ल्ड कप भारत आएगा? ऐसे अनेक सवाल हैं जो हमारे मन में हैं और इन सभी प्रश्नों का उत्तर जानने के लिए आइए डालते हैं वर्ष 2020 में भारत के भविष्य पर एक नजर:

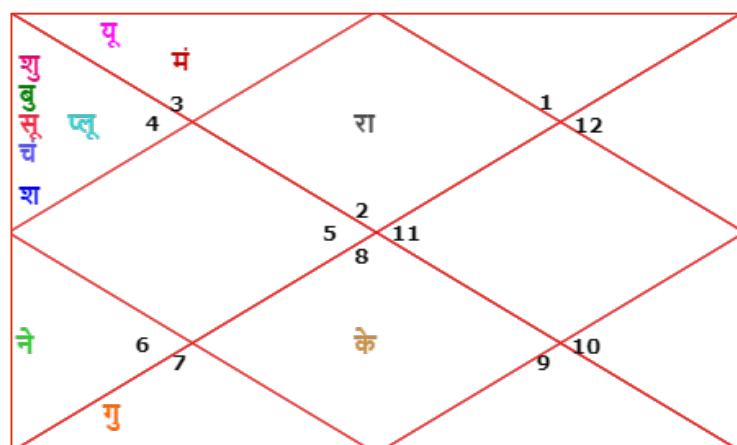
वर्ष 2020 और ग्रहों का गोचर

सबसे पहले जान लेते हैं कि वर्ष 2020 में बड़े गोचर कौन-कौन से हैं। 26 दिसंबर 2019 को सूर्य ग्रहण पड़ेगा जो

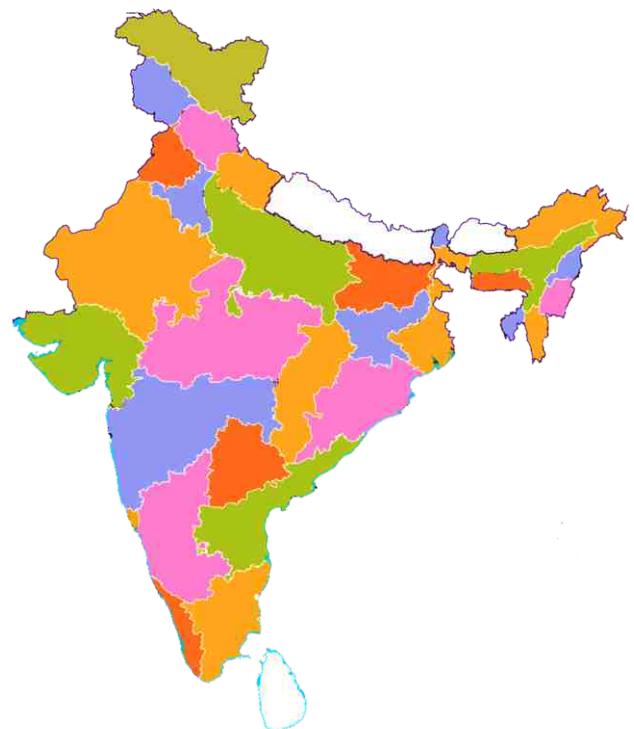
भारत में दृश्यमान होगा और यह भी धनु राशि में होगा जिसमें गुरु शनि और केतु की युति बनी हुई है। इनमें देव गुरु बृहस्पति 5 नवंबर 2019 से धनु राशि में प्रवेश कर चुके हैं, जो 30 मार्च को मकर राशि में प्रवेश करेंगे। वहां वक्री होने के बाद 30 जून को पुनः धनु राशि में वापस आएंगे और फिर 20 नवंबर को मकर राशि में चले जाएंगे। वर्ष की शुरुआत में 24 जनवरी 2020 को शनि का गोचर अपनी राशि मकर में होगा और सितंबर के महीने में राहु और केतु भी अपनी-अपनी राशियां बदलकर क्रमशः वृषभ और वृश्चिक राशि में प्रवेश कर जाएंगे।

भारत की कुंडली और 2020 की स्थिति

भारत जिसे हम स्वतंत्र भारत की कुंडली के रूप में भी जानते हैं, उसकी लग्न राशि वृषभ है तथा चंद्र राशि कर्क है। वैसे भारत की प्रभाव राशि मकर भी मानी जाती है। स्वतंत्र भारत की कुंडली में देव गुरु बृहस्पति अष्टम और एकादश भाव के स्वामी होकर छठे भाव में विराजित हुए हैं और शनि देव नवम और दशम भाव के स्वामी होकर प्रबल योग कारक होने के बाद तीसरे भाव में उपस्थित हैं।



स्वतंत्र भारत
(15-8-1947, 0:0:1, नई दिल्ली)



- देव गुरु बृहस्पति का गोचर भारत की चंद्र राशि से छठे भाव में हो रहा है, जोकि लग्न से अष्टम भाव की राशि है। बृहस्पति का यह गोचर अनुकूल नहीं कहा जा सकता क्योंकि स्वतंत्र भारत की कुंडली में भी बृहस्पति अनुकूल स्थिति में नहीं है और वर्तमान समय में भारत चंद्रमा की महादशा और देव गुरु बृहस्पति की अंतर्दशा से गुज़र रहा है, जो कि 11 दिसंबर 2019 तक जारी रहेगी।
- गौरतलब है कि इसी धनु राशि में पहले से ही शनि और केतु विराजमान हैं तथा सूर्य ग्रहण भी दिसंबर में इसी राशि में पड़ने वाला है। मेदिनी ज्योतिष के अनुसार अष्टम भाव मुख्य रूप से देश की मृत्यु दर, सामाजिक सुरक्षा, गुप्त नीतियाँ, षड्यंत्र, राष्ट्रीय ऋण, प्राकृतिक आपदाएं तथा मुख्य रूप से कठिनाइयों के बारे में पता चलता है। बृहस्पति एक वृद्धि कारक ग्रह है, जो देश के संबंध में न्यायालयों और धर्म तथा धर्म गुरुओं के बारे में भी बताता है।

- शनि की बात की जाए तो शनि लोकतंत्र का कारक है और बृहस्पति लोकतंत्र के प्रभाव का घोतक है। अष्टम भाव में इन दोनों ग्रहों की युति केतु के साथ होना देश में धार्मिक असहिष्णुता, उन्माद, प्राकृतिक आपदाओं और देश के लिए कठिन समय के बारे में बताता है।
- अर्थात् यह कहा जा सकता है कि आने वाले समय में कुछ प्राकृतिक आपदाएं हमारे देश में आ सकती हैं, जिनमें मुख्य रूप से अधिक बर्फबारी और सर्दी के मौसम में बारिश भी संभव है। शनि ठंडी हवाओं का कारक है और बृहस्पति वृद्धि कारक। इन दोनों के योग से ऐसी घटनाएँ संभव हैं और केतु का भी इसमें मुख्य योगदान होगा। संभव है देश में कुछ अराजक तत्वों की वजह से शांति पूर्ण कार्योंमें व्यवधान आएं।
- इसी के प्रभाव से सरकार द्वारा टैक्स प्रणाली को और भी अधिक प्रभावशाली बनाना और टैक्स कलेक्शन भी बड़े स्तर पर किया जा सकता है।
- इसके बाद शनि का गोचर स्वतंत्र भारत की राशि से सप्तम भाव और लगन से नवम भाव में होगा। यह शनि की अपनी राशि है। यहां आकर शनि काफी बड़े बदलाव लेकर आएगा, विशेष रूप से न्याय के क्षेत्र में जिसकी वजह से न्यायपालिका में कुछ बड़े बदलाव देखने को मिल सकते हैं। इसके अतिरिक्त भारत की आर्थिक स्थिति और प्रगति अवश्य होगी। भारत का बजट भी बेहतर रहेगा और उसका आकार बढ़ेगा। रक्षा बजट पर विशेष रूप से ध्यान दिया जाएगा और समाज के गरीब तबके के बारे में भी सरकार की कुछ योजनाएं फलीभूत होंगी। इसके अतिरिक्त सार्वजनिक क्षेत्रों में सरकारी के साथ निजी भागीदारी को बढ़ावा दिया जा सकता है।

आइए अब इन सब को विस्तार से समझते हैं और प्रत्येक

विषय में और आगे की बात करते हैं। आमतौर पर चैत्र शुक्ल प्रतिपदा और गणतंत्र दिवस के समय की कुंडलियों को भी अध्ययन में सम्मिलित किया जाता है, लेकिन क्योंकि यहां प्रश्न वर्ष 2020 की शुरुआत का है, इसलिए हमने ग्रहों की स्थितियों और दशाओं को ध्यान में रखकर ही भविष्य का हाल जाने का प्रयास किया है।

2020 में भारत का राजनीतिक परिवर्तन

अगर देश के राजनीतिक परिवर्तन पर नजर दौड़ाई जाये तो नजर आता है कि आने वाले समय में

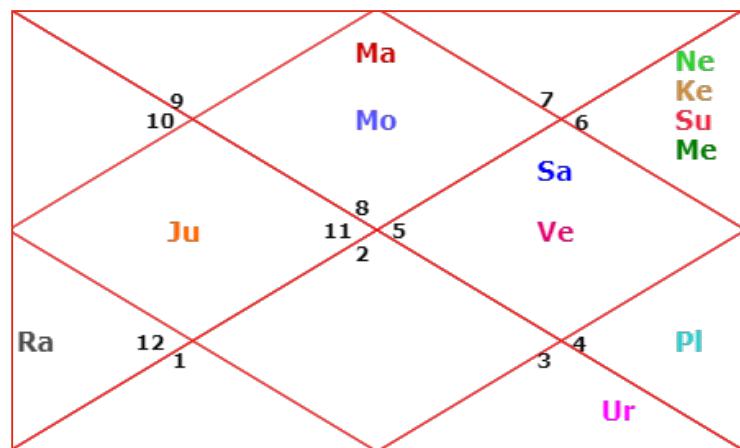


चंद्रमा की महादशा में शनि का अंतर मध्य दिसंबर से शुरू हो जाएगा, जो जुलाई 2021 तक चलेगा। अर्थात् इस पूरे वर्ष शनि की अंतर्दशा अपना प्रभाव दिखाएगी और शनि भारत की कुंडली में योगकारक ग्रह होकर तीसरे भाव में विराजमान है और बुध के नक्षत्र में हैं। निश्चित तौर पर शनि की यह स्थिति भारत की राजनीतिक परिवर्तन के लिए अनुकूलता लेकर आएगी, लेकिन सरकार विभिन्न प्रकार के विरोधियों का सामना करते हुए अपनी गतिविधियों को जारी रखेगी और विपक्ष को पूरी तरह से जवाब देगी। हालांकि लोकतांत्रिक परिस्थितियों को बिगाड़ने का भी पूरा प्रयास किया जाएगा और धर्म और धन का प्रयोग करके भारत के राजनीतिक ताने-बाने को छिन्न-भिन्न करने का प्रयास उन लोगों द्वारा अवश्य किया जाएगा, जो चंद वोटों की खातिर किसी भी हृद तक जा सकते हैं। राजनीतिक तौर पर सरकार को कई ओर से विरोध का सामना करना पड़ेगा और कुछ विरोध के स्वर अंतर्कलह के रूप में भी सामने आ सकते हैं, विशेषकर सरकार के कुछ क्रीड़ी दल सरकार से किनारा कर सकते हैं। हालांकि

आने वाले समय में उन्हें इसका कितना लाभ होगा, यह तो समय ही बताएगा, लेकिन सत्ताधारी पार्टी को स्वयं को सिद्ध करने का प्रयास करना ही होगा। शनि देव न्याय के देवता हैं और नवम भाव धर्म और न्याय का भाव भी होता है। बड़े गोचरों का प्रभाव पहले से ही आने लगता है। शनिदेव का गोचर मकर राशि में 24 जनवरी से होगा। लेकिन इसका प्रभाव पहले से ही दृष्टिगोचर होने लगा है। धनु के गुरु में राम मंदिर को लेकर स्थिति स्पष्ट हो चुकी है क्योंकि धनु राशि काल पुरुष की कुंडली के नवम अर्थात् धर्म भाव की राशि है और इसी में देव गुरु बृहस्पति धार्मिक केतु के साथ विराजमान हैं, जिसको शनि का साथ प्राप्त है। शनि के मकर में होने से देश की न्यायपालिका में आमूलचूल बदलाव देखा जा सकता है। ऐसे में लोगों को न्याय मिलने में शीघ्रता होगी और शनिदेव की कृपा से सरकार की नीतियों की पहुंच आम आदमी तक सुलभ होगी, जिसका लाभ उन्हें मिलेगा और इससे सरकार की छवि भी सुधरेगी। यहीं पर बृहस्पति देव भी बीच-बीच में अपना प्रभाव दिखाते रहेंगे, जिसकी वजह से कुछ प्रदर्शन और विद्रोह भी अवश्य सर उठाएंगे, जिसका सरकार को जवाब देना पड़ेगा। धर्म संबंधित लोगों को इस दौरान कुछ लाभ होगा। निश्चित तौर पर सरकार को कई मामलों में कठोर कदम लेने की आवश्यकता पड़ेगी।

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी की कुंडली और 2020

देश के वर्तमान प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी की जन्म कुंडली वृश्चिक लग्न की है और वृश्चिक राशि का चंद्रमा है।



श्री नरेंद्र मोदी

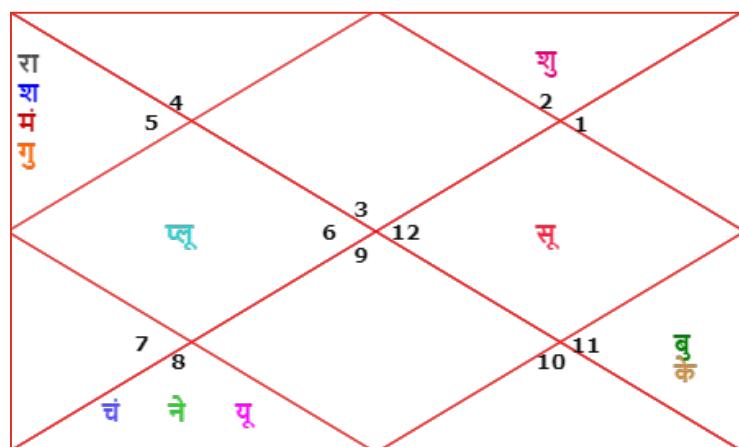
(17-9-1950, 11:00, मेहसाणा)

इस दौरान उनकी दशा भी चंद्रमा की महादशा के रूप में चल रही है और शुक्र की अंतर्दशा साथ में अपना प्रभाव दिखा रही है। वर्ष 2020 में शुक्र का अंतर उन पर प्रभाव डालने वाला होगा और स्वतंत्र भारत की कुंडली से उनकी राशि और लग्न सप्तम भाव में आता है, जिससे कि उनकी कुंडली देश की कुंडली को वर्तमान में मजबूती दे रही है। दोनों ही कुंडलियों में चंद्रमा प्रबल रूप से प्रभाव दिखा रहा है। उनकी कुंडली के लिए चंद्रमा नवम भाव का स्वामी होकर लग्न में लग्नेश मंगल के साथ उपस्थित है और प्रबल राजयोग बना रहा है और शुक्र, बृहस्पति के प्रभाव में है। सप्तम भाव अंतरराष्ट्रीय व्यापार और मुद्दों को भी दर्शाता है तथा पब्लिक इमेज का भाव भी है और द्वादश भाव विदेशों से संबंध भी बताता है। इसलिए इस पूरी दशा में श्री मोदी विभिन्न देशों के दौरे पर रहे हैं और उन देशों से अपने देश में व्यापार के लिए माहील बनाने में जुटे हुए हैं, जिसमें उन्हें सफलता भी मिल रही है। आने वाले साल में भी वह ऐसे ही कई निर्णय लेंगे, जिससे भारत का प्रभाव व्यापार के क्षेत्र में काफी बढ़ेगा और विदेशी देश भारत के साथ मिलकर आगे बढ़ेंगे, जिससे भारत की छवि भी मजबूत होगी और भारत की धाक भी जमेगी। इनकी

राशि से गुरु का गोचर दूसरे भाव में हो रहा है तथा वर्तमान में शनि की साढ़ेसाती चल रही है जो 24 जनवरी को समाप्त हो जाएगी और शनि के तीसरे भाव में आ जाएंगे, जो इनके पराक्रम को बढ़ाएगा और यह और भी मजबूती के साथ अपने काम को अंजाम दे पाएंगे। नतीजतन इन्हें आगे बढ़ने से कोई नहीं रोक पाएगा और भारत की छवि को भी इससे काफी हद तक लाभ मिलेगा। इस प्रकार कहा जा सकता है कि वर्ष 2020 मोदी जी के लिए काफी अनुकूल रहेगा। भले ही वे कुछ विरोधियों का सामना करें, लेकिन उसके बावजूद उनकी लोकप्रियता में वृद्धि ही होगी और उनकी लोकलुभावन योजनाएं लोगों के और निकट पहुंच कर उनको आगे बढ़ाएँगी।

बीजेपी की कुंडली और 2020

नरेंद्र मोदी जिस पार्टी से आते हैं, वह है भारतीय जनता पार्टी। इसकी जन्म कुंडली के अनुसार मिथुन लग्न और वृश्चिक राशि की पत्रिका बनती है।



**भारतीय जनता पार्टी
(6-4-1980, 11:40:0, नई दिल्ली)**

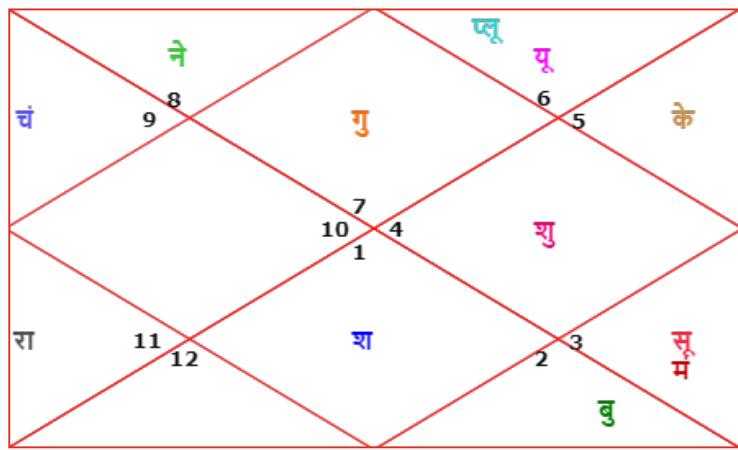
भारतीय जनता पार्टी की कुंडली में बृहस्पति का गोचर लग्न से सातवें भाव में और चंद्रमा से दूसरे भाव में हो रहा है,

जिससे धार्मिक तौर पर भी पार्टी को जाना जाएगा और धनु के बृहस्पति में पार्टी द्वारा कुछ और निर्णय लिए जाएंगे, जो लीक से हट कर होंगे। इस दौरान कुछ विरोधी दल भारतीय जनता पार्टी में शामिल होने की घोषणा कर सकते हैं और पार्टी के द्वारा कुछ ऐसी नीतियाँ बनाई जाएंगी, जो उसके प्रभाव को और भी अधिक हद तक बढ़ा देंगी तथा बीजेपी देश की सबसे बड़ी पार्टी के रूप में स्थापित हो सकती है। यहां मजे की बात यह है कि बीजेपी की कुंडली में भी चंद्रमा की महादशा ही प्रभाव दिखा रही है और राहु का अंतर पूरे वर्ष के दौरान रहने वाला है। चंद्रमा दूसरे भाव का स्वामी होकर छठे भाव में विराजमान है और राहु, शनि, मंगल और बृहस्पति के साथ युति करता हुआ तीसरे भाव में बुध की दृष्टि में है तथा केतु के नक्षत्र में है। यह स्थिति थोड़ा उथल पुथल ज़रुर बढ़ाएगी और कुछ खास मित्र दलों को पार्टी से अलग भी करवा सकती है। इसके बाद शनि का गोचर मकर राशि में होने से स्थितियों में और बदलाव आएगा और ऐसी संभावना है कि वर्तमान केंद्र सरकार और राज्यों की बीजेपी सरकार के मध्य कुछ बातों को लेकर तनाव की स्थिति या विरोध की स्थिति उत्पन्न हो जाए। ऐसे में केंद्र सरकार बीजेपी की नीतियों के विरुद्ध जाकर कार्य कर सकती है, जिसकी वजह से कुछ विरोध का सामना भी करना पड़ सकता है।

श्री राहुल गांधी की जन्म कुंडली और 2020

कांग्रेस के कर्ता-धर्ता श्री राहुल गांधी की कुंडली तुला लग्न की है और इनकी राशि धनु है।





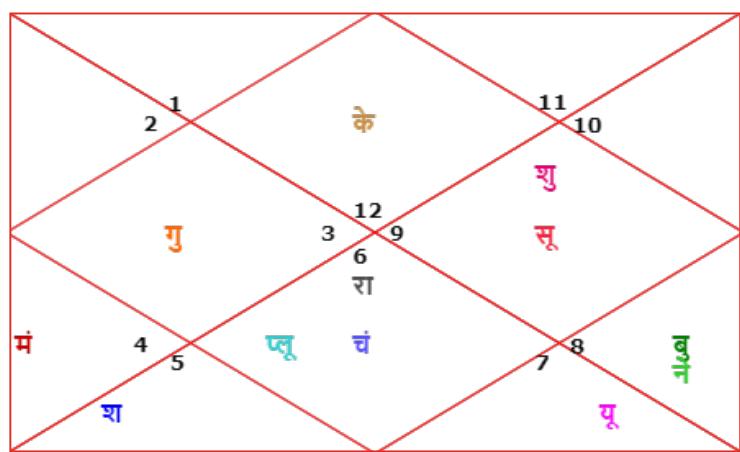
श्री राहुल गांधी
(19-6-1970, 14:28:0, नई दिल्ली)

इनकी कुंडली में ध्यान देने योग्य बात यह है कि बृहस्पति का गोचर चंद्र राशि के ऊपर ही है, जहां शनि भी बैठे हैं और केतु भी। इसी दिसंबर महीने में सूर्य ग्रहण भी इसी राशि पर लगेगा, जो कि इनके लिए परेशानियां लेकर आ सकता है। इनको स्वास्थ्य के मामले में कुछ परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। इस पूरे वर्ष राहु की महादशा में राहु की अंतर्दशा के प्रभाव में रहेंगे। राहु इनकी कुंडली में पंचम भाव में शनि की राशि कुंभ में स्थित है तथा अपने ही नक्षत्र शतभिषा में है। राहु की यह स्थिति इन्हें अपने क्षेत्र में आगे ज़रुर बढ़ाएगी, लेकिन राहु अधिष्ठित राशि का स्वामी शनि सप्तम भाव में नीच राशि में विराजमान है, जिसकी वजह से पब्लिक इमेज का नुकसान उठाना पड़ सकता है, लेकिन दूसरी ओर देव गुरु बृहस्पति की दृष्टि इन के लिए अच्छा काम करेगी और कई बार इनकी बातें सुर्खियाँ बटोरेंगी। वर्तमान में राहु का गोचर इनके जन्म कालीन सूर्य और मंगल पर हो रहा है, जिसकी वजह से बात का बतंगड़ भी बनेगा और इसके लिए इन्हें परेशान भी होना पड़ सकता है। शनि का गोचर इनकी चंद्र राशि से दूसरे भाव में होगा, जिससे साढ़ेसाती का अंतिम चरण शुरू होगा और इनके लग्न से चतुर्थ भाव में शनि का गोचर होगा,

जो कि अधिक अनुकूल नहीं कहा जा सकता। ऐसी स्थिति में इन्हें भारी दबाव का सामना करना पड़ सकता है और अपनी ही पार्टी के कुछ लोगों की नाराज़गी भी झेलनी पड़ सकती है।

कांग्रेस की कुंडली और 2020

यदि कांग्रेस की कुंडली पर नजर डाली जाए तो पार्टी की कुंडली मीन लग्न की है और कन्या राशि है।



कांग्रेस
(2-1-1978, 11:59:0, नई दिल्ली)

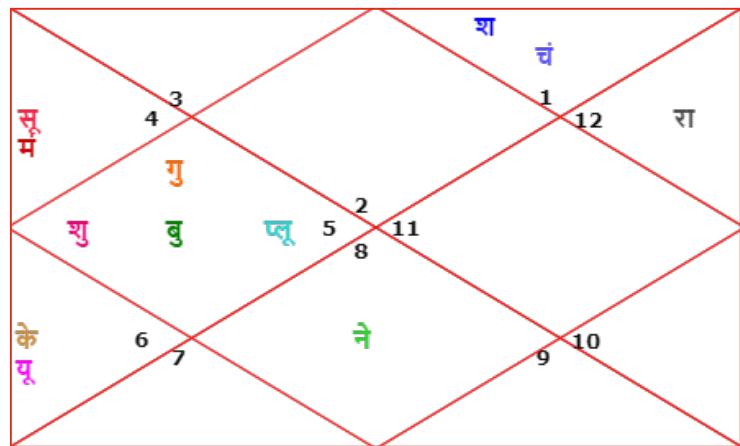
पार्टी की कुंडली देखने से पता चलता है कि देव गुरु बृहस्पति लग्न से दशम और चंद्र राशि से चतुर्थ भाव में प्रवेश कर चुके हैं तथा शनि का गोचर लग्न से ग्यारहवें और चंद्रमा से पंचम भाव में होगा। यह दोनों ही स्थितियां कुछ हद तक चुनौतियों के साथ कांग्रेस को लाभ अवश्य दिलाएंगी और कुछ क्षेत्रों में कांग्रेस को लाभ मिल सकता है, लेकिन यह लाभ इतना भी नहीं होगा कि कांग्रेस अपनी बची हुई साख को पूरी तरह उभार पाए, इसलिए पार्टी को काफी हद तक मेहनत करनी होगी और जमीन से जुड़कर लोगों की जड़ तक पहुँचना होगा। वर्तमान समय से लेकर अगले वर्ष गुरु की महादशा में सूर्य की अंतर्दशा चलेगी,

जो कि अनुकूल समय कहा जा सकता है क्योंकि गुरु इनके लग्न और दशम भाव का स्वामी होकर चौथे भाव में विराजमान है तथा सूर्य छठे भाव का स्वामी होकर दशम भाव में विराजमान है। हालांकि पार्टी को आपसी खींचतान का भी सामना करना पड़ेगा, जिसकी वजह से कई जगहों पर पार्टी को नेतृत्व बदलना पड़ सकता है।

2020 में दिल्ली और बिहार के विधानसभा चुनाव

इस साल देश के दो बड़े राज्यों दिल्ली और बिहार के विधानसभा चुनावों का बिगुल बज सकता है। जहां दिल्ली में जनवरी और फरवरी के मध्य चुनाव हो सकते हैं, वहीं बिहार में अक्टूबर और नवंबर में यह स्थिति बनेगी। अगर ग्रहों की स्थिति पर नजर डाली जाए तो यह कहा जा सकता है कि बृहस्पति का धनु राशि में स्थित होना सत्ताधारी पार्टी के विरुद्ध जा सकता है, लेकिन यदि चुनाव उस दौरान होते हैं जब बृहस्पति और शनि दोनों ही मकर राशि में हों तो उस दौरान सत्ताधारी पार्टी को काफी हद तक लाभ मिल सकता है। दिल्ली चुनावों की बात करें तो जनवरी-फरवरी के मध्य देव गुरु बृहस्पति धनु राशि में ही रहेंगे, जिसकी वजह से इस पार्टी को थोड़ा सा कष्ट उठाना पड़ सकता है, लेकिन यदि बिहार चुनाव देखे जाए तो उस दौरान सरकार जोड़-तोड़ करके अपनी सत्ता बचाने में कामयाब हो सकती है।

यदि दिल्ली के चुनाव में आम आदमी पार्टी की बात की जाए तो सरकार के मुखिया **अरविंद केजरीवाल** की जन्म कुंडली वृषभ लग्न और मेष राशि की है।



श्री अरविंद केजरीवाल

(16-8-1968, 23:46, हिंसार)

दिल्ली में जनवरी अथवा फरवरी के महीने में चुनाव हो सकते हैं। इस दौरान इनकी कुंडली में गुरु की महादशा में शुक्र की अंतर्दशा चल रही होगी। गुरु इनकी कुंडली में आठवें और ग्यारहवें भाव का स्वामी होकर चतुर्थ भाव में शुक्र और बुध के साथ विराजमान हैं और शुक्र इनकी कुंडली में लग्न और छठे भाव का स्वामी है। इस दौरान इनकी कुंडली में बृहस्पति का गोचर आठवें भाव में होगा और 24 जनवरी को शनि का गोचर नवम भाव में होगा, जिससे पता लगता है कि इनको अप्रत्याशित रूप से उलटफेर का शिकार होना पड़ सकता है। हालांकि कुछ जगह इनका प्रदर्शन पहले से भी बेहतर होगा, लेकिन कुछ जगह इन्हें काफी हद तक निराशा का सामना करना पड़ सकता है।

2020 में भारतीय अर्थव्यवस्था

2020 के लिए सभी भारतीयों के मन में सबसे ज्वलंत प्रश्न है कि भारतीय अर्थव्यवस्था आखिर किस दिशा में बढ़ेगी।



भारतीय अर्थव्यवस्था क्या यह सुधार की ओर जाएगी या

और नीचे की ओर जा सकती है। कई रेटिंग एजेंसियों ने भी भारत की अर्थव्यवस्था को कम रेटिंग देनी शुरू कर दी है, जिससे यह सोच विकसित हो रही है कि देश की सरकार आर्थिक तौर पर असफलता की ओर बढ़ रही है। बृहस्पति का धनु राशि में गोचर अर्थव्यवस्था के लिए अधिक अनुकूल दिखाई नहीं दे रहा है, इसलिए थोड़ी चिंता का विषय अवश्य होगा, लेकिन जैसे ही शनि महाराज मकर राशि में आएंगे देश की अर्थव्यवस्था गति पकड़ने लगेगी और जिस अर्थव्यवस्था को हम नीचे लटका हुआ महसूस करने वाले थे, वही अर्थव्यवस्था इतनी तेजी से ऊपर जाएगी कि कई लोग यह सोचने पर हैरान हो जाएंगे कि वास्तव में ऐसा कैसे हुआ। शनिदेव के गोचर के बाद जब मार्च के अंत में बृहस्पति का गोचर भी मकर राशि में होगा, तब से यह प्रभाव दृष्टिगोचर होने लगेंगे और भारत की अर्थव्यवस्था द्रुतगति से आगे बढ़ेगी। सभी के अनुमानों को झुठलाते हुए भारत आर्थिक तौर पर प्रगति करेगा और देश का बजट भी वृद्धि के साथ पेश किया जाएगा। रक्षा बजट में भी जबरदस्त इज़ाफा होगा और आम जनजीवन को प्रभावित करने वाली योजनाओं की भी घोषणा होगी, जिसमें विशेष रूप से स्वास्थ्य समस्याओं को ध्यान में रखते हुए कोई बड़ी घोषणा हो सकती है। इसके अतिरिक्त देश की कार्यप्रणाली को लेकर भी कोई खास घोषणा हो सकती है, जो शुरू में हो सकता है कुछ लोगों को कठिन लगे, लेकिन देश के लिए काफी अच्छी साबित होगी। इस दौरान विदेशी संपर्कों अर्थात् विदेशों से भारत का व्यापार काफी व्यापक रूप से बढ़ेगा और भारत के स्वदेशी उद्योग को भी काफी हृद तक बढ़ावा मिलेगा। अर्थात् देशी कंपनियां भी काफी अच्छा मुनाफ़ा कमा पाएंगी, जिसकी वजह से देश की आर्थिक व्यवस्था ऊपर की ओर जाएगी। सार्वजनिक क्षेत्र में कई स्थानों पर सरकार के साथ-साथ निजी क्षेत्र की जिम्मेदारियों को भी

बढ़ाया जाएगा और उनकी भागीदारी बढ़ने से भी लोगों को अच्छी सुविधाएं मिलेंगी तथा आर्थिक तौर पर देश मुनाफ़े के रास्ते पर चल पड़ेगा। रियल एस्टेट में चली आ रही समस्याएं भी दूर हो सकती हैं और सरकार उनके लिए कोई अच्छी घोषणा कर सकती है, जिससे रियल एस्टेट कारोबार भी ऊपर उठेगा। कर प्रणाली को और भी पारदर्शी बनाया जाएगा, जिससे कर चोरी की घटनाओं में कमी आएगी।



2020 में भारत और प्राकृतिक आपदाएं

जैसा कि ऊपर भी बताया गया है 2020 देश के लिए प्राकृतिक तौर पर कुछ संवेदनशील कहा जा सकता है क्योंकि इस दौरान कई प्राकृतिक आपदाएं आने की संभावना रहेगी। इसकी शुरुआत दिसंबर से हो सकती है। इसकी वजह है कि जब जब भी बृहस्पति और शनि की युति होती है, तो बड़े बदलाव आते हैं और चूंकि भारत की कुंडली में अष्टम भाव में ही ग्रहों की यह स्थिति निर्मित होगी, जो की प्राकृतिक आपदाओं से क्षति को दर्शाता है। ऐसे में जान माल का नुकसान होने की संभावना रहेगी। सर्दी वाले क्षेत्रों में बर्फ बारी अधिक होगी और अधिक शीत लहर चलेगी तथा सर्दी के मौसम में भी कुछ स्थानों पर वर्षा होने के कारण स्थितियाँ और विकट होंगी, जिससे स्वास्थ्य संबंधित परेशानियां भी चुनौती बनकर खड़ी होंगी। बाढ़, भूस्खलन, भूकंप, जैसी स्थितियों का

निर्माण हो सकता है। हालांकि विश्व की बात की जाए तो यह दक्षिण देशों में अधिक होने की संभावना है, लेकिन भारत के परिवृश्य में दक्षिणी क्षेत्रों में ये समस्याएं अधिक होने की संभावना रहेगी, जिसके लिए समय पर आवश्यक कदम उठाने ज़रूरी होंगे।



2020 में धार्मिक, सांस्कृतिक एवं अन्य संभावनायें

वर्ष 2020 के दौरान धार्मिक और सांस्कृतिक क्षेत्रों में भारत निश्चित तौर पर उन्नति करेगा क्योंकि बृहस्पति विशेष रूप से धार्मिक और सांस्कृतिक क्रियाकलापों का कारक ग्रह है। अपनी राशि में जाकर यह इन सभी चीजों को और बल देगा तथा देश में धार्मिकता का वातावरण भी निर्मित होगा। हालांकि इसके विपरीत इस दौरान कुछ सांप्रदायिक घटनाएँ भी घटित हो सकती हैं, जो देश और सरकार के लिए तनाव का कारण बन सकती हैं। कुछ लोग समाज के ताने-बाने को बिगाड़ने का प्रयास कर सकते हैं और इनमें अंदरूनी ताकतों के अलावा कुछ विदेशी ताकतों का हाथ भी संभव है, इसलिए सरकार को इनके प्रति सावधानी बरतनी आवश्यक होगी। बहुत आश्वर्य की बात नहीं की शीघ्र ही श्री कृष्ण जन्मभूमि और वाराणसी में मंदिर बनाने की बात जोर पकड़ने लगे। यदि सामरिक दृष्टिकोण की बात की जाए तो इस दौरान भारत का

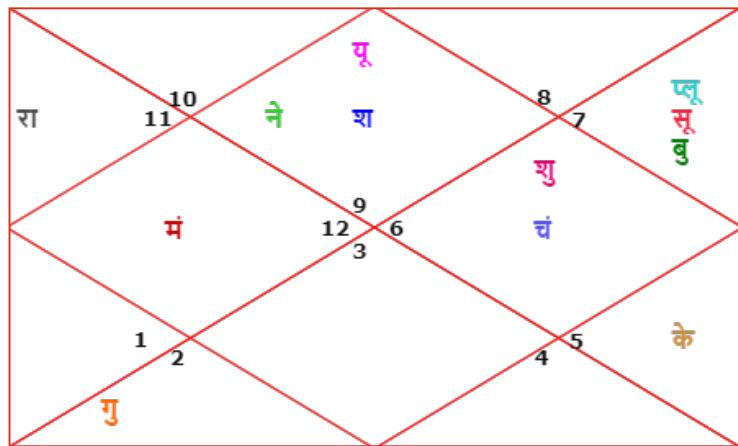
प्रभाव व्यापक रूप से फैलेगा, चाहे वह क्षेत्रफल के रूप में हो अथवा व्यापार के रूप में और भारत का नाम भी अनेक देशों की जुबान पर होगा, जिससे भारत के प्रभुत्व में वृद्धि होगी। इस वर्ष जनसंख्या को लेकर कई बड़ी योजना या अध्यादेश लाया जा सकता है। भारत की पाकिस्तान और चीन के साथ संघर्ष एवं तनाव की स्थितियां बन सकती हैं। कुछ देशों के साथ व्यापक संधियां भी होंगी, जो देश को सामरिक तौर पर मजबूत बनाएँगी और इस दौरान भारत की रक्षा गतिविधियों में इजाफा देखने को मिल सकता है। इसके अतिरिक्त देश के वैज्ञानिक कुछ नई खोज के साथ सामने आ सकते हैं, जो विश्व पटल पर भारत को और ऊपर ले जाएगी।

क्या 2020 आईसीसी T20 वर्ल्ड कप भारत में आएगा?

क्रिकेट के दीवानों के लिए इस साल T20 वर्ल्ड कप मुख्य रूप से चर्चित रहेगा, जो कि इस वर्ष ऑस्ट्रेलिया में खेला जाएगा। इसका आयोजन 18 अक्टूबर से 15 नवंबर के मध्य किया जाएगा। क्रिकेट के महाकुंभ के नाम से प्रसिद्ध यह 20 ओवरों का सीमित मैच का टूर्नामेंट होगा, जिसके लिए हर भारतवासी दुआ करेगा कि यह वर्ल्ड कप भारत आए। भारत की दशा देखी जाए तो उस दौरान चंद्रमा की महादशा में शनि की अंतर्दशा और सूर्य की प्रत्यंतर दशा चल रही होगी, जिससे पता चलता है कि टीम इंडिया अपनी ओर से अच्छा प्रदर्शन जारी रखेगी। हालांकि भारत का भारत का यह विश्व कप जीत पाना संदेहास्पद कहा जा सकता है। फिर भी टीम इंडिया का प्रदर्शन सराहनीय अवश्य रहेगा।



यदि टीम इंडिया के कप्तान विराट कोहली की बात की जाए तो उनका जन्म लग्न धनु तथा जन्म राशि कन्या है।



विराट कोहली (5-11-1988, 10:28:0, दिल्ली)

जिस समय ये वर्ल्ड कप खेला जाएगा, वे राहु की महादशा में केतु की अंतर्दशा और शुक्र की प्रत्यंतर दशा से गुज़र रहे होंगे। राहु तीसरे भाव में शनि की राशि में विराजमान है और शनि लग्न में स्थित हैं तथा राहु का नक्षत्र शतभिषा है,

जो कि उसका अपना नक्षत्र है। केतु जोकि नवम भाव में विराजमान है, शुक्र के नक्षत्र में है और नवम भाव अधिष्ठित राशि के स्वामी सूर्य हैं, जो एकादश भाव में नीच अवस्था में बैठे हैं तथा शुक्र जोकि छठे और ग्यारहवें भाव का स्वामी है, वह दशम भाव में चंद्रमा के साथ बैठा है और शनि तथा मंगल से प्रभावित है। यह सभी स्थितियों बताती हैं कि बेशक उनका प्रदर्शन ठीक रहे, लेकिन मन वांछित सफलता मिलने में कमी हो सकती है।

इस प्रकार विभिन्न कुंडलियों के माध्यम से हमने जाना कि 2020 में हमारे देश के लिए क्या क्या संभावनायें हैं। अर्थात् भारत का भविष्य कैसा रहने वाला है। आने वाला साल कई मामलों में भारत को सिरमौर बनाएगा और भारत की छवि को ऊपर लेकर जाएगा। कुछ चुनौतियाँ अवश्य रहेंगी, जिनका समाधान ढूँढ़ने का प्रयास जल्द से जल्द कर लेना चाहिए।

ज्योतिषी से प्रश्न पूछें

[अभी खरीदें »](#)

- के.पी. सिस्टम
- नाड़ी ज्योतिष
- लाल किताब
- ताजिक ज्योतिष

संपर्क करें

+91-7827224358, +91-9354263856

Email:- sales@ojassoft.com

www.astrosage.com

तनाव भगाएं, खुश रहें

तनाव मुक्त जीवन के कुछ सरल उपाय



मानसिक तनाव मानव समाज के लिए एक बड़ी समस्या है। इसका क्षेत्र इतना व्यापक है कि हर कोई किसी न किसी रूप में इस रोग से पीड़ित है। विश्व स्वास्थ्य संगठन की एक रिपोर्ट में यह बताया गया है कि मानसिक तनाव वैश्विक अक्षमता का मुख्य कारण हैं। यदि इस बिंदु पर गंभीरता से विचार करें तो मानसिक तनाव को दूर करने या इससे बचने के उपाय बहुत जरुरी हैं। कई बार लोग अपने मानसिक तनाव को दूर करने के तरीके खोजते हैं। निश्चित ही यह लेख ऐसे व्यक्तियों के लिए वरदान साबित होगा जो मुख्यतः मानसिक समस्या से परेशान रहते हैं। तो चलिए सबसे पहले यह जानते हैं कि मानसिक तनाव होता क्यों है और इसके क्या लक्षण हैं?

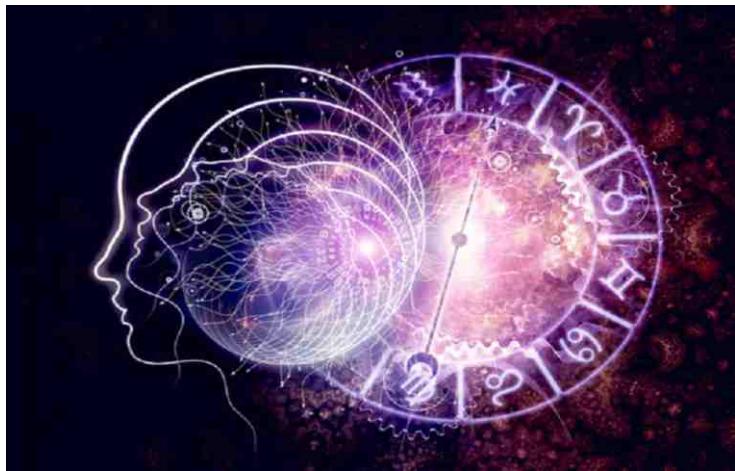
मानसिक तनाव क्या है ?

मानसिक तनाव या चिंता एक ऐसा अवसाद है जो पीड़ित व्यक्ति के विचारों और शरीर पर नकारात्मक प्रभाव डालता है। इस रोग में व्यक्ति को मानसिक कष्ट से गुजरना

पड़ता है। रोगी व्यक्ति की मानसिक शक्ति क्षीण हो जाती है और इस कारण वह ग़लत कदम भी उठा लेता है। एक अध्ययन के मुताबिक आत्महत्या और अपराध करने वाले कई लोग मानसिक समस्या से पीड़ित होते हैं। इससे यह अदाज़ा लगाया जा सकता है कि मानसिक कुण्ठा कितनी गंभीर बीमारी है।

मानसिक तनाव के कारण

- जीवन शैली में बदलाव
- नींद की कमी
- आर्थिक परेशानी
- प्रियजनों/प्रियजन से अलगाव
- रिश्तों में खटास
- असफलता
- दबाव
- पारिवारिक समस्या



मानसिक तनाव और ज्योतिष

ज्योतिष शास्त्र में चंद्र ग्रह को मनुष्य की मानसिक चेतना का कारक कहा जाता है। कुंडली में चंद्रमा कमज़ोर होता है तो जातक को मानसिक परेशानियों का सामना करना पड़ता है। इस दौरान व्यक्ति अवसादग्रस्त रहता है। हालाँकि यदि किसी जातक की कुंडली में इस प्रकार की परिस्थिति बनती है तो उस जातक को चंद्रमा से संबंधित उपाय करने चाहिए। इससे उन्हें मानसिक तनाव से छुटकारा मिलेगा।

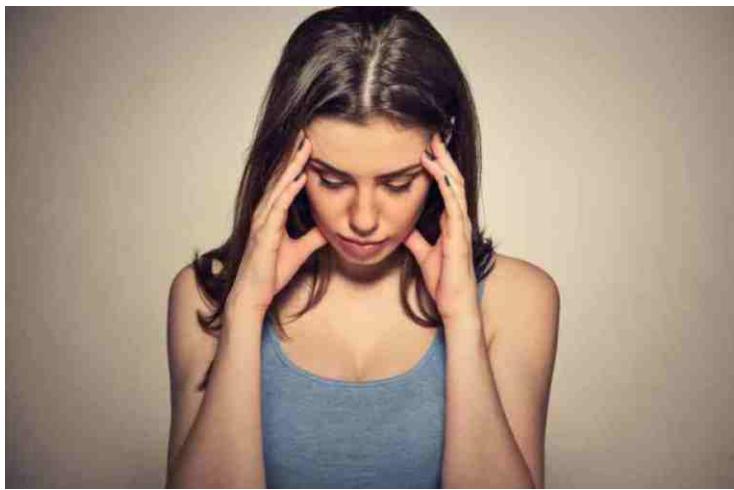
मानसिक तनाव के लक्षण

- एकाग्रता की कमी, कमज़ोर स्मरण शक्ति, निर्णय लेने में परेशानी
- भोजन संबंधी आदतों में बदलाव, भूख कम लगना, भूख न लगना, अपच
- भावनात्मक प्रतिक्रियाओं में बदलाव, अति संवेदनशील हो जाना
- आत्म विश्वास में कमी, भयग्रस्त होना
- एकांत में रहना, मन में नकारात्मक रुचाल आना
- उच्च रक्तचाप, डायबिटीज़, बालों का झड़ना
- गठिया, सिरदर्द, त्वचा रोग, रोग प्रतिरोधक क्षमता में कमी

मानसिक तनाव को दूर करने के आसान उपाय

टेंशन से बचने या इसे दूर करने के लिए हम यहाँ आपको 10 आसान उपाय बता रहें हैं। जिनकी मदद से आप अपने तनाव को कम कर सकते हैं। ये उपाय इस प्रकार हैं-

- योग-व्यायाम** - योग और व्यायाम मानसिक तनाव को दूर करने का सबसे बेहतर तरीका है। हैल्थ टिप्स की बात करें तो फिजिकल एक्सरसाइज़ सबसे ज्यादा कारगर है। नियमित योग और व्यायाम करने से व्यक्ति का शरीर और मन स्वस्थ रहता है। इससे हमारे शरीर में एंडोर्फिन रिलीज़ होती है और फील गुड कराने वाले हार्मोन बनते हैं। इसलिए व्यक्ति को अपनी दिनचर्या में योग-व्यायाम को अवश्य जोड़ना चाहिए।
- नियमित दिनचर्या** - यदि तनाव जैसी गंभीर समस्या से बचना चाहते हैं तो अपनी दिनचर्या को नियमित बनाएँ और इसका कठोरता से पालन भी करें। नियमित दिनचर्या का तात्पर्य यहाँ समय से खाने-पीने और समय पर सोने-जगने से है। इसके अलावा आप डेली रुटीन में उन चीज़ों को भी जोड़ें जो आपको शारीरिक और मानसिक रूप से मजबूत बनाने में मदद करती हो। यदि आप ऐसा कर पाने में सफल होते हैं तो निश्चित ही आप टेंशन मुक्त हो जाएंगे।
- पौष्टिक आहार** - भोजन से हमारे शरीर को ऊर्जा प्राप्त होती है। जबकि आहार की प्रकृति हमारी प्रवृत्ति और मनोदशा को प्रभावित करती है। इसलिए मन को दुरुस्त बनाए रखने के लिए पौष्टिक आहार लें। यह टेंशन भगाने का अचूक उपाय है। लेकिन वर्तमान समय में लोग जंक फूड, फास्ट फूड और अन्य प्रकार के पाश्वात्य खाद्य पदार्थों का अधिक सेवन कर रहे हैं जिसके प्रतिकूल परिणाम हम देख सकते हैं।



- **इच्छाओं पर नियंत्रण** – भगवान बुद्ध ने कहा था कि मनुष्य के दुखों का कारण उसकी इच्छा हैं। इसलिए उन्होंने इच्छाओं पर नियंत्रण रखने पर बल दिया था। यदि हमारी इच्छाएँ पूरी नहीं होती हैं तो हम दुखी होते हैं और दुख मानसिक तनाव को आमंत्रित करता है। इसलिए इच्छाओं को सीमित रखना चाहिए।
- **ध्यान क्रिया** – ध्यान क्रिया करने से मानसिक चेतना जागृत होती है और मन को शांति मिलती है। मनोविज्ञान के अनुसार ध्यान करना शरीर और मन के लिए बहुत लाभकारी है। इससे मनुष्य की एकाग्र शक्ति बढ़ती है। मानसिक तनाव को कम करने का यह बहुत ही बढ़िया और आसान उपाय है।
- **पर्याप्त नींद** – पर्याप्त नींद मनुष्य को स्वस्थ बनाए रखती है। अध्ययन के अनुसार एक दिन में हर व्यक्ति को 7 से 8 घंटे की नींद लेनी चाहिए। इससे व्यक्ति का मन प्रसन्न रहता है और मानसिक तनाव उसके ऊपर हावी नहीं हो पाता है।
- **सकारात्मक भाव** – सकारात्मक सोच के साथ आप बड़ी से बड़ी समस्या को आसानी से हल कर सकते हैं। परंतु यदि सोच नकारात्मक हो तो फिर राह मुश्किल हो जाती है। तनाव के समय व्यक्ति की पॉजीटिव थिंकिंग ही उसे गलत रास्ते से बचाती है।

- **सामाजिक संबंध** – समाज में सभी के साथ घुल-मिलकर रहें और अपने सगे-संबंधियों से रिश्ते मधुर बनाए रखें। अपनों से मिलने वाली खुशियों का कोई मोल नहीं होता है। इसलिए अपने घर-परिवार, दोस्तों और रिश्तेदारों से संवाद जारी रखें।
- **नशे से दूरी** – तनाव से बचने के लिए अक्सर लोग नशे के आदि हो जाते हैं जो बिलकुल भी उचित नहीं है। नशा हमारे शरीर और मन पर बहुत बुरा असर डालता है जिससे तनाव कम होने के बजाय और भी बढ़ जाता है इसलिए शराब, सिगरेट, ड्रग्स आदि से जितना दूर रहें उतना आपके लिए अच्छा है।
- **मनोरंजन** – विशेषज्ञों का ऐसा मानना है कि मनोरंजन से तनाव को कम किया जा सकता है। इसलिए यदि आप चिंतित हों तो टेंशन फ्री होने के लिए मनोरंजन का सहारा अवश्य लें। सिनेमा जाकर अच्छी फिल्म देखें या फिर अन्य प्रकार से अपना मनोरंजन का लुत्फ़ उठाएँ।

मानसिक तनाव से बचने के लिए आप ये आसान उपाय ज़रुर अपनाएँ। इनसे आपको तनाव से उबरने में काफ़ी मदद मिलेगी। इसके अलावा आप चिकित्सकीय परामर्श या फिर हमारी ज्योतिषीय सेवाएँ भी ले सकते हैं।



**Innovation in
Career Counselling:**

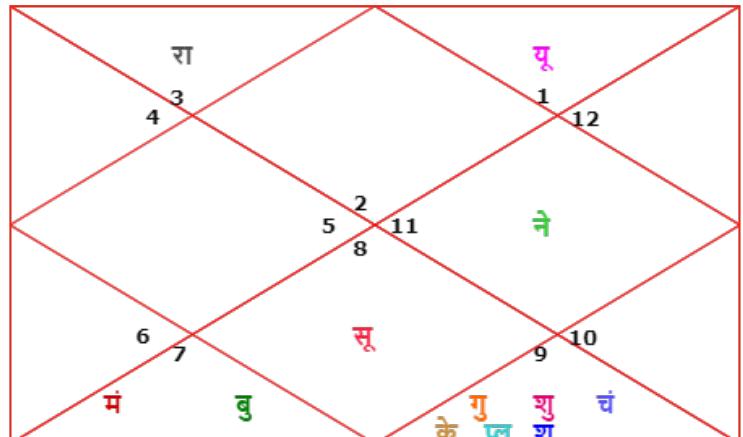
CogniAstro™
Right Counselling, Bright Career

[Know More](#)

बड़ी मुश्किल डगर है उद्धव ठाकरे की : ज्योतिषीय विश्लेषण



एस्ट्रोगुरु मृगांक



लग्न कुंडली

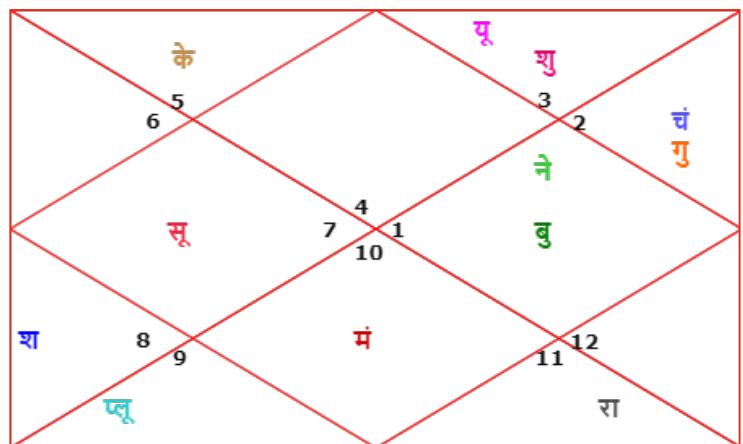
लंबे वक्त तक चली राजनीतिक उठापटक के बाद उद्धव ठाकरे ने महाराष्ट्र के नये मुख्यमंत्री के रूप में 28 नवंबर को शपथ ले ली। उद्धव ने उसी शिवाजी पार्क में शपथ ग्रहण की, जहां बाला साहेब ठाकरे का अंतिम संस्कार हुआ था, और हर साल दशहरे पर शिवसेना अपना शक्ति प्रदर्शन करती है। लेकिन सवाल सिर्फ मुख्यमंत्री बनने भर तक का नहीं है। सवाल है कि क्या बतौर मुख्यमंत्री उद्धव पांच साल का कार्यकाल पूरा कर पाएंगे ? ठाकरे परिवार में पहली बार कोई सदस्य मुख्यमंत्री बना है तो उद्धव के सामने खुद को साबित करने की बड़ी चुनौती है।

उद्धव ठाकरे का शपथ ग्रहण समारोह

दिनांक: 28.11.2019

समयः 18:40 शाम

जगहः मुंबई



नवमांश कुण्डली

ग्रहों की स्थिति के अनुसार कुंडली का ज्योतिषीय विश्लेषण

कुंडली का विश्लेषण करने के बाद नीचे दी गई बातें निर्धारित की जा सकती हैं:

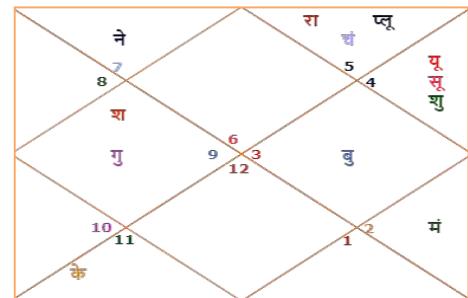
- लग्न कुंडली में वृषभ राशि का लग्न है। वृषभ राशि का लग्न स्थिर माना जाता है, साथ ही लग्न नक्षत्र रोहिणी है जोकि किसी भी काम को लंबे समय तक किये जाने को दर्शाता है। इसलिये लग्न और नक्षत्र दोनों ही अनुकूल रहे।
- उद्धव ठाकरे का जन्म नक्षत्र पूर्वफाल्गुनी है, और शपथ ग्रहण समारोह के लिए चुना गया समय उसी के अनुसार एक अच्छे ताराबल में रहा।
- इसके अतिरिक्त उद्धव ठाकरे ने शपथ ग्रहण समारोह का समय सबसे शुभ अमृत चौघड़िया को चुना।

क्या कहती भविष्यवाणियां

- उद्धव ठाकरे ने महाराष्ट्र के सीएम पद की शपथ ग्रहण के लिये सबसे सही समय का चुनाव किया, हालांकि शुक्र, बृहस्पति, शनि, चंद्रमा और केतु शाम 6:40 तक अष्टम भाव में विराजमान रहे, जोकि शपथ ग्रहण का समय था।
- ग्रहों की यह स्थिति दर्शाती थी कि आने वाले समय में ठाकरे सरकार को परेशानियों का सामना करना पड़ेगा।
- नवमांश चार्ट में स्थित चंद्रमा उच्च का है, इसके साथ ही बृहस्पति और मंगल ग्रह भी उच्च स्थिति में हैं। इसका अर्थ है कि सरकार सभी बाधाओं के खिलाफ खड़े होने की कोशिश करती रहेगी।
- इन सभी के अलावा, चंद्रमा, शुक्र, और बृहस्पति ग्रह मूल नक्षत्र में स्थित हैं, जो आने वाले समय में इस सरकार के लिये एक अहम भूमिका निभाएंगे।

उद्धव ठाकरे की जन्म कुंडली का विश्लेषण

लग्न कुंडली



- शिव सेना के अध्यक्ष इस समय बृहस्पति की महादशा, केतु की अंतर्दशा और केतु की ही प्रत्यंतर दशा से गुजर रहे हैं।
- बृहस्पति और केतु का नक्षत्र परिवर्तन योग है और बृहस्पति काफी मजबूत है।
- ग्रह-नक्षत्रों की स्थिति यह संकेत दे रही है कि मार्च-अप्रैल की अवधि में सरकार को कई समस्याओं का सामना करना पड़ेगा। हालांकि, 24 जनवरी को जब शनि का गोचर होगा तो चीजें तेजी से सरकार के पक्ष में होंगी।
- ठाकरे सरकार को कुछ जोखिम उठाने पड़ेंगे और लगातार कुछ परेशानियों का सामना करना पड़ेगा, नवंबर 2020 तक सरकार के ऊपर खतरे के बादल मंडराते रहेंगे, खासकर मार्च से सितंबर महीने के दौरान।
- सितारे संकेत कर रहे हैं कि उद्धव को पांच साल कार्यकाल पूरा करने में मुश्किल होगी। 2022 में सहयोगियों से मतभेद के प्रबल आसार हैं, और उस वक्त अगर सहयोगियों से मनभेद और मतभेद को पाटने में उद्धव कामयाब नहीं हुए तो सरकार गिर सकती है।

नए साल में अपनाएं वास्तु टिप्प और सपने करें साकार!



द्रिष्टि
जैन



नया साल 2020, आपकी ज़िंदगी की दहलीज़ पर दस्तक देचुका है। इस नए साल के लिए आपने अपनी आँखों में कई सपने संजोए होंगे? आपके दिल में कई आशाएं होंगी? साथ ही मन में यह सवाल भी कौंध रहा रहा होगा कि ये सपने कैसे पूरे होंगे? क्या आपको वह खुशी मिल पाएगी जिसकी आपको कबसे हसरत है? कहते हैं कोशिश करने वालों की हार नहीं होती है। मानव जन्म हुआ ही है कर्म करने के लिए। समय इस बात का गवाह है कि जिसने कर्म करने से इंकार कर दिया और भाग्य के भरोसे बैठा गया, उसके हाथों कुछ नहीं आता है। इसलिए निरंतर आगे बढ़ने से ही व्यक्ति को उसकी मंज़िल मिलती है।

अपनाएं ये आसान वास्तु टिप्प

आधुनिक वास्तु टिप्प के द्वारा आप अपनी आशाओं,

सपनों और लक्ष्यों को आसानी से प्राप्त कर सकते हैं। इसके लिए आपको कुछ आसान काम करनें होंगे। जैसे वास्तु शास्त्र के अनुसार घर के मुख्य द्वार के दोनों तरफ स्वास्तिक चिन्ह अंकित करना चाहिए। स्वास्तिक चिन्ह मुख्य द्वार की शुद्धि हेतु बनाया जाता है। स्वास्तिक बनाने के लिए हल्दी रोली या गेरु खड़िया का प्रयोग करें। इसके अलावा बाजार में पिरामिड स्वास्तिक चिन्ह भी उपलब्ध है, जो कि मुख्य द्वार पर लगाए जा सकते हैं। साथ ही घर के मुख्य द्वार के दोनों तरफ हरियाली का प्रबंध करें। मुख्य द्वार पर गिलोय की चढ़ती हुई बेल मंगल ग्रह को शांत करती है। यह एंटीसेइक के लिए भी कारगर है। गिलोय एक औषधीय गुणों वाला पौधा है, जो वातावरण को संक्रमण रहित बनाता है। यह बेल हमारे द्वार से आने वाले इन्फेक्शन से हमें बचाती है। वहीं स्वागत कक्ष में मुख्य द्वार

की तरफ मुख करते हुए लाफिंग बुद्धा या अंदर आता हुआ कछुआ उचित दिशा में लगाएं। कछुआ स्वास्थ्य व समृद्धि का प्रतीक होता है। यह अलग-अलग धातुओं का मार्केट में उपलब्ध है। विभिन्न दिशाओं के तत्वों के अनुसार इसे लगाने से शुभ फल की प्राप्ति होती है। स्वागत कक्ष की उत्तर पूर्व दिशा में क्रिसमस ट्री अवश्य लगाएं। यह शुभ व सकारात्मक ऊर्जा के प्रवाह के लिए बहुत ही उपयोगी है। इसमें फर्नीचर की व्यवस्था इस तरह करें कि घर का मुखिया का मुख उत्तर या पूर्व दिशा में हो ऐसा करने से घर के मुखिया की बात का प्रभाव आने वाले आगंतुक पर पड़ता है।

अपनी आदतों में लाएं सकारात्मक बदलाव

नव वर्ष में कुछ ऐसी आदतों में बदलाव लाएं जो कि जिससे उसका प्रभाव आपके जीवन पर सकारात्मक पड़ता हो। प्रायः ऐसा देखा गया है कि लोग अपने शयनकक्ष में ही



भोजन करते हैं। इस वर्ष शयन कक्ष में भोजन करने की आदत को त्यागें। शयन कक्ष में भोजन करने से हमारे राहु ग्रह का दुष्प्रभाव हम पर पड़ता है। यह हमारे जीवन में क्रोध, लड़ाई व दुर्घटना का कारण बन सकता है। इसके विपरीत रसोई घर के निकट भोजन करने की व्यवस्था करें, जिससे कि हमारे राहु ग्रह की शांति बनी रहे।

कैलेण्डर 2020 में इस बात का रखें ध्यान

नए वर्ष पर हम नया कैलेण्डर लगाते हैं। यह कैलेण्डर घर की

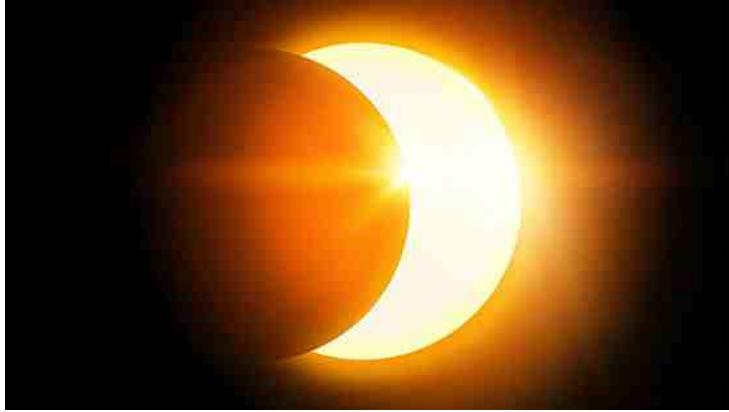
उत्तर या पूर्वी दीवार पर लगाएं। कैलेण्डर में बने चित्रों पर अवश्य ध्यान दें। इन चित्रों का सकारात्मक होना बहुत ही आवश्यक है। प्रेरणादायी विचार वाले कैलेण्डर का प्रयोग करें। अगर कैलेण्डर में कोई देवी देवता का चित्र बना हो तो उसे दक्षिण दिशा में लगाने से बचें। साल के पहले दिन घर के मध्य या ब्रह्म स्थान की साफ सफाई करें। सर्वप्रथम अगरबत्ती जलाएं फिर धूप बत्ती बाद में कपूर व शुद्ध धी का दीपक जलाएं। इससे सभी प्रकार की नकारात्मक ऊर्जाएं समाप्त होंगी।

वैभव और समृद्धि पाने के लिए करें ये उपाय

ऐडे पौधों के द्वारा भी वास्तु उपचार संभव है। घर की अग्रेय कोण(दक्षिण-पश्चिम) दिशा में बैगनी रंग के गमले में मनी प्लांट की बेल लगाएं। ऊपर की तरफ चढ़ती हुई मनी प्लान्ट को लगाने से समृद्धि और वैभव की प्राप्ति होती है और आय के नए मार्ग सृजन होते हैं। इसी दिशा में गोल्डन फिश का जोड़ा भी लगाया जा सकता है। इससे आपको शुभ फल की प्राप्ति होगी।

घर की पश्चिम दिशा में पाँच लड़ी वाला विंड चाइम लगाएं। ऐसा करने से केतु ग्रह की शुद्धि होगी। आपकी एकाग्र शक्ति मज़बूती होगी और मानसिक चिंताएं दूर होंगी। इसके अलावा आप बुरी संगति से भी दूर रहेंगे। घर के सभी दरवाजों की ऑयलिंग करें। दरवाजों से आवाज़ आना अशुभ माना जाता है। घर में जो भी टूटे-फूटे सामानों को न रखें। रिश्तों में मिठास लाने के लिए शयनकक्ष में गुलाब का अरोमा डिस्पेंसर रखें। ऐसा करने से प्रेम, सहयोग व संतुलन की भावना विकसित होगी और जीवन में सुख शांति व समृद्धि का विस्तार होगा।

गुल खिलाएगा साल का अंतिम सूर्यग्रहण ?



ग्रहण का वैदिक ज्योतिष के क्षेत्र में बहुत महत्वपूर्ण स्थान है चाहे वह सूर्य ग्रहण हो अथवा चंद्र ग्रहण। सूर्य जहां आत्मा का कारक है वही चंद्रमा मन का और इन दोनों पर ग्रहण लगना अर्थात् मन और आत्मा पर ग्रहण लगने जैसा है। विज्ञान के आधार पर ग्रहण केवल एक खगोलीय घटना है लेकिन ज्योतिष के क्षेत्र में यह अत्यंत ही गहन और विचारणीय विषय है क्योंकि इसका प्रभाव पूरी प्रकृति पर पड़ता है। सूरज ग्रहण के दौरान पृथ्वी और सूर्य के बीच में चंद्रमा आ जाता है, जिसकी वजह से सूर्य का प्रकाश पृथ्वी तक नहीं पहुँच पाता और दिन में ही अँधेरे का एहसास होने लगता है। सभी पक्षी अपने स्थानों को लौटने लगते हैं और वातावरण में अजीब सी शांति का अनुभव होता है।

2019 का सूर्य ग्रहण

यदि वर्ष 2019 की बात की जाए तो इस वर्ष में कुल 3 सूर्य ग्रहण घटित होने थे, जिनमें से दो सूर्य ग्रहण क्रमशः 6 जनवरी और 2 जुलाई को घटित हो चुके हैं अब केवल 26 दिसंबर 2019 को पड़ने वाला सूर्य ग्रहण ही शेष है। इनमें से



एस्ट्रोगुरु
मृगांक

जनवरी और जुलाई के सूर्य ग्रहण भारत में देखें नहीं गए थे, लेकिन 26 दिसंबर को पड़ने वाला कंकण सूर्य ग्रहण पूरे भारत वर्ष में दिखाई देगा और यही वजह है कि इसका व्यापक प्रभाव भी होगा।

26 दिसंबर का सूर्यग्रहण हिंदू कैलेंडर के अनुसार पौष मास की अमावस्या को बृहस्पतिवार के दिन घटित होगा। यह एक कंकण सूर्यग्रहण है लेकिन भारत में केवल तमिलनाडु, केरल तथा कर्नाटक के कुछ हिस्सों में कंकण रूप से दिखाई देगा और शेष स्थानों पर यह खंडग्रास के रूप में दिखाई देगा। यह ग्रहण हिंदू पंचांग के अनुसार पौष मास की अमावस्या के दिन गुरुवार को नई दिल्ली के आकाश में सुबह 08:17:02 से 10:57:09 बजे तक घटित होगा। विशेष ध्यान देने योग्य बात यह है कि ये ग्रहण अलग-अलग स्थानों पर अलग-अलग समय पर दिखाई देगा। भारत के अतिरिक्त यह ग्रहण एशिया, पूर्वी अफ्रीका, पूर्वी यूरोप तथा उत्तरी / पश्चिमी ऑस्ट्रेलिया में भी दिखाई देगा।

ज्योतिष के अनुसार यह सूर्य ग्रहण धनु राशि और मूल नक्षत्र में घटित होगा। इसके परिणाम स्वरूप धनु राशि और मूल नक्षत्र से संबंधित जातकों के लिए विशेष रूप से प्रभावशाली रहेगा और ऐसे जातकों को अधिक परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। इससे पूर्व के दो सूर्य ग्रहण भारत में दृश्य मान नहीं थे लेकिन यह ग्रहण संपूर्ण भारतवर्ष में दृश्य मान होगा और यही वजह है कि भारत में इसका सर्वाधिक महत्व और सूतक भी माना जाएगा।

26 दिसंबर का सूर्य ग्रहण कहाँ कहाँ दिखाई देगा ?

भारत के अलावा यह सूर्य ग्रहण ऑस्ट्रेलिया, बांगलादेश, अफगानिस्तान, इंडोनेशिया, जापान, उत्तर तथा दक्षिण कोरिया, फिलीपीन, सऊदी अरब, सिंगापुर, पाकिस्तान, संयुक्त अरब अमीरात, चीन, कंबोडिया, भूटान, बहरीन, रूस, कतर, सोमालिया, थाईलैंड, श्रीलंका, ताइवान, तंजानिया, लाओस, किर्गिस्तान, उज़्बेकिस्तान और तुर्कमेनिस्तान आदि जगहों पर दिखाई देगा।

सूर्य ग्रहण का सूतक

26 दिसंबर 2019 को पड़ने वाले सूर्य ग्रहण का सूतक एक दिन पूर्व 25 दिसंबर की रात्रि 8 बजे से प्रारंभ हो जाएगा और ग्रहण की समाप्ति के साथ ही समाप्त होगा। इसलिए इसी समय से सूतक संबंधित सभी नियम प्रभावी होंगे और यदि आप बालक, वृद्ध अथवा रोगी नहीं हैं, तो भोजन और शयन आदि कार्य सूतक के दौरान नहीं करना चाहिए और इस समय को भगवान की भक्ति में लगाना चाहिए।

ग्रहण और गर्भवती महिलाएं

गर्भवती महिलाओं के लिए ग्रहण का समय बहुत महत्वपूर्ण होता है और उन्हें इस दौरान विशेष रूप से सावधानियां बरतनी चाहिए ताकि ग्रहण का



दुष्प्रभाव उनकी होने वाली संतान पर ना पड़े। विशेष रूप से सिलाई, कढ़ाई, काटने और अन्य सिलने के कार्य नहीं करने चाहिए तथा ग्रहण को देखने से बचना चाहिए और घर से बाहर नहीं निकलना चाहिए। इस दौरान शयन करना

भी वर्जित माना गया है। ऐसी मान्यता है कि यदि यह सभी कार्य किए जाते हैं, तो इनका दुष्प्रभाव होने वाली संतान पर पड़ सकता है और परिणामस्वरूप संतान अविकसित या अंग हीन पैदा हो सकती है।

सूर्य ग्रहण का प्रभाव

सूर्य ग्रहण का प्रभाव विशेष रूप से संपूर्ण पृथ्वी और प्रकृति पर पड़ता है क्योंकि संपूर्ण जगत को प्रकाश देने वाले सूर्य देव का प्रभावित होना संपूर्ण सृष्टि के लिए अशुभ माना जाता है। इसका प्रभाव मुख्य रूप से 6 माह तक रह सकता है। यह सूर्य ग्रहण पौष अमावस्या के दिन बृहस्पतिवार को धनु राशि और मूल नक्षत्र में तथा वृद्धि योग में घटित होगा, इस कारण इसका अशुभ प्रभाव विशेष रूप से ब्राह्मण और स्त्रियों पर पड़ेगा और उनके लिए यह ग्रहण अनुकूल नहीं रहेगा। इसके अतिरिक्त वर्षा की कमी तथा दुर्भिक्षा और अकाल जैसी स्थिति आ सकती है।

घी, हल्दी और रुई आदि के भावों में विशेष वृद्धि हो सकती है तथा फलों के व्यापारी, वैद्य, डॉक्टर और दवा से संबंधित कार्य करने वाले लोगों को समस्या हो सकती है। पोस्ट के महीने में तथा धनु राशि में सूर्य ग्रहण होने के कारण सभी प्रकार के धान्य पदार्थ तेजी में रहेंगे तथा वर्षा मध्यम होगी। इस ग्रहण का प्रभाव मूल नक्षत्र पर होने के कारण बिनौला, बाजरा, इलायची, शक्कर, ज्वार, आदि के भाव में भी तेजी देखने को मिलेगी।

यदि स्थान विशेष की बात की जाए तो चीन, पाकिस्तान, अफगानिस्तान, मुस्लिम राष्ट्रों और भारत वर्ष में विशेष रूप से कश्मीर में राजनीतिक उथल-पुथल हो सकती है तथा पाकिस्तान से संबंधित क्षेत्रों में उपद्रव और आतंकी घटनाओं में वृद्धि होने की संभावना रहेगी।



इस ग्रहण के दौरान धनु राशि में सूर्य के साथ साथ चंद्रमा, बुध, गुरु, शनि और केतु की युति होगी तथा यह सभी ग्रह राहु केतु के अक्ष में होंगे। इसके अतिरिक्त मूल नक्षत्र जिसमें यह ग्रहण घटित हो रहा है सूर्य, बृहस्पति और बुध तीनों इसी नक्षत्र में स्थित होंगे। ग्रहों के इस गठजोड़ का व्यापक प्रभाव पड़ेगा और इसलिए यह सूर्य ग्रहण अधिक व्यापक रूप से अपना असर दिखाएगा। इसके परिणाम स्वरूप सत्ता का संघर्ष देखने को मिल सकता है और मंत्रिमंडल भंग होने की भी संभावना दिखाई देगी। प्राकृतिक आपदाएं आ सकती हैं, जिनमें विशेष रूप से तूफान, बड़ी बीमारी, बाढ़ या सूखा की समस्याएँ परेशान कर सकती हैं। इस दौरान बड़े राजनेताओं और सत्ता पक्ष को समस्याओं से जूझना पड़ सकता है। इसलिए इन सभी बातों को ध्यान में रखते हुए पूर्व में ही इनसे निपटने की तैयारी करनी चाहिए।

सूर्य ग्रहण के दौरान क्या करें क्या ना करें
सूर्य ग्रहण के दौरान कुछ कार्यों को विशेष रूप से करने की मनाही होती है तो कुछ कार्यों के लिए सर्वोत्तम समय होता है। यदि आप कोई सिंदूर प्राप्त करना चाहते हैं तो उसके लिए मंत्र जाप करने हेतु ग्रहण काल सर्वोत्तम माना गया है।

**स्पर्श स्नानं जपं कुर्यान्मध्ये होमं सुरार्चनम् ।
मुच्यमाने सदा दानं विमुक्तौ स्नानमाचरेत् ॥**

अर्थात् ग्रहण काल के प्रारंभ में स्नान और जप करना चाहिए तथा ग्रहण के मध्य काल में होम अर्थात् यज्ञ और देव पूजा करना उत्तम रहता है। ग्रहण के मोक्ष होने के समय दान करना चाहिए तथा पूर्ण रूप से ग्रहण का मोक्ष होने पर स्नान करके स्वयं को पवित्र करना चाहिए।

**दानानि यानि लोकेषु विख्यातानि मनीशिभः ।
तेषां फलमाप्नोति ग्रहणे चन्द्र सूर्ययोः ॥**

--- (सौर पुराण)

अर्थात् इस समस्त संसार में जितने भी दान दिए जाते हैं, कोई भी प्राणी उन सभी दानों का फल चंद्र ग्रहण और सूर्य ग्रहण काल में दान करने से प्राप्त कर लेता है। वास्तव में दान करने की बहुत महिमा बताई गयी है।

**अन्नं पक्वमिह त्याज्यं स्नानं सवसनं ग्रहे ।
वारितक्रारनालादि तिलैदम्भौर्न दुष्यते ॥**

---(मन्त्रवर्थ मुक्तावली)

सूर्य ग्रहण के दौरान भगवान् सूर्य की पूजा विभिन्न सूर्य स्रोतों के द्वारा करनी चाहिए तथा आदित्य हृदय स्रोत्र आदि का पाठ करना काफी अच्छा परिणाम देता है। पका हुआ अन्न और कटी हुई सब्जियों का त्याग कर देना चाहिए क्योंकि वे दूषित हो जाती हैं। हालांकि धी, तेल, दही, दूध, दही, मक्खन, पनीर, अचार, चटनी, मुरब्बा जैसी चीजों में पीलिया कुशा रख देने से ग्रहण काल में दूषित नहीं होते हैं। यदि कोई सूखा खाद्य पदार्थ है तो उसमें कुशा रखने की आवश्यकता नहीं होती।

चन्द्रग्रहे तथा रात्रौ स्नानं दानं प्रशस्यते।

चाहे चंद्र ग्रहण हो अथवा सूर्य ग्रहण रात्रि के समय दौरान स्नान दान करना प्रशस्त माना गया है।

न स्नायादुष्णतोयेन नास्पर्शं स्पर्शयेत्था॥

ग्रहण काल के दौरान तथा ग्रहण की मौत के बाद गर्म जल से स्नान नहीं करना चाहिए। हालांकि बालकों, वृद्धों, गर्भवती स्त्री और रोगियों के लिए निषेध नहीं है।

**यन्नक्षत्रगतो राहुर्गस्ते शशिभास्करौ।
तज्जातानां भवेत्पीड़ा ये नराः शातिवर्जिताः॥**

किसी नक्षत्र में राहु चंद्र अथवा सूर्य को ग्रसित करता है ऐसे लोगों को विशेष रूप से पीड़ा होने की संभावना होती है।

**ग्रस्यमाने भवेत्स्नानं ग्रस्ते होमो विधीयते।
मुच्यमाने भवेदानं मुक्ते स्नानं विधीयते॥
सर्वगड़गा समं तोयं सर्वव्यास समद्विजाः।
सर्वभूमि समं दानं ग्रहणे चन्द्र -सूर्ययोः॥**

ग्रहण काल के दौरान शुद्ध जल किसी भी स्थान से लिया जाए वो श्री गंगा जल के समान निर्मल होता है। स्नान और दान करना सभी प्रकार से उचित होता है। सभी प्रकार के द्विज व्यास जी के समान माने जाते हैं। चंद्रग्रहण अथवा सूर्य ग्रहण के अंत में दिया जाने वाला दान भी सर्व भूमि दान के बराबर माना जाता है।

सूर्य ग्रहण का राशिफल

यह सूर्य ग्रहण धनु राशि के अंतर्गत मूल नक्षत्र में घटित हो

रहा है इसलिए विशेष रूप से धनु राशि के लिए अधिक प्रभावशाली रहेगा और उन्हें जातकों को जो धनु राशि से संबंध रखते हैं उन्हें विशेष रूप से सावधानी बरतनी होगी। यहां विशेष रूप से ध्यान देने की बात यह भी है कि 16-17 जुलाई 2019 को लगने वाला चंद्र ग्रहण भी धनु राशि में ही लगा था, इसलिए एक ही वर्ष में दो ग्रहण का असर इन्हें काफी प्रभावित करेगा। सूर्य ग्रहण का राशिफल यह जानने में मदद करेगा कि यह सूर्य ग्रहण विभिन्न राशियों के लिए कैसा रहने वाला है:

मेष राशि

मेष राशि के जातकों के लिए यह ग्रहण नवम भाव में पड़ेगा, जिसके कारण भाग्य की कमी का एहसास होगा और संभावना बनेगी। संतान संबंधित परेशान कर सकती है। चिंताओं से दूर रहना आपके लिए बेहतर रहेगा।



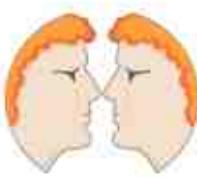
वृषभ राशि

आपके लिए सूर्य ग्रहण अष्टम भाव में रहेगा जिसके परिणाम स्वरूप से शारीरिक कष्ट संभावना रहेगी। सेहत का पूरा ध्यान पान पर भी पूरा सुख में कमी आएगी और आपको परिवार की चिंता परेशान कर सकती है।



मिथुन राशि

आपकी राशि से सप्तम भाव में सूर्य ग्रहण होने से दांपत्य जीवन में समस्याएं आपके जीवन भी कमज़ोर होगी। यदि आप व्यवसाय करते हैं तो उच्चाव की स्थिति



सकती हैं और विशेष कर साथी का स्वास्थ्य रहने की आशंका साझेदारी में कोई तो उसमें उतार-बढ़ाव की स्थिति बनेगी इसलिए निवेश करने से पूर्व पूरी तरह से सोच-विचार कर लें। अपने प्रयासों में वृद्धि करें और भाई बहनों का ख्याल रखें।

कर्क राशि

आपकी राशि से छठे भाव में सूर्य ग्रहण लगने से आपके लिए इस ग्रहण का है और आपको होगी। आप भारी पड़ेंगे और आगमन की होंगी। आपके कुटुंब में



फल अच्छा रहने वाला सुख की प्राप्ति अपने शत्रुओं पर साथ ही साथ धन संभावनाएं भी प्रबल कोई अच्छा समाचार प्राप्त हो सकता है।

सिंह राशि

आपकी राशि से पंचम भाव में सूर्य ग्रहण पड़ेगा जिसके कारण संतान रहेंगी और धन आपको अधिक आपकी राशि जिसकी वजह से आपको अपने स्वास्थ्य होगा और अपने मान सम्मान की परवाह करनी होगी।



संबंधी चिंताएं आपको आगमन के लिए भी प्रयास करने पड़ेंगे। का स्वामी सूर्य ही है ग्रहण होने के कारण का विशेष ध्यान रखना क्षमता है। व्यर्थ पड़ने के कारण बदजुबानी के

कन्या राशि

सूर्य ग्रहण आपकी राशि से चतुर्थ भाव में होगा जिससे आपको विशेष रूप से



पारिवारिक सुखों में कमी आ सकती है और स्वास्थ्य बिगड़ मानसिक रूप से घर का वातावरण नहीं महसूस होगा। ऐसी स्थिति में आपको अपने कार्य पर ध्यान देना चाहिए तथा परिवार के प्रति जिम्मेदारियों का एहसास करते हुए उनका निर्वाह करें।

आपकी माता का सकता है। आप परेशान रहेंगे और आपको अनुकूल

तुला राशि

सूर्य ग्रहण आपकी राशि से तीसरे भाव पर विशेष रूप से प्रभाव डालेगा जिसकी वजह से आपके भाई बहनों को कुछ समस्या का सामना करना पड़ सकता है और उनका स्वास्थ्य भी प्रभावित हो सकता है। हालांकि होगी और लाभ होने की संभावना बनेगी। यदि आप विदेशी स्रोतों से आमदनी का जरिया रखते हैं या किसी मल्टीनेशनल कंपनी में काम करते हैं तो आपके लिए इस ग्रहण का फल उत्तम रहेगा।



वृश्चिक राशि

आपकी राशि से दूसरे भाव की राशि में ग्रहण का प्रभाव होने से कुटुंब में समस्याओं का सामना करना पड़ेगा और आर्थिक रूप से क्षति उठानी पड़ सकती है। व्यर्थ पड़ने के कारण बदजुबानी के



समस्याएं खड़ी हो सकती हैं। कार्यक्षेत्र में कुछ समस्याओं का सामना करना पड़ सकता है। आपको अपनी वाणी पर नियंत्रण रखना चाहिए तथा अपने खान-पान पर भी विशेष रूप से ध्यान देने की आवश्यकता होती।

धनु राशि

इस वर्ष में आपकी राशि पर पड़ने वाला यह दूसरा ग्रहण है इसे पूर्व चंद्र ग्रहण का प्रभाव भी आप पर पड़ा है। ऐसे में अपना विशेष रूप से ध्यान रखें क्योंकि किसी भी प्रकार अथवा दुर्घटना रहेगी और भी रहेगा। आपको व्यायाम करना चाहिए जिससे आप अपने शरीर को चुस्त दुरुस्त रख सके और वाहन सावधानी पूर्वक चलाएँ।



ध्यान रखें क्योंकि की शारीरिक चोट होने की संभावना मानसिक तनाव प्राणायाम और

मकर राशि

आपकी राशि से बारहवें भाव में सूर्य ग्रहण के कारण आपको धन हानि बनेगी। इसके कार्यों में धन संभावना बनेगी। से बच कर रहे और जाने से पूर्व पूरी तैयारी प्रकार की असुविधा और शारीरिक समस्या से बचा जा सके।



होने के प्रबल योग अतिरिक्त व्यर्थ के व्यय होने की भी अवांछित यात्राओं

किसी भी यात्रा पर

से जाएं ताकि किसी भी

कुम्भ राशि

यह सूरज ग्रहण आपकी राशि से 11वें भाव में होगा जिसके कारण आपको जीवन में उन्नति प्राप्त होगी और विभिन्न

प्रकार के लाभ होंगे। काफी लंबे समय से अटकी हुई परियोजनाएं दोबारा आपको वित्तीय लाभ मिलेगा। माध्यम से भी पूरी संभावना चालू होगी जिससे रूप से काफी जीवनसाथी के लाभ मिलने की रहेगी। अपने धन का निवेश सही समय पर और सही स्थान पर करें ताकि अपने लाभ को दीर्घावधि लाभ में बदला जा सके।



मीन राशि

सूर्य ग्रहण आपकी राशि से दशम भाव में होगा जिसके कारण आपको लाभ होगा। कार्यक्षेत्र में आपकी स्थिति में सुधार होगा और आपके अधिकारों में वृद्धि हो सकती है। पारिवारिक मोर्चे का सामना करना जिसके लिए तैयार रहना होगा। आपको अपने कार्यस्थल पर अच्छे से अच्छा प्रदर्शन करने का प्रयास करना चाहिए ताकि आप के वरिष्ठ अधिकारी आपसे प्रसन्न रहें और आपको लाभ हो।



सूर्य ग्रहण के उपाय

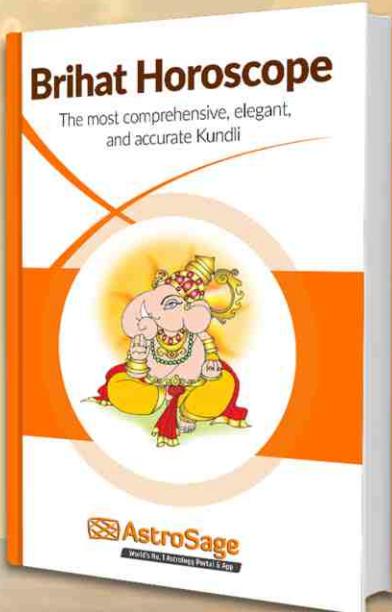
आमतौर पर सूर्य ग्रहण का असर लगभग 6 महीने तक प्रभावी रहता है। कुछ ऐसे उपाय हैं जिन्हें यदि आप अपनाते हैं और पूरी श्रद्धा और निष्ठा के साथ उन उपायों को संपादित करते हैं तो सूर्य ग्रहण द्वारा जनित अनेक प्रकार की समस्याओं से मुक्ति प्राप्त की जा सकती है। ये उपाय निम्नलिखित हैं:

- धनु राशि अथवा मूल नक्षत्र में जन्म लेने वाले लोगों को विशेष रूप से बृहस्पति और केतु का मंत्र जाप करना चाहिए।
- इसके अतिरिक्त आप ग्रहण काल में दान कर सकते हैं तो इसका प्रभाव विशेष रूप से आपको ही प्राप्त होगा।
- ग्रहण के प्रभाव से बचने के लिए आदित्य हृदय स्तोत्र का नियमित पाठ करें।
- यदि आपकी कुंडली में सूर्य ग्रह शुभ फलदायक है तो आपको सूर्य अष्टक स्तोत्र का पाठ करना चाहिए।
- सृति निर्णय के अनुसार सूर्य ग्रहण के दौरान सूर्य देव का मंत्र जाप करना सर्वाधिक फलदायी माना जाता है।
- नियमित रूप से अपने पिताजी की सेवा करें और हृदय से उनको सम्मान दें।
- श्वेतार्क वृक्ष को लगाएँ और नियमित रूप से उसको जल देकर पोषित करें।

Know when your Destiny will shine!

**Brihat
Horoscope**

Buy Now >



Price @ Just ₹ 999/-

दीप्ति
जैन

सामूहिक भाग्य का महत्व



हम सभी अपने जीवन में प्रसन्नता चाहते हैं। अधिक पैसा, अच्छा मकान, अच्छा रहन-सहन को प्रसन्नता का पैमाना मानते हैं। बिना कर्म के अर्थात् मेहनत किए बिना प्राप्ति की आशा निरर्थक है। कई बार मेहनत करने पर भी फल की प्राप्ति नहीं होती है। ऐसी अवस्था में लोग वास्तु और ज्योतिष का सहारा लेते हैं।

जीवन की यात्रा में वास्तु एक सड़क है, भाग्य और नक्षत्र आपकी गाड़ी और गाड़ी को चलाना आपका कर्म। सड़क ऊबड़-खाबड़ हो या गाड़ी ठीक ना हो या फिर आपकी योग्यता या कर्म अनुकूल ना हो तो जीवन यात्रा में आप सफलता कदापि नहीं प्राप्त कर सकते हैं। तीनों ही मापदंडों का सही संतुलन आपको लक्ष्य प्राप्ति की ओर ले जाएगा।

आधुनिक काल में लोग काफी हद तक जागरुक हो चुके हैं। यह एक अच्छा संकेत है। आज मैं आपका ध्यान उस पहलू पर आकर्षित कर रही हूं, जिसको लोग प्रायः नज़रअंदाज़ कर देते हैं। सामूहिक भाग्य आपके जीवन में बहुत बड़ा योगदान देता है। सामूहिक भाग को हम पांच

भागों में बांट सकते हैं:

- **स्थान गत भाग्य -**

स्थान गत भाग्य सामूहिक भाग्य का वह पहलू है जो कि प्राकृतिक आपदाओं पर निर्भर करता है। जैसे कि केरल में आई बाढ़, गुजरात में आया भूकंप, कहीं सूखा, कहीं अधिक वर्षा। इनमें से हर एक परिस्थिति में उस जगह के सभी निवासी प्रभावित होते हैं। किसी स्थान का भाग्य स्थान गत सामूहिक भाग्य कहलाता है। इस पर किसी व्यक्ति का नियंत्रण संभव नहीं।



- **दुर्घटना, आग लगना या दंगे फसाद होना -**

ऐसे में काफी संख्या में लोग प्रभावित होते हैं। ऐसे में व्यक्तिगत भाग्य व कर्म से कोई एक आध ही सुरक्षित हो कर बच निकलता है।



- **आर्थिक प्रतिबंध -** आज नोट बंदी, मुद्रा अवमूल्यन, स्फीति से आज पूरा देश त्रस्त है। इससे पूरे देशवासियों का सामूहिक भाग्य प्रभावित हुआ है। यह भी सामूहिक भाग्य का एक हिस्सा है।



- वंशानुगत भाग्य - प्रायः**: ऐसा देखा गया कि परिवार को मिला हुआ अभिशाप पीढ़ी दर पीढ़ी भुगतना पड़ता है। इस सामूहिक भाग्य की पीड़ा से निकला जा सकता है। अगर समय रहते कोई परिवार का सदस्य जागरुक होकर अच्छे ज्योतिषाचार्य से उपचार करा ले तो वंशानुगत भाग्य के दुष्प्रभाव से मुक्ति मिल सकती है।

परिवार के हर सदस्य का व्यक्तिगत भाग्य का प्रभाव जातक से जुड़ा हुआ होता है। जातक अर्थात् व्यक्ति जिसकी कुंडली का अध्ययन हम कर रहे हैं। विगत वर्षों में अनुभव से हमें यह पता चला है कि जब भी कोई व्यक्ति आपसे जुड़ता है तो उसका भाग्य भी आप से जुड़ जाता है। व्यापार में भी साझीदार आपके करियर व आजीविका पर असर डालते हैं। कुछ चतुर व्यापारी परिवार के उस व्यक्ति के नाम से फर्म पंजीकृत करते हैं अथवा प्रतिष्ठान का नाम रखते हैं, जो कि अधिक भाग्यवान हो।

हमारी हिंदू संस्कृति में इसी कारण विवाह के समय कुंडली मिलान का प्रचलन है। यदि वर या वधु के कठोर व हानिकारक ग्रह जैसे मूल, मांगलिक दोष, आदि हों तो उसका निराकरण कुछ धार्मिक रस्मों द्वारा कर दिया जाता है। जिससे दांपत्य जीवन सुख में बीतता है।

आधुनिक काल में भी जो लोग अपने जीवन में सफलता की कामना करते हैं, चाहे वे साधारण वर्ग के हों या बड़े उद्योगपति या राजनीतिज्ञ अथवा फिल्मी सितारे, परिवार में शुभ कार्य होने से पूर्व यथाशक्ति पूजा-पाठ उपाय अवश्य कराते हैं। लोग तो यहां तक कहते हैं कि सदी के महानायक अपनी होने वाली पुत्रवधू को देश के अनेकों मंदिरों में दर्शन करा कर उनके कठोर ग्रहों का शमन ही करा रहे थे।

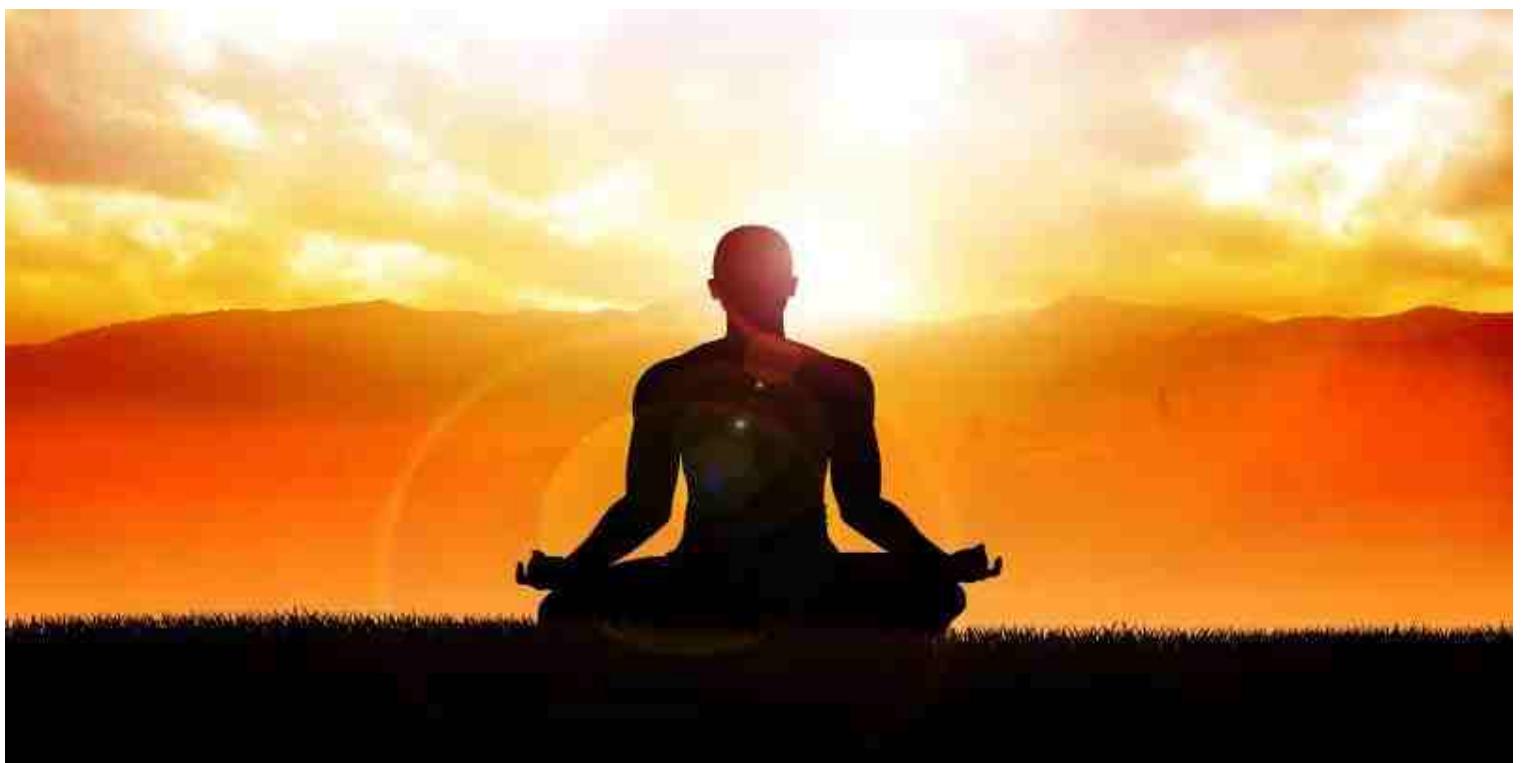
सलीम जावेद की जोड़ी ने कितनी हिट फिल्में बॉलीवुड को दी हैं, यह बताने की जरूरत नहीं है, लेकिन अलग होने के बाद उनकी किस्मत का सितारा भी धीमा व धुँधला पड़ गया। यह सामूहिक भाग्य का ही तो प्रभाव है।

जिस समय डिंपल व राजेश खन्ना व डिंपल कपाड़िया का विवाह हुआ था, तब दोनों का ही फिल्मी करियर शिखर पर था, किंतु विवाहोपरांत दोनों के ही करियर में गिरावट आई, विवाह विच्छेद उपरांत दोनों ने पुनः प्रगति की।

मेनका गांधी एक गुमनाम सी मॉडल का राजनीतिक करियर संजय गांधी से विवाहोपरांत ही प्रकाश में आया। इसे सामूहिक भाग्य ही तो कहेंगे।

यदि आप अपने जीवन में पूर्ण सफलता चाहते हैं तो जीवन के आरंभ से ही या समय समय पर अपना वास्तु व ज्योतिष विश्लेषण अवश्य कराएं। सामूहिक भाग्य आपकी प्रगति में एक अहम भूमिका निभाता है। उचित समय या समय रहते उचित उपाय कर आप अपने जीवन को सफल व सुखमय बना सकते हैं।

कमाल करे गायत्री मंत्र



गायत्री मंत्र

“ॐ भूर्भवः स्वः

तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य थीमहि धियो यो नः
प्रचोदयात्।”

सनातम धर्म में मंत्र एक ऐसा उपाय है जिसके द्वारा मनुष्य जाति ही नहीं वरन् समस्त जीवों का कल्याण संभव है। इन मंत्रों में गायत्री मंत्र की महिमा अपार है। यह सबसे ज्यादा प्रभावी और चमत्कारिक मंत्र है। शास्त्रों में गायत्री मंत्र के महत्व को “ॐ” और महामृत्युंजय मंत्र के समक्ष माना गया है। गायत्री मंत्र के द्वारा सवित्र देव की उपासना की जाती है। अतः इस मंत्र को सवित्री भी कहा जाता है। हिन्दू धर्म में ऐसा विश्वास है कि जो व्यक्ति इस मंत्र को सच्चे मन से और पूर्ण विधि विधान के साथ करता है तो उसे

ईश्वरीय वरदान प्राप्त होता है। तो आइए जानते हैं गायत्री मंत्र की महिमा-

कैसे हुई गायत्री मंत्र की उत्पत्ति?

गायत्री मंत्र की उत्पत्ति कैसे हुई? या गायत्री महामंत्र कैसे बना? कई बार लोगों के ज़ेहन में इस प्रकार के सवाल कौंधते होंगे। शास्त्रों के अनुसार विश्वामित्र गायत्री मंत्र के ऋषि हैं और सर्वप्रथम यह मंत्र ऋग्वेद में उदृत हुआ है। गायत्री मंत्र ऋग्वेद के सात छंदों में से एक है और इस मंत्र में तीन पद (त्रिपदा, वै, गायत्री) हैं। ऐसा कहा जाता है कि जब छंद के रूप में सृष्टि के प्रतीक की कल्पना की जाने लगी तो संपूर्ण विश्व को त्रिपदा गायत्री के स्वरूप माना गया। वहीं जब गायत्री के रूप में जीवन की प्रतीकात्मक व्याख्या हुई तो गायत्री छंद की बढ़ती हुई महिमा से गायत्री

मंत्र की रचना हुई।

गायत्री मंत्र का अर्थ



गायत्री मंत्र का अर्थ मनुष्य जीवन के वास्तविक उद्देश्य को दर्शाता है। इस मंत्र में हम सर्वशक्तिमान परमेश्वर के स्वरूपों का वर्णन करते हुए उनसे प्रार्थना करते हैं कि, “हे ईश्वर! आप हमें सदैव सच्चे मार्ग पर चलने की प्रेरणा देते रहें।” इस मंत्र के द्वारा हमने ईश्वर को प्राण स्वरूप, दुख हर्ता, पाप नाशक, सुख देने वाला, श्रेष्ठ और तेज को धारण करने वाला कहा है और उनके इसी रूप को आत्मसात करने की भी कामना की है।

गायत्री मंत्र का महत्व?

गायत्री मंत्र की असीम शक्ति के कारण इसे महामंत्र कहा जाता है। यह सबसे अधिक फलदायी मंत्रों में से एक है। आध्यात्मिक शक्ति प्राप्त करने का भी यह सबसे बड़ा श्रोत है। गायत्री मंत्र को जपते समय यदि मन में सच्ची श्रद्धा हो और इसे पूर्ण विधि विधान के साथ जपा जाए, तो व्यक्ति सीधे ईश्वर से संपर्क साध सकता है। इसके साथ ही यह मंत्र संकटों और विभिन्न प्रकार के कष्टों का निवारण है। यह मंत्र मनुष्य जीवन से अंधकार और नकारात्मक शक्तियों को दूर कर उसका कल्याण करता है।

गायत्री मंत्र जप विधि

- गायत्री मंत्र जपने से पूर्व स्नान करना चाहिए
- ब्रह्म मुहूर्त में गायत्री मंत्र का जाप करना चाहिए
- प्रदोषकाल में इस इस मंत्र का जाप करना चाहिए
- मंत्र जप करने के लिए रुद्राक्ष की माला का प्रयोग करें
- मंत्र जाप की संख्या कम से कम 108 होनी चाहिए
- पूजा स्थल पर ईश्वर का ध्यान करते समय मंत्र का जाप करें
- मंत्र जपते समय अधिक तेज़ आवाज़ न करें

ॐ भूर्भुवः स्वः ॥
 तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि ।
 धियो यो नः प्रचोदयात् ॥

गायत्री मंत्र के लाभ

गायत्री मंत्र के जाप से उपासक को विभिन्न चमत्कारिक लाभ प्राप्त होते हैं। जो इस प्रकार है-

- **सकारात्मक ऊर्जा एवं उत्साह में होती है वृद्धि :-**
गायत्री मंत्र सकारात्मक ऊर्जा प्राप्त करने का महाउपाय है। इसके जपने से व्यक्ति के विचारों में सकारात्मक का भाव पैदा होता है। साथ ही उसके अंदर अच्छे कार्यों के प्रति उत्साह की भावना जागृत होती है।
- **चेहरे पर आता है तेज :-** यदि जिस व्यक्ति के द्वारा गायत्री महामंत्र का जाप नियमित रूप से किया जाए तो उस व्यक्ति के चेहरे पर तेज और ओजस नज़र आता है। उसकी त्वचा में निखार आता है और उसके व्यक्तित्व का विकास होता है।

गायत्री मंत्र

- नकारात्मक भाव होते हैं दूर :- गायत्री मंत्र जपने से नकारात्मक विचार दूर होते हैं और मन सही दिशा की ओर अग्रसर होता है। यदि आपके मन में नकारात्मक विचार आते हैं तो आपको गायत्री मंत्र का जाप अवश्य ही करना चाहिए।
- धर्म और सेवा कार्यों में लगता है मन :- गायत्री मंत्र का जाप करने वाले व्यक्ति के अंदर सामाजिक सेवा भाव जागृत होता है। दान-धर्म के कार्यों में उसकी सक्रिया भागीदारी रहती है। निश्चित रूप से व्यक्ति को उसका पुण्य भी प्राप्त होता है।
- सपने को साकार करने की मिलती है शक्ति :- यदि दैनिक रूप से गायत्री मंत्र का जाप किया जाए तो व्यक्ति की आत्म-शक्ति बढ़ती है। उसके आत्म विश्वास में वृद्धि होती है। इस प्रकार की शक्ति से मनुष्य अपनी इच्छाओं और सपने को पूरा करने में सक्षम होता है।

एस्ट्रोसेज पत्रिका में विज्ञापन
देने के लिए सम्पर्क करें

9810881743, 9560670006

Pioneer in VR

India's First VR Gaming Company

Visit Now >



क्या आप जानते हैं घर में रखे खजाने के बारे में ?



लीशा
चौहान



आजकल की लाइफस्टाइल और भागदौड़ भरी जिंदगी में बेवक्त खाना लोगों के लिए मानों एक सामान्य बात हो चली है। जिसके चलते उनकी सेहत वक्त से पहले खराब होती जा रही है। आज शहरी हो या ग्रामीण हर व्यक्ति की कार्यशैली इस कदर बदल चुकी है कि उसके शरीर में पीठ दर्द, मोटापा, तनाव, अवसाद आदि बीमारियाँ तेजी से घर करती जा रही हैं और वो चाहते हुए भी कुछ नहीं कर पा रहे हैं। देश में लगातार ऐसे लोगों की तादाद बढ़ती जा रही है जो आज अलग-अलग तरह की बीमारियों से ग्रसित हो रहे हैं।

इन बीमारियों से ग्रस्त शरीर एक बीमार आत्मा की तरह होता है जो हमेशा आध्यात्मिक और मानसिक शांति को प्राप्त कर पाने में असफल रहता है। इसीलिए शरीर को बीमारियों से मुक्त कराने के लिए वेदों में ऐसे आयुर्वेद का जिक्र किया गया है जिससे व्यक्ति स्वस्थ रहने के साथ ही साथ आध्यात्मिक और मानसिक शांति को भी प्राप्त कर सके। करीब-करीब आज हर घर में आपको कम से कम एक व्यक्ति तो बीमार ज़रूर मिल जाएगा और बीमार व्यक्ति का जीवन नर्क की तरह बनकर रह जाता है, जिससे

मुक्ति पाने के लिए आज हम तरह-तरह की दवाइयाँ खाते हैं। परन्तु आज हम आपको आपकी ही घर की रसोई या किचन में मौजूद उन कुछ अचूक आयुर्वेदिक औषधियों के बारे में बताएँगे जो हर मर्ज का इलाज करने में बेहद कारगर हैं लेकिन अपने अल्प ज्ञान की वजह से हम उनका प्रयोग कर पाने में समर्थ होते हैं। तो आइये जानते हैं हर किचन में मौजूद उन्हीं आयुर्वेदिक दवाओं के बारे में, जिनके नित्य प्रयोग से कई बिमारियों से बचा जा सकता है:-

हल्दी

माना गया है कि हर रसोई में आसानी से पाई जाने वाली हल्दी हर प्रकार की चोट के दर्द और सूजन को कम करने में बेहद सहायक होती है,



क्योंकि इसमें मौजूद एंटीसेटिक, एंटीबायोटिक और दर्द निवारक तत्व होते हैं। इसी लिए आज भी चोट लगने पर कई लोग दूध में हल्दी डालकर पीते हैं ताकि उन्हें दर्द से राहत मिल सके। यदि हल्दी अच्छी क्वालिटी की होती दूध

के साथ उसका सेवन करने से हर प्रकार की शारीरिक कमज़ोरी से भी निजात मिलती है।

नींबू

नींबू को प्रकृति की बेहद सुंदर औषधि के रूप में जाना जाता है, क्योंकि माना गया है कि यदि कोई सिरदर्द से पीड़ित हो और उसे बिना दूध की चाय में



नींबू की कुछ बूँदें मिलाकर पिलाया जाए तो इससे तुरंत आराम मिलता है। नींबू के रस के साथ-साथ उसका छिल्का भी बेहद कारगर होता है। माना जाता है कि थकान के कारण यदि किसी को सिर दर्द हो तो नींबू के छिलकों का पेस्ट बनाकर पीड़ित के माथे पर मलने से बह तुरंत सिर दर्द से आराम मिलता है। वजन कम करने के लिए भी नींबू एक आयुर्वेदिक औषधि की तरह काम करता है।

अदरक

अदरक का प्रयोग हमेशा से ही एक दर्द निवारक दवा के रूप में है। सिरदर्द होने पर थोड़ी सी सूखी अदरक को पानी के साथ पीसकर उसका पेस्ट बनाकर यदि माथे पर लगाया जाए तो तुरंत दर्द ग़ायब हो जाता है। हालांकि इसे लगाने पर आपको हल्की जलन ज़रूर होगी। अदरक का इस्तेमाल अपने खाने में भी करना बेहद कारगर होता है। ये आपका कई तरह की मौसमी बीमारियों से बचाव करती है।



हींग

हींग दर्द निवारक और पित्तवर्द्धक होती है। छाती और पेट दर्द में हींग का सेवन लाभकारी होता है। छोटे बच्चों के पेट में दर्द होने पर हींग को पानी में घोलकर पकाने और उसे बच्चों की नाभि के चारों ओर उसका लेप करने से दर्द में राहत मिलती है।



तुलसी के पत्ते

हमेशा से ही माना जाता है कि तुलसी में बहुत सारे औषधीय तत्व मौजूद होते हैं, जो इंसानी शरीर के लिए एक औषधि के रूप में काम करते हैं। तुलसी की कोमल पत्तियों को पीसकर चंदन पाउडर में मिलाकर और उसका पेस्ट बनाकर यदि दर्द से प्रभावित अंगों पर लगाया जाए तो तुरंत दर्द में राहत मिलेगी। इसके साथ ही एक चम्मच तुलसी के पत्तों का रस शुद्ध शहद के साथ हल्के गुनगुने पानी के साथ लिया जाए तो गले की खराश और दर्द दूर हो जाता है।



मेथी

खाने में प्रयोग होने वाला एक चम्मच मेथी के दाने में एक चुटकी भर पिसी हुई शुद्ध हींग मिलाकर पानी के साथ सेवन करने से पेट दर्द में आराम मिलता है। डायबिटीज़ से पीड़ित



आयुर्वेदिक औषधियां

लोगों के लिए भी मेथी बेहद लाभदायक साबित होती है। वहाँ मेथी के लड्डू खाने से जोड़ो के दर्द से छुटकारा मिलता है।

अजवायन

अजवायन हर प्रकार की पेट संबंधित समस्या को दूर करने में बेहद कारगर मानी जाती है। इसका प्रयोग पेट दर्द को दूर करने में मुख्य रूप से किया जाता है। इसके लिए पेट दर्द होने पर केवल आधा



चम्मच अजवायन को गुनगुने पानी के साथ लेने पर राहत मिलती है। साथ ही इसका नियमित रूप से इस तरह सेवन करने से आपका पेट साफ भी रहता है।

करेला

करेला खाने में भले ही कड़वा हो लेकिन इसके लाभ बेहद चमत्कारी होते हैं। करेले का रस पीने से पित्त में लाभ होता है। साथ ही जोड़ों के दर्द में करेले का रस लगाने से काफी राहत मिलती है।



AstroSage Kundli

Download App Now



अंक ज्योतिष का जीवन पर प्रभाव



अंक शास्त्र एक ऐसी ज्योतिषीय विद्या है जिसके द्वारा भविष्य का आकलन किया जाता है। इसे अंक ज्योतिष के नाम से भी जानते हैं। अंक शास्त्र में मूलांक के आधार पर लोगों के जीवन की भविष्यवाणी की जाती है। इसके द्वारा जातक अपने करियर, आर्थिक, वैवाहिक, पारिवारिक, स्वास्थ्य, प्रेम जीवन एवं शिक्षा आदि से संबंधित भविष्य जान सकता है। इसके अलावा यह हमारे स्वभाव, गुण और दोषों को भी दर्शनि का काम करता है। इसलिए हम यह कह सकते हैं कि अंक ज्योतिष का प्रभाव प्रत्यक्ष रूप से व्यक्ति के जीवन पर पड़ता है।

अंक ज्योतिष में मूलांक

अंक विज्ञान के अनुसार हमारे जन्म की तारीख की संख्या के कुल योग को मूलांक कहते हैं। उदाहरण के लिए यदि

किसी जातक का जन्म 15 तारीख को हुआ हो, तो उस व्यक्ति का मूलांक 5+1 यानी 6 होगा। ध्यान रहे, यदि किसी जातक का जन्म 19 या 28 तारीख को हुआ है तो इन दोनों संख्या का योग क्रमशः 10 (1+9) और 10 (2+8) होगा। लेकिन इनका मूलांक 1 (1+0) होगा। इसी प्रकार किसी का जन्म 29 तारीख को हुआ है तो इसका योग भले 11 हो। परंतु इसका मूलांक 2 (1+1) होगा।

अंक शास्त्र में मूलांक और उनका महत्व

अंक ज्योतिष में मूलांक 1 से लेकर 9 तक होते हैं। यहाँ हर एक मूलांक की प्रकृति दूसरे मूलांक से भिन्न है, इसीलिए प्रत्येक मूलांक की अलग विशेषताएं भी होती हैं। इन मूलांक में गुण और दोष दोनों ही समाहित हैं। आइए जानते हैं प्रत्येक मूलांक का महत्व :-

- **मूलांक 1:** स्वतंत्र, ज़िद्दी, स्वार्थी, नेतृत्व क्षमता, आत्म बल और आत्म निर्भर
- **मूलांक 2:** संवेदनशील, सहयोगी, अध्ययनशील, सुस्त, बेपरवाह
- **मूलांक 3:** कल्पनाशील, कलात्मक गुण, आशावादी, ओजस्वी वक्ता, अहंकारी, पाखंडी
- **मूलांक 4:** देशभक्त, ईमानदार, अनुशासित, अंतर्मुखी, बेपरवाह
- **मूलांक 5:** ऊर्जावान, अस्थिर, गैर जिम्मेदार, मिलनसार, साहसी, स्व-कृपालु
- **मूलांक 6:** जिम्मेदार, बलिदानी, विश्वास पात्र, संदेहास्पद, संवेदनशील
- **मूलांक 7:** आध्यात्मिक, विश्लेषक, मननशील, गंभीर, अंतर्मुखी, दूरदर्शी, व्यंग्यकार
- **मूलांक 8:** अधिपति, शक्तिशाली, यथार्थवादी, निर्दियी, लालची
- **मूलांक 9:** दयालु, प्रतापी, रचनाकार, घमंडी, मानसिक रूप से अस्थिर



करामाती है अंक ज्योतिष का प्रभाव

1. अंक ज्योतिष और जीवन पथ

अंक ज्योतिष का संबंध हमारे जीवन पथ से जुड़ा है। इसके द्वारा हम जीवन में आने वाले सुनहरे अवसरों को भुनाने में सफल हो सकते हैं। इसके अलावा अंक ज्योतिष के माध्यम से हमें अपने जीवन में आने वाली चुनौतियों

और समस्याओं का पूर्वानुमान होता है जिससे हम उसके लिए पहले से तैयार हो जाते हैं।

2. अंक शास्त्र और आपका व्यापार व करियर

अंक शास्त्र की मदद से आप अपने अनुकूल कार्य अथवा प्रोफेशन को चुन सकते हैं। ऐसा करने से आपको इसमें कार्य में सफलता मिलेगी। वहीं यदि आप अंक ज्योतिष के माध्यम से अपना व्यापार चुनते हैं तो इसमें अच्छा लाभ देखने को मिलेगा।

3. अंक ज्योतिष से निखरती है प्रतिभा

अंक विज्ञान के माध्यम से आप अपने रुचिकर क्षेत्र की पहचान अच्छे से कर पाते हैं। यह आपकी प्रतिभा को निखारने में मदद करता है। अंक ज्योतिष में कुछ विशेष मूलांक आपके रुचिकर क्षेत्र, आपकी आदतें और प्रतिभा को बताते हैं।

4. व्यक्तित्व विकास

मूलांक के द्वारा आपको अपने गुण व दोषों को पता चलता है। यदि आप अपने गुणों को निखारते और दोषों को मिटाते हैं तो आपका व्यक्तित्व निखर कर सामने आता है। अतः हम यह कह सकते हैं कि अंक ज्योतिष आपके व्यक्तित्व का विकास करने में मदद करता है।



5. जीवन को लेकर सकारात्मक दृष्टि

जीवन को लेकर आपकी दृष्टि कैसी है? यदि आप इस बात का अवलोकन करते हैं तो अंक ज्योतिष के माध्यम से आपको इसका जवाब मिल सकता है। अंक शास्त्र

आपके अंदर सकारात्मक सोच को विकसित करता है जिससे आप बड़ी से बड़ी चुनौतियों को आसानी से पार कर जाते हैं।

6. प्रेम संबंध को बनाए मजबूत

कई बार हम अपने प्रेम जीवन को लेकर काफी असमंजस में होते हैं। प्रेम संबंध को सही दिशा न मिलने के कारण यह रिश्ता नाजुक मोड़ पर आ जाता है। लेकिन अंक विज्ञान की मदद से आप ऐसे परिस्थितियों से आसानी से निकल सकते हैं। इसके द्वारा आप अपने सच्चा प्रेमसाथी पा सकते हैं।

7. घर में आती है सकारात्मक ऊर्जा

यदि आप कोई नया घर खरीदने जा रहे हैं तो अंक ज्योतिष के माध्यम से आप अपने अनुकूल घर का चुनाव कर सकते हैं। इससे घर में सकारात्मक ऊर्जा बनी रहेगी। मूलांक के ज़रिए आप अपने घर का उचित नंबर, ब्लॉक, गली आदि का चुनाव आसानी से कर सकते हैं।

अगर आप एस्ट्रोसेज की साइट पर जाना चाहते हैं तो यहाँ [क्लिक करें](#)

जानें कब मिलेगी सफलता, कब चमकेगा भाग्य?

एस्ट्रोसेज महा कुंडली

कीमत:
~~₹1105~~
₹650

100+ पृष्ठ



[अभी खरीदें >](#)

शीघ्र विवाह के अचूक उपाय



वैदिक ज्योतिष में शीघ्र विवाह के उपाय बताए गए हैं। इस लेख में हम शादी में देरी को लेकर आने वाली परेशानी और उनके समाधानों की बात कर रहे हैं। शीघ्र विवाह और सही समय पर शादी हर युवक-युवती की इच्छा होती है। विवाह में देरी होने से नौजवानों को कई परेशानियों का सामना करना पड़ता है। विवाह में आने वाली परेशानियों की ज्योतिष शास्त्र में कई वजह बताई जाती हैं। इनमें मांगलिक दोष, बृहस्पति और शुक्र ग्रह की खराब स्थिति आदि वजह प्रमुख हैं। यदि किसी भी युवक और कन्या की कुंडली में ऐसे दोष हैं तो विवाह में देरी या शादी के बाद परेशानी उत्पन्न होने की संभावना बनी रहती है। हिंदू धर्म और ज्योतिष विद्या में शीघ्र विवाह के सरल उपाय मौजूद हैं। व्रत, तंत्र-मंत्र, टोटके जैसे तमाम ज्योतिष और धार्मिक उपायों से विवाह में आ रही मुश्किलों को दूर किया जा सकता है। आइये जानते हैं शीघ्र विवाह के सरल उपाय।

विवाह में बाधा आने के कारण

अक्सर जातकों की कुंडली में ऐसे योग भी होते हैं जिससे उनकी शादी में बाधाएँ आती हैं और लाख कोशिश करने के बावजूद वे शादी की खुशी से वंचित रह जाते हैं। इसलिए

जिस प्रकार एक चिकित्सक के लिए किसी रोगी को ठीक करने से पहले उसके मर्ज को पहचानना आवश्यक है उसी प्रकार विवाह में हो रही देरी अथवा शादी न होने का कारण भी जानना उतना ही ज़रुरी है। आइए शीघ्र विवाह के उपाय पर चर्चा करने से पहले ज्योतिष दृष्टिकोण से जानते हैं कि शादी-विवाह में देरी क्यों होती है:-

- **मांगलिक दोष:** शीघ्र विवाह के उपाय में मांगलिक दोष का समाधान होना आवश्यक होता है। यदि किसी जातक की कुंडली में मांगलिक दोष हो तो उसकी शादी में बाधा आएगी। इसके अलावा इस दोष के साथ यदि जातक का विवाह हो चुका है तो शादी में कलह की स्थिति बनी रहेगी इसलिए एक मांगलिक की शादी एक मांगलिक जातक से ही होनी चाहिए। इससे मांगलिक दोष का प्रभाव कम होता है।
- **सप्तमेश का बलहीन होना:** यदि जातक के सप्तम भाव का स्वामी दुष्ट ग्रहों से पीड़ित हो अथवा अपनी नीच राशि में स्थित हो तो वह बलहीन हो जाता है। इसके अलावा सप्तमेश 6, 8, 12 भाव में स्थित होने पर कमज़ोर होता है और इसके प्रभाव से जातकों के विवाह में देरी होती है।
- **बृहस्पति ग्रह का बलहीन होना:** यदि कुंडली में बृहस्पति ग्रह दुष्ट ग्रहों से पीड़ित हो, सूर्य के प्रभाव में आकर अस्त हो अथवा अपनी नीच राशि मकर में स्थित हो तो वह बलहीन हो जाएगा और इससे जातक को शादी-विवाह में दिक्क़त का सामना करना पड़ेगा।
- **शुक्र का नीच होना:** यदि जातक की कुंडली में शुक्र ग्रह कमज़ोर होता है तो उसके जीवन में कोई भी काम

पूरा नहीं हो पाता है और इसलिए जातक को अपने विवाह में बाधाओं का सामना करना पड़ता है।

- नवांश कुंडली में दोषः जन्म कुंडली के नौवें अंश को नवांश कुंडली कहते हैं। ज्योतिष शास्त्र के अनुसार इस कुंडली से जातक के जीवन साथी के बारे में सटीक अनुमान लगाया जा सकता है इसलिए यदि जातक की इस नवांश कुंडली में दोष हो तो जातक के विवाह में बाधाएँ उत्पन्न होंगी।



शीघ्र विवाह के उपाय

ज्योतिष शास्त्र में मनुष्य की हर एक समस्या का समाधान निहित है। जातकों के शीघ्र शादी-विवाह के लिए भी इसमें उपाय दिए गए हैं जो इस प्रकार हैं-

- शीघ्र विवाह के उपाय के तौर पर जातकों को शरीर पर पीले वस्त्र धारण करना चाहिए
- प्रतिदिन दुर्गा सप्तशती से अग्निलास्तोत्रम् का पाठ करने से अविवाहित जातकों का शीघ्र विवाह होता है
- वास्तु यंत्र की पूजा करें
- यदि कोई वर किसी कन्या को शादी के लिए देखने जा रहा है तो उनको गुड़ खाकर जाना चाहिए। इससे शीघ्र विवाह के योग बनते हैं
- जल्दी शादी के उपाय के तौर पर गणेश जी की

आराधना करनी चाहिए और उन्हें लड़ूओं का भोग लगाएँ। ऐसा करने से अविवाहित पुरुषों की शादी में आ रही बाधाएँ दूर होती हैं जबकि कन्याओं को गणपति महाराज को मालपुए का भोग लगाना चाहिए

- शीघ्र विवाह के लिए पूजा स्थल पर नवग्रह यंत्र स्थापित कर पूजा करें
- प्रत्येक गुरुवार को पानी में एक चुटकी हल्दी डालकर स्नान करें। इससे विवाह के शीघ्र होने के योग बनते हैं
- भोजन में केसर का सेवन करना चाहिए ऐसा करने से जल्दी शादी होने की संभावना एँ होती हैं
- अपने से बड़े लोगों का हमेशा सम्मान करें। ऐसा करने से उनका आशीर्वाद प्राप्त होता है
- ओपल धारण करें
- गुरुवार को केले के वृक्ष के सामने शुद्ध धी का दीपक जलाएँ और गुरु (बृहस्पति) के 108 नामों का उच्चारण करें और ऐसा करने से जातकों का विवाह शीघ्र होता है
- जल में बड़ी इलायची डालकर उसे उबालें। फिर इस जल को स्नान के पानी में मिलाएँ। इसके बाद इस पानी से स्नान करें। इस उपाय से शुक्र के दोषों का निवारण होता है
- गौरी शंकर रुद्राक्ष धारण करें
- गुरुवार के दिन आठे के दो पेड़ों पर थोड़ी-सी हल्दी लगाकर, थोड़ा गुड़ और चने की दाल गाय को खिलाएँ। इससे विवाह का योग शीघ्र बनता है
- विवाह योग्य कन्या गुरुवार के दिन तकिए के नीचे हल्दी की गांठ को पीले वस्त्र में लपेट कर रखें। ऐसा करने से शीघ्र हाथ पीले होने के शुभ योग बनते हैं
- यदि लड़के के विवाह में देरी हो रही हो तो मिट्टी के कुलहड़ में मशरूम भर कर किसी भी मंदिर में दान करें। इससे लड़के का विवाह शीघ्र होगा

- शुक्रवार के दिन सूर्यस्ति से पूर्व विवाह शीघ्र होने की ईश्वर से प्रार्थना करें और फिर रसोई घर में बैठकर भोजन ग्रहण करें
- विवाह के योग्य जातक अपने पलंग (बेड) के नीचे लोहे की वस्तुएँ एवं कबाड़ आदि न रखें
- पूर्णिमा के दिन वट वृक्ष की 108 बार परिक्रमा करने से अविवाहित जातकों की विवाह की इच्छा पूरी होती है। यह शीघ्र विवाह का अच्छा उपाय माना जाता है।
- यदि अविवाहित कन्या किसी अन्य कन्या की शादी में जाए और वहाँ दुल्हन के हाथों से मेहंदी लगवा ले तो इससे उसकी शीघ्र शादी की संभावनाएँ बनती हैं
- कहते हैं कि शिव-पार्वती जी का पूजन करने से विवाह की मनोकामना पूरी हो जाती है इसलिए अविवाहित जातकों को शिवलिंग का कच्चे दूध से अभिषेक करना चाहिए एवं बेल पत्र, अक्षत, कुमकुम आदि से विधिवत पूजा करनी चाहिए
- सोमवार के दिन चने की दाल एवं कच्चे दूध का दान करें और यह प्रयोग तब तक करते रहना चाहिए जब तक कि जातक का विवाह न हो जाए

मांगलिक लोगों के लिए शादी के उपाय

- प्रत्येक मंगलवार को मंगल-चंडिका स्त्रोत का पाठ करें
- शनिवार को सुन्दर काण्ड का पाठ करें
- मांगलिक लड़के मंगलवार को हनुमान जी को सिंदूर चढ़ाएँ
- मांगलिक लड़के/लड़की अपने कमरे के दरवाजे को लाल/गुलाबी रंग से रंगें

अगर आप एस्ट्रोसेज की साइट पर जाना चाहते हैं तो यहाँ [क्लिक करें](#)

शीघ्र विवाह हेतु मंत्र

**पञ्चो मनोरमा देहि मनोवृत्तानुसारिणिम्।
तारिणीं दुर्गसंसारसागरस्य कुलोद्धवाम॥**

यह मंत्र दुर्गा सप्तशती से उद्भृत है। शादी की कामना करने वाले पुरुष जातकों को स्नान के बाद 11 बार इस मंत्र का जाप करना चाहिए। इससे उनकी कामना पूर्ण होगी। यह शीघ्र विवाह का अचूक उपाय है।

“ॐ गं गणपतये नमः”

इस मंत्र को जपने से पहले बुधवार के दिन पीतल से बनी गणेश जी की प्रतिमा को पंचामृत से स्नान करवाकर पंचोपचार विधि से पूजन करें। उसके बाद 21 बार इस मंत्र का जाप करें और जाप के बाद पंचामृत को पीपल के पेड़ में चढ़ाएँ। यह जल्दी शादी होने का अहम उपाय है।

“ॐ सूष्टिकर्ता मम विवाह कुरु कुरु स्वाहा”

मंगलवार के दिन लक्ष्मी-नारायण की प्रतिमा को घर में स्थापित करें उसके बाद पंचोपचार विधि से पूजन के उपरांत इस मंत्र का 21 बार जाप करें।

“ॐ श्रीं वर प्रदाय श्री नमः”

सोमवार को शिव मंदिर में पाँच नारियल चढ़ाएँ और इस मंत्र की 5 बार माला फेरें। ध्यान रखें, यह मंत्र विशेष रूप से कन्याओं के लिए है।

**“कर्लीं कृष्णाय गोविंदाय गोपीजनवल्लभाय
स्वाहा”**

उक्त मंत्र का 108 बार जाप करने से अविवाहित कन्या अथवा वर का शीघ्र विवाह संपन्न हो जाता है। इस मंत्र का जाप करने से भगवान् श्रीकृष्ण का आशीर्वाद प्राप्त होता है।

“ॐ ग्रां ग्रां ग्रों सः गुरुवे नमः”

प्रत्येक गुरुवार के दिन इस मंत्र को उच्चारित करते हुए पाँच बार माला फेरें। इससे अविवाहित जातकों का विवाह शीघ्र होता है।

व्रत

वैदिक ज्योतिष और हिंदू धर्म में शीघ्र विवाह के कई उपाय बताये गये हैं। विवाह योग्य जातक व्रत रखकर और ईश्वर भक्ति करके भी अपनी शादी की मनोकामना को पूर्ण कर सकते हैं। वैदिक ज्योतिष में विवाह के लिए निम्न व्रत बताए गए हैं-

- **बृहस्पतिवार व्रतः** शीघ्र विवाह के उपाय के तौर पर बृहस्पतिवार (गुरुवार) के दिन व्रत रखने से बृहस्पति देव प्रसन्न होते हैं। विशेषकर स्त्रियों के लिए यह व्रत शुभ फलदायी माना गया है। इस व्रत को धारण करने से मन की सभी इच्छाएं पूर्ण होती हैं। इस व्रत को विवाह योग्य वर अथवा कन्या अपने शीघ्र विवाह के लिए रखते हैं।
- **सोलह सोमवार व्रतः** सोमवार का व्रत भगवान् शिव को समर्पित है और यह जल्दी शादी होने का अचूक उपाय माना जाता है। ऐसा कहा जाता है कि सोलह सोमवार का व्रत पूरे विधि विधान के साथ करने से सारी मनोकामनाएँ पूरी होती हैं। अतः विवाह योग्य जातक इस व्रत का पालन कर अपनी विवाह की इच्छा पूर्ण कर सकते हैं।
- **वैभव लक्ष्मी व्रतः** शीघ्र विवाह के उपाय के तहत वैभव लक्ष्मी व्रत सोमवार को रखा जाता है। इस व्रत को स्त्री-पुरुष दोनों ही धारण कर सकते हैं। इससे घर में माँ लक्ष्मी जी का वास होता है और जीवन में सुख-समृद्धि की प्राप्ति होती है। अविवाहित कन्या अथवा वर इस व्रत का पालन कर माँ लक्ष्मी से अपने लिए जीवनसाथी का वरदान मांग सकते हैं।

जानें कब होगा आपका भाग्योदय!
महा कुंडली

कीमतः **₹1105**
@ मात्र **₹650**

अभी खरीदें

क्यों जरूरी है शादी के लिए कुंडली मिलान?



वैदिक ज्योतिष के अनुसार शादी से पहले वर और वधु की कुंडली मिलान बहुत आवश्यक है। विवाह मानव जीवन का सबसे महत्वपूर्ण संस्कार होता है। ऐसा कहा जाता है कि शादी का पवित्र बंधन व्यक्ति के जन्म से पूर्व स्वर्ग में ही तय हो जाता है और कुंडली मिलान इस जोड़ी को धरती पर पुनः मिलाने का ज़रिया बनता है। शादी की चाह रखने वाला प्रत्येक व्यक्ति अपने लिए एक अच्छा जीवनसाथी चाहता है। परंतु कई बार ऐसा देखने में आता है कि शादी के बाद पति-पत्नी के बीच रिश्ते बिंगड़ जाते हैं। दोनों के विचार अलग होने के कारण मतभेद होने लगते हैं और बाद में ये सब कारण उनके बिछड़ने का कारण बन जाते हैं। शादी के बाद वर-वधु का जीवन सुखी रहे इसलिए कुंडली मिलान के माध्यम से दोनों के गुण मिलाए जाते हैं।

कुण्डली मिलान से चुनें बेहतर जीवनसाथी
हिन्दू ज्योतिष के अनुसार विवाह को सफल बनाने के लिए कुंडली मिलान प्रक्रिया बहुत ही है। शादी दो आत्माओं के मिलन का पवित्र बंधन है। यह वर और वधु के बीच सात जन्मों का रिश्ता होता है। कुंडली मिलान को गुण मिलान, लग्न मेल, मेलापक आदि नाम से भी जाना जाता है। विवाह से पूर्व कुण्डली मिलान में गुण मिलान और मांगलिक दोष पर विचार किया जाता है।

गुण मिलान

कुंडली मिलान वर और वधु की जन्म कुंडली (जन्मपत्री) को आधार मानकर किया जाता है। इसमें चंद्र ग्रह की स्थिति को ध्यान में रखकर दोनों के गुण मिलाए जाते हैं। उत्तर भारत में गुण मिलान प्रक्रिया को “अष्टमूलक

कुंडली मिलान

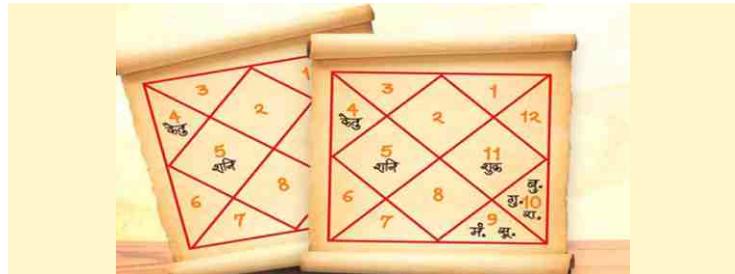
मिलान” कहा जाता है। यहाँ अष्ट का अर्थ आठ होता है जबकि कूट का मतलब पक्ष होता है। अर्थात् हम कह सकते हैं कि गुण मिलान में आठ पक्षों पर विचार किया जाता है जो निम्न प्रकार के हैं:

- **वर्ण :** वर्ण को चार भागों बांटा जाता है। जिसमें ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र होते हैं। वर्ण में वर-वधु के अहंकार का मिलान किया जाता है।
- **वश्य :** वश्य के आधार पर वर वधु कुंडली में यह देखा जाता है कि शादी बाद कौन किस पर हावी रहेगा। इसे पाँच प्रकार से देखा जाता है- मानव, वंचर, चतुष्पद (चार पैरों से चलने वाला), जलचर, कीट (कीड़ा)।
- **नक्षत्र :** इसमें वर और वधु के नक्षत्र मिलाए जाते हैं। इसमें दोनों का स्वास्थ्य जीवन देखा जाता है। ज्योतिष शास्त्र में 27 प्रकार के नक्षत्र होते हैं।
- **योनि :** इसमें लड़के और लड़की के बीच निकटता, शारीरिक संबंधों में अनुकूलता आदि के बारे में देखा जाता है। योनि कूट को 14 जानवरों में विभाजित किया गया है जो मानव के व्यक्तित्व के लक्षण को दर्शाते हैं। इनके नाम हैं- घोड़ा, हाथी, भेड़, साँप, कुत्ता, बिल्ली, चूहा, गाय, भैंस, चीता, हिरन, बंदर, शेर, नेवला।
- **गृह मैत्री :** इसमें वर-वधु के मानसिक गुण, आपसी स्नेह, मित्रता आदि को मिलाया जाता है। यह दोनों के बीच चंद्र राशि मिलान को भी दर्शाता है। यह सात ग्रहों को देखकर मिलाया जाता है। सात ग्रह- सूर्य, चंद्र, मंगल, बुध, गुरु, शुक्र और शनि।
- **गण :** इसमें वर और वधु के स्वभाव और व्यवहार को मिलाया जाता है। इसको तीन तरह से मिलाया जाता है- देव (व्यक्ति के अंदर सात्त्विक गुण होते हैं), मानव (इस श्रेणी में व्यक्ति के अंदर रजो गुण होते हैं), राक्षस

(इस श्रेणी के व्यक्ति के अंदर तमो गुण होते हैं)।

- **भट्कूट :** इसमें वर-वधु की भावनाओं का मेल देखा जाता है। यह परिवार, आर्थिक समृद्धि और दम्पत्ति के बीच की खुशी को निर्धारित करता है। इसमें वर की कुंडली में स्थित ग्रहों को कन्या की कुंडली के ग्रहों को मिलाया जाता है।
- **नाड़ी :** इसमें वर-वधु के स्वास्थ्य जीवन को देखा जाता है। इसके साथ ही दोनों की आनुवांशिक अनुकूलता को देखा जाता है। तीन प्रकार की नाड़ी होती हैं - आदि, मध्य और अंत।

कूट	मिलान के लिए संख्या
वर्ण	1
वश्य	2
नक्षत्र	3
योनि	4
गृह मैत्री	5
गण	6
भट्कूट	7
नाड़ी	8
योग	36



गुण मिलान का महत्व

अष्टकूट में कुल 36 गुण होते हैं। यहाँ पर वर और वधु के जितने अधिक गुण मिलेंगे, उनकी शादी उतनी सफल मानी जाएगी।

गुण संख्या	परिणाम
18 से कम	शादी योग्य नहीं माना जाएगा।
18 से 24 तक	सामान्य
24 से 32 तक	उत्तम
32 से 36 तक	अति उत्तम

मांगलिक दोष

विवाह हेतु कुंडली में मांगलिक दोष पर भी विचार किया जाता है। क्योंकि मंगल दोष व्यक्ति के वैवाहिक जीवन में क्लेश पैदा करता है। इस दोष के कारण कुटुंब में अनहोनी और रिश्तों में बिखराव पैदा होते हैं। यदि किसी जातक की कुंडली में मंगल दोष हो तो उसे मंगल दोष को दूर करने के उपाय करने चाहिए।

अगर आप एस्ट्रोसेज की साइट पर जाना चाहते हैं तो यहाँ [क्लिक करें](#)

एस्ट्रोसेज वर्ष पत्रिका

50% off

आपका कुंडली आधारित
12 महीनों का भविष्यफल



कीमत

~~₹999~~ ₹499

अभी स्वरीदें



गीता का महत्व बताती गीता जयंती



श्रीमद्भगवद्‌गीता, हिंदू धर्म के मानने वालों के विचारों को प्रदर्शित करती है, और इनकी वर्षगांठ को गीता जयंती के रूप में मनाया जाता है। इस दिन किये जाने वाले अनुष्ठानों के बारे में जानें।

भगवद्‌गीता को सार्वभौमिक रूप से हिंदू धर्म के सार के रूप में स्वीकार किया जाता है। इसलिये हिंदुत्व को मानने वाले हर शख्स द्वारा गीता जयंती को बहुत अहम माना जाता है। इस पवित्र हिंदू पाठ की शुरुआत कुरुक्षेत्र युद्ध के दौरान शुरू हुई थी। भारतीय इतिहास और सभ्यता के पन्नों में यह एक भव्य अध्याय है। भगवान् श्रीकृष्ण ने गीता का उपदेश अपने मित्र और साथी महान् धनुर्धर अर्जुन को दिया था। उस समय से हिंदू समुदाय के लोगों द्वारा अन्य धार्मिक ग्रथों में गीता को सर्वोच्च दर्जा दिया गया। इस साल गीता जयंती 8 दिसंबर को मनाई जाएगी। हिंदू पंचांग के अनुसार गीता जयंती मार्गशीर्ष माह के शुक्ल पक्ष की एकादशी तिथि को मनायी जाती है। इस वर्ष यह त्योहार मोक्षदा एकादशी के साथ है इसलिये इसका महत्व और भी बढ़ जाता है। मोक्षदा एकादशी के दिन लोग संसार की मोहमाया और सारे प्रलोभनों से दूर होने के लिये

नवीन
खन्तवाल



व्रत रखते हैं। इस व्रत के नाम से ही पता चलता है कि यह मोक्ष की प्राप्ति के लिये लिया जाता है। आइए अब हम वर्ष 2019 के दौरान इस त्योहार के शुभ मुहूर्त पर एक नजर डालते हैं।

गीता जयंती मुहूर्त 2019

एकादशी तिथि शुरू	07:01:55 सुबह, 8 दिसंबर, 2019
एकादशी तिथि समाप्ति	09:06:27 सुबह, 8 दिसंबर, 2019
समयकाल	2 घंटे 4 मिनट

नोट : यह मुहूर्त नई दिल्ली और इसके आसपास के इलाकों के लिये प्रभावी है। अपने शहर या कस्बे के लिये सही मुहूर्त की जानकारी के लिये [यहाँ क्लिक करें।](#)

गीता जयंती : महत्व

हिंदू धर्म को मानने वाले हर शख्स के दिल में श्रीमद्‌भगवाद्‌गीता का विशेष स्थान है। गीता को हिंदू धर्म का सबसे पवित्र ग्रंथ है। यह लाल कपड़े में लिपटी अन्य पुस्तकों की तरह नहीं है, इसमें जीवन को जीने के सही छंद समाहित हैं। वह प्रत्येक चीज जो इस ब्रह्मांड का हिस्सा है उसका गीता में उल्लेख मिलता है। गीता के पाठ न केवल व्यक्ति के जीवन से अज्ञानता के अंधेरे को दूर करते हैं बल्कि जीवन से जुड़ी महत्वपूर्ण शिक्षा भी प्रदान करते हैं।

गीता की शिक्षाओं को जीवन में उतारने के लिये और हर शख्स तक इसकी शिक्षाओं को पहुंचाने के लिये, गीता जयंती को बड़े धूमधाम से मनाया जाता है। जैसा कि हम आपको पहले भी बता चुके हैं यह दिन इस बार मोक्षदा एकादशी के साथ पड़ रहा है, इस दिन लोग मोक्षदा एकादशी का व्रत भी रखेंगे। इस दिन भगवद गीता के पाठ के साथ-साथ लोग, भगवान कृष्ण और व्यास ऋषि की भी पूजा करेंगे। व्यास ऋषि ने ही महाभारत की पूर्ण कथा भगवान गणेश से लिखवायी थी।



पौराणिक कथाओं में गीता जयंती का उल्लेख

हर कोई जानता है कि गीता जयंती की जड़ें महाभारत महाकाव्य से जुड़ी हैं। इस महाकाव्य में कौरवों और पांडवों के बीच हुए महायुद्ध का जिक्र है। यह युद्ध 18 दिनों तक लड़ा गया था। गीता का प्रवचन युद्ध से ठीक पहले शुरू हुआ था। पराक्रमी अर्जुन ने भगवान कृष्ण से, जो उनके सारथी बने थे, रथ को युद्ध के मैदान के बीच में ले जाने के लिए कहा। अर्जुन पांडवों की सेना का पराक्रमी योद्धा था लेकिन युद्ध के मैदान में जाकर उसका हृदय व्यथित हो गया क्योंकि विपक्षी सेना में उसके कई सगे संबंधी और मित्र थे। सुलह की कई कोशिशों के विफल हो जाने के बाद, अर्जुन मोहभंग की स्थिति में चला गया था। क्षत्रियों की तरह उसे जो कर्म करना चाहिये था उसे अर्जुन नहीं

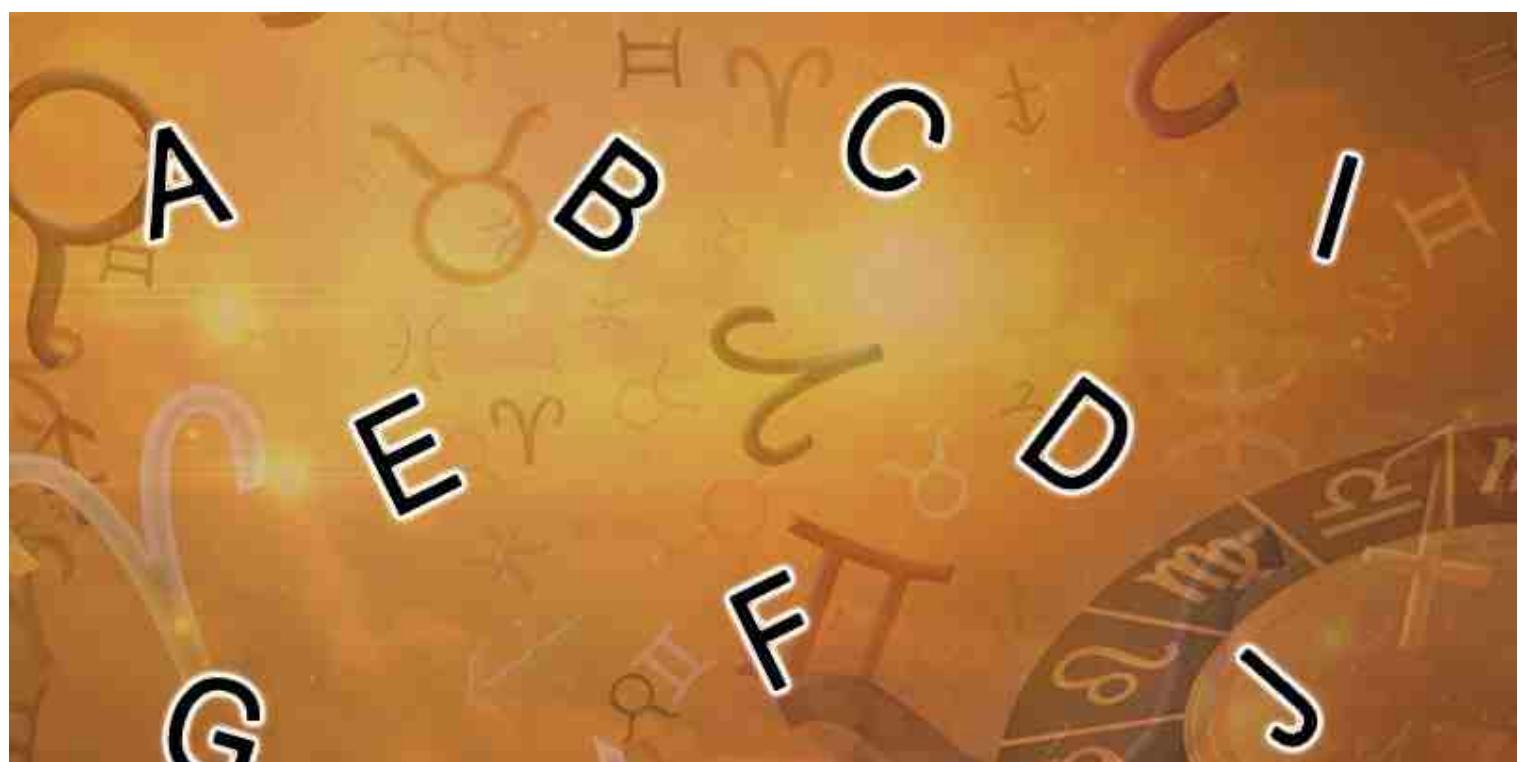
निभा पा रहा था। इसलिये ऐसी स्थिति से निकलने के लिये उसने अपने मित्र और साथी भगवान कृष्ण की सहायता मांगी। इसके बाद भगवान कृष्ण द्वारा अर्जुन को कई उपदेश दिये गये, और इन्हीं उपदेशों से भगवद गीता पुस्तक का अवतरण हुआ। भगवान कृष्ण ने अर्जुन को मार्गशीर्ष माह की एकादशी तिथि को गीता के उपदेश दिये थे इसलिये इस दिन को गीता जयंती के रूप में मनाया जाता है।

गीता जयंती के दिन किये जाने वाले अनुष्ठान

इस बार गीता जयंती के साथ-साथ लोगों द्वारा मोक्षदा एकादशी का व्रत भी रखा जाएगा। इस दिन कुछ नियमों का पालन करना बहुत आवश्यक होता है। जिनके बारे में नीचे बताया गया है।

- गीता जयंती के दिन सुबह जल्दी उठकर स्नान करें।
- इसके बाद इस दिन व्रत रखने का संकल्प करें।
- व्रत रखने वाले जातकों को व्रत से पहले वाली रात को किसी तरह का भोजन नहीं करना चाहिये।
- भगवद गीता के पाठ के साथ-साथ इस दिन भगवान कृष्ण और ऋषि व्यास की पूजा भी करनी चाहिये।
- इस व्रत में रात के समय भी पूजा करें, रात को जागरण रखना भी अति शुभ माना जाता है।
- इस दिन श्रद्धापूर्वक भगवान कृष्ण को दीप, धूप और प्रसाद अर्पित करना न भूलें।
- हो सके तो इस दिन कुरुक्षेत्र जाएं या किसी भी कृष्ण मंदिर में जाकर भगवान कृष्ण और भगवद गीता को श्रद्धांजलि अर्पित करें।
- कम से कम गीता के एक अध्याय का पाठ अवश्य करें।
- संभव हो तो गीता पाठ प्रतियोगिता में हिस्सा लें।

नाम के पहले अक्षर में छिपे हैं आपके ज़िंदगी के कई राज!



क्या आप जानते हैं, आपके नाम का पहला अक्षर आपके व्यक्तित्व के कई राज उजागर करता है? यह आपके स्वभाव, चरित्र, पसंद-नापसंद, हाव-भाव आदि के बारे में बताता है। इसके अतिरिक्त यह आपके भविष्य की ओर भी इशारा करता है। वैदिक ज्योतिष के अनुसार हिन्दू धर्म में बच्चों के नाम का पहला अक्षर उसकी जन्म कुंडली में स्थिति ग्रहों व नक्षत्रों की स्थिति के आधार पर रखा जाता है। इसमें माता-पिता द्वारा किसी ज्योतिषी या पंडित से शिशु के नामकरण के लिए सुझाव मांगा जाता है। इसलिए हम अपने नाम के अनुसार भी अपना राशिफल देखते हैं।

अगर आप एस्ट्रोसेज की साइट पर जाना चाहते हैं तो यहाँ [क्लिक करें](#)

आइए अब जानते हैं नाम का पहला अक्षर किस तरह से आपके व्यक्तित्व के कई राज खोलता है:

- A अक्षर से शुरू होने वाले नाम:** आप दूसरों के सामने खुद को थोड़ा अहंकारी और कठोर दिखाने की कोशिश करते हैं। लेकिन वास्तव में आप अपने जीवन की ज़रूरतों को लेकर ज़िद्दी दिखाई देते हैं। आप बौद्धिक रूप से कुशल और बातों की बजाय कार्य पर भरोसा रखने वाले व्यक्ति होते हैं।
- B अक्षर से शुरू होने वाले नाम:** नाम राशिफल के अनुसार जिस व्यक्ति का B अक्षर से नाम शुरू होता है वे अपनी निजता को अधिक महत्व देते हैं। ऐसे व्यक्ति

भावुक होते हैं और दूसरों लोगों से यह अपेक्षा करते हैं कि लोग उनकी भावनाओं का सम्मान करें। हालांकि प्यार से इन्हें अधिक संतुष्ट रखा जा सकता है। इनके विचारों में नयापन देखने को मिलता है।

- **C अक्षर से शुरू होने वाले नाम:** हिन्दू ज्योतिष के अनुसार जिस व्यक्ति के नाम का पहला अक्षर C से होता है वे अधिक सामाजिक होते हैं। हालांकि ये उन व्यक्तियों का साथ चाहते हैं जो देखने में सुंदर और आकर्षक हों। अपनी प्रशंसा आपको पसंद आती है। साथ ही आप अधिक महत्वाकांक्षी होते हैं।
- **D अक्षर से शुरू होने वाले नाम:** नाम के अनुसार होने वाली भविष्यवाणी से पता चलता है आप वर्चस्ववादी होते हैं। परंतु इसके साथ ही आप भावुक और परवाह करने वाले होते हैं और अपने पार्टनर से भी यही अपेक्षा रहती है। विचित्र व्यवहार आपको ज़रा भी पसंद नहीं होता है।
- **E अक्षर से शुरू होने वाले नाम:** जिस व्यक्ति का नाम E अक्षर से शुरू होता है वे अपनी दिन की शुरुआत बौद्धिक विचार-विमर्श से करना पसंद करते हैं। सकारात्मक बहस को आप सुनना पसंद करते हैं। आप किताबों से प्रेम करते हैं और आपका आशिक्र मिजाज भी ग़ज़ब का होता है।
- **F अक्षर से शुरू होने वाले नाम:** नाम राशि के अनुसार जिस व्यक्ति का नाम F अक्षर से शुरू होता है वे अपने प्रेम जीवन को अधिक महत्व देते हैं। ऐसे व्यक्ति अधिक रोमांटिक और प्यार के प्रति जुनूनी होते हैं। आप अपने लव पार्टनर या जीवनसाथी से वफा की उम्मीद रखते हैं।
- **G अक्षर से शुरू होने वाले नाम:** नाम राशिफल के अनुसार आप अपने आप को सक्रिय और प्रत्येक कार्य में निपुण बनाने की कोशिश करते हैं। आप

बुद्धिजीवियों से मेल-जोल रखना पसंद करते हैं। आपको अपनी भावनाओं को व्यक्त करने में कठिनाई महसूस होती है। खासकर उनके सामने जो आपके दिल के बेहद क्रीब होते हैं।

- **H अक्षर से शुरू होने वाले नाम:** आप अपने जीवन से प्यार करते हैं और छोटी-छोटी चीज़ों में खुशियाँ ढूँढ़ते हैं। आप कैसी भी परिस्थिति में दूसरों के लिए विश्वसनीय और सहयोगी होते हैं। हालांकि दूसरों के लिए आपको संतुष्ट करना थोड़ा मुश्किल होता है।
- **I अक्षर से शुरू होने वाले नाम:** यदि आपका नाम I अक्षर से शुरू होता है तो आप ईमानदार, चंचल और थोड़े मूढ़ी होते हैं। आप भव्य जीवन को जीना पसंद करते हैं और नई-नई चीज़ों का अनुभव लेते हैं। हालांकि कमज़ोर विश्वसनीयता आपका नकारात्मक पक्ष होता है।
- **J अक्षर से शुरू होने वाले नाम:** आपकी काम में सक्रिय भागीदारी रहती है और ऊर्जा में भी कोई कमी नहीं होती है। आप अपनी ऊर्जा को सही दिशा में लगाना अच्छी तरह से जानते हैं। आपका व्यक्तित्व एक आदर्श के रूप में सामने आता है इसलिए आप लोक प्रिय होते हैं।
- **K अक्षर से शुरू होने वाले नाम:** K अक्षर वाले थोड़े शर्मले स्वभाव के होते हैं। अधिक रोमांटिक होने के कारण आपका प्रेम जीवन सफल होता है। आप अपने कार्य को गंभीरता से लेते हैं। आपके दोस्तों की संख्या में भी कोई कमी नहीं होती है।
- **L अक्षर से शुरू होने वाले नाम:** नाम राशिफल के अनुसार आप रोमांटिक स्वभाव के होते हैं। लोग आपकी संगति को बेहद पसंद करते हैं। आपको बुद्धिजीवियों की संगति करना अच्छा लगता है और आप अपने पार्टनर में भी यह गुण देखते हैं।

- **M अक्षर से शुरू होने वाले नाम:** जिन लोगों के नाम का पहला अक्षर M होता है वे अधिक सरल और मासूम होते हैं। इस कारण ये लोग आसानी से धोखे का शिकार हो जाते हैं। हालांकि छोटी-छोटी बातों में आप गुस्सा हो जाते हैं। आपको अपनी हार पसंद नहीं होती है। आपकी अपेक्षा रहती है कि आपका पार्टनर परफेक्ट होना चाहिए। आप आसानी से अपनी भावनाओं को व्यक्त नहीं कर पाते हैं।
- **N अक्षर से शुरू होने वाले नाम:** हृदय से आप कोमल और भावुक होते हैं। N अक्षर से शुरू होने वाले नाम के व्यक्ति प्यार के भूखे होते हैं। अपने प्रियतम के प्रति आप समर्पित होते हैं। आप कल्पना शक्ति के धनी होते हैं।
- **O अक्षर से शुरू होने वाले नाम:** O अक्षर से शुरू होने वाले नाम के व्यक्तियों का सेंस ऑफ ह्यूमर कमाल का होता है। आपका मज़ाकिया स्वभाव होता है। आप अपने पार्टनर (जीवनसाथी/प्रेमसाथी) से वफा की उम्मीद रखते हैं। आप प्रेम के प्रति जुनूनी होते हैं, लेकिन अपने लव पार्टनर पर अधिकार ज़माने का प्रयास करते हैं।
- **P अक्षर से शुरू होने वाले नाम:** आप दूसरों के विचारों को गंभीरता से लेते हैं। आलोचनाओं के आधार पर आप अपने दोषों को सुधारने का प्रयास करते हैं। आपको समाज में उठना-बैठना पसंद है इसलिए आप लोगों से जल्दी घुल मिल जाते हैं।
- **Q अक्षर से शुरू होने वाले नाम:** जिन जातकों के नाम का पहला अक्षर Q से होता है वे अधिक ऊर्जावान होते हैं। आपकी दिलचस्पी नई चीज़ों को सीखने में अधिक होती है। आप संवाद शैली के भी धनी होते हैं और खुद से प्रेरणा पाकर अपने आपको ऊर्जायमान बनाए रखते हैं।
- **R अक्षर से शुरू होने वाले नाम:** नाम राशि के अनुसार R अक्षर वाले व्यक्ति सादगीभरा जीवन व्यतीत करना पसंद करते हैं। आप लोगों की प्रतिक्रियाओं को महत्व देते हैं और बौद्धिक विचार-विमर्श के लिए तैयार रहते हैं।
- **S अक्षर से शुरू होने वाले नाम:** जिस जातक के नाम का पहला अक्षर S होता है। वह अच्छा मित्र होता है। आपके ऊपर दोस्तों का इतना भरोसा होता है कि वे अपना हर राज़ आपके साथ साझा करते हैं। आप अपने वचन पर कायम रहते हैं। आप स्वभाव से उदार और परवाह करने वाले होते हैं।
- **T अक्षर से शुरू होने वाले नाम:** T अक्षर से शुरू होने वाले नाम के जातक संवेदनशील होते हैं। अपने निजी जीवन में दूसरों की दखल अंदाज़ी आपको पसंद नहीं होती है। आप अपनी पसंद-नापसंद के अनुसार ही चीज़ों को तय करते हैं। प्रेम जीवन में आप अपना वादा निभाते हैं।
- **U अक्षर से शुरू होने वाले नाम:** आप खुश मिजाजी होते हैं और आपके जोश में भी कोई कमी नहीं होती है। आप अपने जीवन से प्रेम करते हैं और यात्रा करना आपको पसंद है। आप दूसरों की भावनाओं को महत्व देते हैं।
- **V अक्षर से शुरू होने वाले नाम:** आप स्वतंत्र विचार वाले होते हैं। यदि कोई आपकी आज़ादी पर पहरा बिछाता है तो यह आपको क़तई पसंद नहीं है। आप दूसरों के प्रति दयालु होते हैं। आप स्वभाव से तो शांत रहते हैं परंतु आपकी इच्छाशक्ति बहुत मजबूत होती है।
- **W अक्षर से शुरू होने वाले नाम:** जिस जातक के नाम का पहला अक्षर W होता है वह स्वभाव से थोड़ा अहंकारी होता है। हारना आपको पसंद नहीं है। हालांकि आप अपने प्रियजनों की परवाह करते हैं।

- रिलेशनशिप में आप एक अच्छे पार्टनर बनकर सामने आते हैं।
- **X अक्षर से शुरू होने वाले नाम:** आप उस किस्म के व्यक्ति हैं जो जल्दी ही बोर होने लगते हैं। इसलिए आप अपने टेस्ट में बदलाव करते रहते हैं। आप बहु-प्रतिभा के धनी होते हैं। आपको दूसरों की बजाय खुद का साथ अच्छा लगता है।
- **Y अक्षर से शुरू होने वाले नाम:** Y अक्षर से शुरू होने वाले नाम के व्यक्ति आज़ाद ख्याल के होते हैं। आप
- अपनी भावनाओं को नियंत्रण में रखने में सफल होते हैं। आप अपने कौशल में लगातार वृद्धि करते हैं। आप अपने प्रेम के प्रति जुनूनी होते हैं।
- Z अक्षर से शुरू होने वाले नाम:** जिस व्यक्ति के नाम का पहला अक्षर Z होता है वे बहुत रोमांटिक होते हैं। इसलिए आपका प्रेम जीवन सुखी रहता है।

एस्ट्रोसेज पत्रिका में विज्ञापन
देने के लिए सम्पर्क करें

9810881743, 9560670006

कब बरसेगा पैसा छप्पर फाड़कर?
राज योग रिपोर्ट

अभी खरीदें



कीमत : ₹999 ₹299

देशभर में इन जगहों पर अपने अनोखे अवतारों में विराजमान हैं शनिदेव



लीशा
चौहान



हिन्दू धर्म में शनि को सौरमंडल के सभी ग्रहों में से सबसे ज्यादा प्रभावशाली माना जाता रहा है। जिन्हे मनुष्य को उसके कर्मों के अनुसार फल देने दायित्व प्राप्त हैं। वैदिक ज्योतिष में भी शनि ग्रह का बहुत अधिक महत्व बताया गया है। शनि ग्रह को आयु, दुख, रोग, पीड़ा, विज्ञान, तकनीकी, लोहा, खनिज तेल, कर्मचारी, सेवक, जेल आदि का कारक प्राप्त है। इसके अलावा इन्हे मकर और कुंभ राशि का स्वामी माना गया है। जबकि तुला राशि में शनि को उच्च का तो वहीं मेष में इन्हे नीच का माना जाता है। अगर उनके गोचर की बात करें तो शनि एक राशि से दूसरी राशि में अपना गोचर करीब ढाई वर्ष के बाद ही करता है। जिसे ज्योतिषीय भाषा में शनि ढैया कहा जाता है। ढाई वर्ष तक एक राशि में रहने के कारण सभी ग्रहों में से शनि की गति सबसे मंद होती है। वहीं किसी भी जातक की कुंडली में शनि की दशा करीब साढ़े सात वर्ष की होती है जिसे शनि की साढ़े साती कहा जाता है।

शनि की कृपा से रंक, राजा बन जाता है

क्रूर होने के कारण समाज में शनि देव को लेकर कई तरह की नकारात्मक धारणा बनी हुई है। जिसके कारण लोग शनि देव के नाम से भी भयभीत हो जाते हैं। परंतु असल में शनि इसके बिलकुल विपरीत होते हैं। जो स्वभाव से भले ही एक क्रूर ग्रह हो लेकिन यह पीड़ित होने पर ही व्यक्ति को नकारात्मक फल प्रदान करते हैं। इसके साथ ही यदि किसी जातक की कुंडली में शनि उच्च स्थिति में हो तो माना जाता है कि उस जातक को रंक से राजा बनते देर नहीं लगती है। इसलिए आजकल लोग उन्हें प्रसन्न करने के लिए शनिदेव की पूजा-आराधना करते हैं, जिसमें वो बहुत सावधानी बरतते हैं। साथ ही उनकी प्रकोप से बचने के लिए भी लोग हर शनिवार के दिन उनकी उपासना करते हैं। शनि देव को देश के हर कोने में पूजा जाता है। ऐसे में चलिए जानते हैं शनि देव के उन विशेष छह मंदिरों के बारे में जो देशभर में बेहद प्रसिद्ध हैं।

1. मुरैना का शनिचरा मंदिर

मध्य प्रदेश के ग्वालियर से सटे एक ऐंती नामक गांव का शनिदेव मंदिर देशभर में खासा प्रसिद्ध है। माना जाता है कि देश के सबसे



प्राचीन मंदिरों में से एक इस मंदिर का निर्माण त्रेतायुग में किया था, जिसमें प्रतिष्ठित शनिदेव की प्रतिमा का भी अपना एक विशेष महत्व है। मान्यताओं अनुसार, शनि देव की ये अनोखी प्रतिमा आसमान से टूट कर गिरे एक उल्कापिंड से निर्मित हुई थी। इसके साथ ही कई ज्योतिषी व खगोलविद का भी मानना है कि शनि पर्वत पर निर्जन वन में स्थापित होने के कारण यह स्थान विशेष प्रभावशाली है। याद दिला दें कि महाराष्ट्र के सिगनापुर शनि मंदिर में स्थापित शनि शिला भी इसी शनि पर्वत से ही ले जाई गई थी। कई पुराणिक कथाओं में शनि पर्वत का उल्लेख आपको आज मिल जाएगा, उन्ही में से एक मान्यता के अनुसार हनुमान जी ने शनिदेव को रावण की कैद से मुक्त कराकर उन्हें इसी मुरैना पर्वतों पर विश्राम करने के लिए छोड़ा था। इसी कारण इस मंदिर में आपको हनुमान जी की एक भव्य मूर्ति के भी दर्शन करने को मिलते हैं।

2. शनि शिंगणापुर

महाराष्ट्र में स्थित एवं विश्वभर में प्रसिद्ध शनि शिंगणापुर का बहुत महत्व है। क्योंकि कई लोग इस पवित्र स्थान को शनि देव की जन्म भूमि समझते हैं। इस पवित्र स्थान की एक बात सबसे ज्यादा हैरान करती है कि यहाँ आपको



शनि देव के दर्शन तो होते हैं, लेकिन यहाँ कोई शनि मंदिर नहीं बना हुआ। अर्थात् यहाँ शनि देव का घर तो है लेकिन उसमें दरवाज़ा नहीं है। शिंगणापुर को बेहद चमत्कारी स्थल माना जाता है, यहाँ स्थित शनिदेव की प्रतिमा लगभग पांच फीट नौ इंच ऊंची व लगभग एक फीट छह इंच चौड़ी है। जिसका दिलदार करने देश-विदेश के श्रद्धालुओं का ताता लगा रहता है। लोग हर साल लाखों की तादाद में यहाँ शनिदेव की इस दुर्लभ प्रतिमा के दर्शन से लाभ उठाने आते हैं।



3. इंदौर का शनि मंदिर

मध्यप्रदेश के इंदौर में शनिदेव का प्राचीन व बेहद चमत्कारिक मंदिर है, जो इंदौर के जूनी में स्थित है। इस मंदिर का नाम केवल देश के सभी प्राचीन मंदिरों में ही नहीं आता बल्कि ये दुनिया का भी सबसे प्राचीन मंदिर है। जिसके बारे में माना जाता है कि पौराणिक काल में यही वो मंदिर है जहाँ शनि देव स्वयं पधारे थे। इस मंदिर की महत्वता को लेकर कई पौराणिक कथाएँ भी प्रचलित हैं, उन्ही में से एक कथा के अनुसार, इस मंदिर के स्थान पर लगभग 300 वर्ष पूर्व एक 20 फुट ऊंचा टीला था, जहाँ वर्तमान पुजारी के पूर्वज पंडित गोपालदास तिवारी आकर ठहरे थे।

4. दिल्ली के शनि तीर्थ क्षेत्र, असोला, फतेहपुर बेरी

इस मंदिर में दुनिया की सबसे बड़ी शनि देव की मूर्ति हैं, जो अष्टधातुओं से बनी है। शनि देव का यह भव्य, प्राचीन मंदिर दिल्ली के महरौली में स्थित है, जहाँ दुनियाभर से श्रद्धालु शनि दोष के निवारण हेतु आते हैं।



5. शनि मंदिर, तिरुनल्लर

तमिलनाडु के तिरुनल्लर में स्थित नवग्रह मंदिरों में से एक ये विशाल मंदिर शनिदेव को समर्पित है। इस मंदिर को देश का सबसे पवित्र शनि मंदिर माना जाता है। जिसको लेकर ये मान्यता है कि इस मंदिर में शनि देव की पूजा करने से व्यक्ति को शनिदेव के प्रकोप से मिली बदकिस्ती, गरीबी और अन्य बुरे प्रभावों को दूर किया जा सकता है। इस मंदिर में एक सबसे विशेष बात ये भी है कि इसमें भगवान



शिव की पूजा का भी अपना एक विशेष महत्व है। क्योंकि माना जाता है कि यहाँ शिव जी की पूजा करने से शनि ग्रह के सभी बुरे प्रभावों से मुक्ति मिल जाती है।

6. प्रतापगढ़ का शनि मंदिर

उत्तर प्रदेश के प्रतापगढ़ में स्थित शनि देव का मंदिर भारत के प्रमुख शनि मंदिरों में से एक है, जो मुख्य रूप से शनि धाम के रूप में प्रख्यात है। भगवान शनि का ये प्राचीन पौराणिक मन्दिर प्रतापगढ़ जिले के विश्वनाथगंज बाजार से 2 किलोमीटर दूर कुशफरा के जंगल में है, जो दुनियाभर के लोगों के लिए श्रद्धा और आस्था का मुख्य केंद्र हैं। मान्यता है कि यही वो पवित्र स्थान है जहाँ मात्र आने भर से ही भक्तों को शनि देव की कृपा प्राप्त होती है। इस मंदिर में कई चमत्कार देखने को मिलते हैं, जिसके कारण भी लोगों में इस मंदिर के प्रति अपार श्रद्धा रखते हैं। ये मंदिर अवध क्षेत्र का एक मात्र पौराणिक शनि धाम होने के कारण यहाँ रोजाना हजारों की संख्या में लोग आते हैं। यहाँ हर शनिवार शनिदेव को विशेष तौर से उनकी पसंद के 56 प्रकार के व्यंजनों का भोग लगाया जाता है, जिसे प्रसाद के रूप में भी लोगों में बाटाँ जाता है।





Genuine Rudraksha

Get Lowest Price Rudraksha

ये 7 रत्न जो बदल सकते हैं आपकी दुनिया



रत्न ज्योतिष में विभिन्न रत्नों के महत्व को बताया गया है। प्रत्येक राशि रत्न किसी ग्रह से संबंध रखता है। वैदिक ज्योतिष के अनुसार यदि आपकी कुंडली में कोई ग्रह कमज़ोर है और आपको उसके अच्छे परिणाम नहीं मिल रहे हैं तो आपको उस ग्रह से संबंधित रत्न पहनना चाहिए। इससे आपकी परेशानियाँ दूर हो जाएंगी। वास्तव में राशि अथवा ग्रह के अनुसार रत्न धारण करना एक अचूक ज्योतिषीय उपाय है। परंतु रत्न धारण करने से पूर्व किसी अच्छे ज्योतिषाचार्य की सलाह अवश्य लेनी चाहिए। वरना इसके विपरीत परिणाम भी देखने को मिलते हैं। यहाँ 7 रत्नों के बारे में बताया गया है जो कि इस प्रकार हैं:-

माणिक्य/रुबी

स्वामी ग्रह : सूर्य, **राशि :** सिंह

लाभ : रत्न ज्योतिष में माणिक्य रत्न को धारण करने के कई लाभ बताए गए हैं। माणिक्य धारण करने वाले व्यक्ति को प्रोफेशन क्षेत्र में सफलता हासिल होती है। इसके प्रभाव समाज में अग्रणी निभाता है और उसे होती है। हिन्दू ज्योतिष जातक की कुंडली में यदि सूर्य उच्च स्थिति में हो और वह जातक माणिक्य धारण कर ले तो उसे सरकारी अथवा निजी क्षेत्र में उच्च पद की प्राप्ति होती है। स्वास्थ्य के नज़रिए से भी माणिक्य के अनेक फ़ायदे हैं। इससे जातक के नेत्र संबंधी विकार एवं शारीरिक कमज़ोरी दूर होती है।





Lab Certified Gemstones
Genuine Gemstones at best price

धारण विधि : रत्न ज्योतिष के अनुसार माणिक्य को सोने की अंगूठी में जड़वाकर रविवार, सोमवार या गुरुवार के दिन पहनना चाहिए। पहनने से पूर्व माणिक्य को गंगाजल से शुद्ध कर लेना चाहिए। ध्यान रखें, यह आपकी त्वचा से अवश्य स्पर्श होना चाहिए। कम से कम माणिक्य रत्न 2 कैरेट का होना चाहिए। संभव हो तो आप 5 रत्ती का रुबी धारण करें।

2. मोती

स्वामी ग्रह : चंद्रमा, **राशि :** कर्क

लाभ : रत्न ज्योतिष के मुताबिक मोती को धारण करने वाले जातकों का वैवाहिक जीवन सुखी रहता है। मोती पहनने से व्यक्ति का मन शुद्ध होता है और एकाग्रता बनी रहती है। यह शरीर के करने में सहायक विद्वानों का धारण करने वाले एवं रक्त संबंधी रोग मोती बिना ज्योतिषीय परामर्श के नहीं पहनना चाहिए।



कई रोगों को भी दूर होता है। ज्योतिष मानना है कि मोती व्यक्ति को मूत्राशय नहीं होते हैं। हालांकि

धारण विधि : ज्योतिष में मोती धारण करने की विधि होती है और इसी के अनुसार हमें इस रत्न को पहनना चाहिए। मोती को चांदी की अंगूठी में धारण करना चाहिए। इसे शुक्ल पक्ष में सोमवार के दिन धारण करना चाहिए। आप ज्योतिषाचार्य के अनुसार 3 कैरेट का मोती अथवा 5 रत्ती का मोती धारण कर सकते हैं।

3. मूँगा

स्वामी ग्रह : मंगल, **राशि :** मेष व वृश्चिक

लाभ : मूँगा धारण करने वाले व्यक्ति का साहस कभी

कमज़ोर नहीं होता है। इसके प्रभाव वह ऊर्जावान रहता है और उस व्यक्ति का अपने लक्ष्य के प्रति जुनून ठंडा नहीं पड़ता है। इसलिए सफल होता है। जो व्यक्ति मूँगा पर मंगल ग्रह की व्यक्ति को त्वचा, रक्त संबंधी रोग नहीं होते हैं। यह हमारे शरीर के तापमान को सामान्य बनाए रखता है।



धारण विधि : मूँगा को पूर्ण विधि के अनुसार धारण करना चाहिए। इसे सोने की अंगूठी में धारण करना शुभ होता है। मूँगा को किसी भी शुक्ल पक्ष को मंगलवार के दिन धारण किया जाता है। मूँगा जड़ित अंगूठी को अनामिका उंगली में पहनना चाहिए। ज्योतिष परामर्श के अनुसार आप 3 कैरेट का मूँगा या फिर 5 रत्ती का मूँगा धारण कर सकते हैं।

4. पञ्चा

स्वामी ग्रह : बुध, **राशि :** मिथुन व कन्या

लाभ : पञ्चा धारण करने से भाग्य में वृद्धि होती है। व्यक्ति का समाज में प्रभाव बढ़ता है। वहीं पञ्चा धारण करने वाला व्यक्ति व्यापार में भी तरक्की करता है। बौद्धिक क्षेत्र में भी उसके ज्ञान का लोहा माना जाता है। यदि कोई गर्भवती महिला

उसकी डिलीवरी वैदिक ज्योतिष पञ्चा बुध ग्रह से को पाने में कारगर



सुरक्षित होती है। के अनुसार असली संबंधित शुभ फलों भूमिका निभाता है।

यदि आपका बुध ग्रह कमज़ोर है तो आप इस रत्न को धारण कर सकते हैं।

धारण विधि : रत्न में पत्रा धारण करने की विधि बतायी गई है और उसी के अनुसार हमें इसे पहनना चाहिए। पत्रा को स्वर्ण या चांदी की अंगूठी में जड़वाकर पहनना चाहिए। आप इस रत्न को गंगा जल से शुद्ध करके किसी भी शुक्ल पक्ष में बुधवार के दिन सूर्योदय के पश्चात धारण कर सकते हैं। ज्योतिषीय परामर्श के बाद आप 7 कैरेट का पत्रा, 5 कैरेट का पत्रा या फिर 2 कैरेट का पत्रा धारण कर सकते हैं।

5. पुखराज

स्वामी ग्रह : बृहस्पति, **राशि :** धनु व मीन

लाभ : यदि आपकी कुंडली में गुरु कमज़ोर हो तो आपको पुखराज रत्न धारण करना चाहिए। इससे आपको अच्छे परिणाम मिलेंगे।

अपार सफलता
किसी जातक
में कोई परेशानी



संतान संबंधी कोई
धारण करने से इस तरह की समस्याएँ दूर होती हैं। इस रत्न के प्रभाव से जातक को स्वास्थ्य एवं आर्थिक क्षेत्र में प्रबल लाभ मिलता है।

धारण विधि : पुखराज को सोने एवं चांदी की अंगूठी में जड़वाकर पहनना चाहिए। इसे शुक्ल पक्ष में गुरुवार को सूर्योदय के बाद पहनना चाहिए। पुखराज को ज्योतिषीय परामर्श के बाद पूर्ण विधि-विधान से धारण करना चाहिए। इसमें आप 2 कैरेट का पुखराज, 3 कैरेट का पुखराज, 5 कैरेट का पुखराज या फिर 7 कैरेट का पुखराज धारण कर सकते हैं।

अगर आप एस्ट्रोसेज की साइट पर जाना चाहते हैं तो यहाँ [क्लिक करें](#)

6. सफेद टोपाज

स्वामी ग्रह : शुक्र, **राशि :** वृषभ व तुला

लाभ : रत्न ज्योतिष में व्हाइट टोपाज को भौतिक सुख-सुविधा, कला और प्रेम प्रदान करने वाला रत्न कहा जाता है। इसके प्रभाव से भौतिक संपन्नता, कलात्मक कार्यों में सफलता और संबंधों में मधुरता आप फैशन



इंडस्ट्री, कला, गायन और अन्य क्रिएटिव इंडस्ट्री से जुड़े हैं तो यह रत्न आपके लिए बेहद लाभकारी है। व्हाइट टोपाज सेहत के लिहाज से भी फ़ायदेमंद होता है। चिकित्सा की दृष्टि से यह यूरिनरी सिस्टम और प्रजनन क्षमता के लिए भी अच्छा माना जाता है।

धारण विधि : व्हाइट टोपाज रत्न को चाँदी की अंगूठी में धारण करना चाहिए। इसके अलावा इसे सोने या पंचधातु की अंगूठी में भी पहना जा सकता है। व्हाइट टोपाज को शुक्ल पक्ष में आने वाले शुक्रवार के दिन सुबह के समय पहनना चाहिए। हालांकि इससे पूर्व आप किसी ज्योतिषी की सलाह अवश्य लें। इसमें आप 5 कैरेट टोपाज अथवा 7 कैरेट टोपाज रत्न धारण कर सकते हैं। इसके अलावा भी अमेरिकन डायमंड भी इसका अच्छा विकल्प है।

7. नीलम

स्वामी ग्रह : शनि, **राशि :** मकर व कुंभ

लाभ : शनि की दैय्या में नीलम और अचूक किसी जातक उच्च हो और वह साढ़े साती और शनि बड़ा ही असरदार उपाय है। यदि की कुंडली में शनि नीलम धारण कर ले



रत्न ज्योतिष

तो उसके सकारात्मक फल प्राप्त होते हैं। नीलम के प्रभाव से जातक के जीवन से दरिद्रता दूर होती है और स्वास्थ्य जीवन पर भी इसका सकारात्मक प्रभाव पड़ता है। इससे व्यक्ति दीर्घायु प्राप्त करता है और उसके भाग्य में भी वृद्धि होती है।

धारण विधि : नीलम रत्न को धारण करने के लिए किसी

विद्वान ज्योतिषाचार्य से परामर्श अवश्य लेना चाहिए। इस रत्न का चाँदी की अंगूठी में जड़वाकर शनिवार को सूर्यस्त के बाद मध्यमा अंगुली में पहनना चाहिए। रत्न धारण करने से पूर्व शनि ग्रह से संबंधित मंत्र का 108 बार जाप करना चाहिए। आप अपनी अनुकूलता के हिसाब से 2 कैरेट नीलम, 3 रत्ती नीलम, 5 कैरेट का नीलम या फिर 7 रत्ती का नीलम धारण कर सकते हैं।



EUREKA

Innovation in
Career Counselling:

CogniAstro™
Right Counselling, Bright Career

Know More

मंगल का वृश्चिक राशि में गोचर क्या कमाल दिखाएगा ?

25

दिसंबर 2019 (बुधवार)

**मंगल का वृश्चिक
राशि में गोचर
(25 दिसम्बर, 2019)**



मंगल ग्रह को धरतीपुत्र कहा जाता है और इसी कारण यह प्रॉपर्टी का कारक ग्रह है। यदि आप कोई प्रॉपर्टी खरीदना चाहते हैं, अपना घर बनाना चाहते हैं अथवा कंस्ट्रक्शन व रियल एस्टेट के कारोबार से जुड़े हैं तो आपके लिए मंगल का अनुकूल होना अति आवश्यक हो जाता है। मंगल से प्रभावित होने वाले जातक आम तौर पर क्रोधी, अहंकारी, जिद्दी और अव्यवस्थित हो सकते हैं। वहीं मंगल की अनुकूलता व्यक्ति को ज़बरदस्त इच्छाशक्ति का मालिक बनाती है और इसके कारण व्यक्ति कितने भी कठिन निर्णय क्यों न हो उन्हें लेने में पूरी तरह सक्षम होता है। इसके साथ ही कुंडली में मंगल की अनुकूलता व्यक्ति को अच्छा खिलाड़ी भी बनाती है। मंगल मेष एवं वृश्चिक राशियों का स्वामी ग्रह है और कर्क व सिंह राशि के लिए योग कारक ग्रह है। मृगशिरा, चित्रा, धनिष्ठा मंगल के नक्षत्र होते हैं।

वैवाहिक जीवन को कैसे करता है मंगल प्रभावित ?

विवाह के संबंध में भी मंगल की स्थिति विशेष रूप से देखी जाती है क्योंकि इसकी अनुकूल स्थिति वैवाहिक जीवन को सुखमय बनाती है। हमारे जीवन में भाइयों का रिश्ता भी मंगल ग्रह से ही प्रभावित है इसलिए मंगल ग्रह की अनुकूलता पाने के लिए अपने भाइयों की सहायता करनी चाहिए। अगर आपकी कुंडली में मंगल की स्थिति अच्छी नहीं है तो आपको मंगल ग्रह की शांति के उपाय करने चाहिए।

मंगल ग्रह की शांति के उपाय

- मंगल ग्रह की शांति के लिए अच्छी गुणवत्ता का मूँगा रत्न मंगलवार के दिन मंगल की होरा या मंगल के नक्षत्रों

के दौरान पहनना चाहिए।

- मंगल ग्रह को शांत करने के लिए हनुमान चालीसा का नियमित पाठ करना चाहिए।
- मंगल ग्रह की शांति के लिए आप मंगल ग्रह के बीज मंत्र “ॐ क्रां क्रीं क्रौं सः भौमाय नमः” का भी जाप कर सकते हैं।

मंगल ग्रह के गोचर का समय

मंगल ग्रह 25 दिसंबर 2019, बुधवार की रात्रि 20:26 बजे अपनी ही राशि वृश्चिक में गोचर करेगा और 8 फरवरी 2020, शनिवार 02:45 बजे तक इसी राशि में स्थित रहेगा। मंगल के वृश्चिक राशि में गोचर का प्रभाव सभी 12 राशियों पर पड़ेगा। आइये अब इस राशिफल के माध्यम से डालते हैं उन प्रभावों पर एक नज़र...

मेष

मंगल ग्रह का गोचर आपकी राशि से अष्टम भाव में होगा। इस गोचर के दौरान आपको अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने में कुछ परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। आपको ऐसा भी महसूस होगा कि जो लोग आपको आगे बढ़ते नहीं देखना चाहते वो आपके खिलाफ साजिश कर रहे हैं। इसमें थोड़ी बहुत आपके मन की कल्पना होगी लेकिन कार्यक्षेत्र में कुछ लोग सच में आपके खिलाफ साजिशें कर सकते हैं। आपको इस दौरान अपने काम पर ज्यादा ध्यान देने की आवश्यकता है और ऑफिस में होने वाली राजनीति से दूर रहने की जरूरत है। कारोबारी वर्ग के लोग पैसों से जुड़े मामलों को लेकर थोड़ा सावधान रहें। स्वास्थ्य से जुड़ी कुछ परेशानियां भी



आ सकती हैं। हृद से ज्यादा काम करना आपको अस्वस्थ कर सकता है और इसकी वजह से आपका मानसिक तनाव भी बढ़ सकता है। परिवार के बीच अपनी बात रख पाने में आप असमर्थ होंगे और जो बातें आप बोलेंगे उनको उस तरह से नहीं समझा जाएगा जैसा आप समझाना चाहते हैं। बेहतर होगा कि आप इस दौरान कम से कम बोलें। प्रेम जीवन की बात की जाए तो आपका गुस्सैल स्वभाव आपके प्रेमी को आपसे दूर कर सकता है। ऐसे में प्रेम की ओर को मजबूत बनाए रखना है तो अपने गुस्से पर काबू रखें।

उपाय: भगवान शिव की पूजा करें और उन्हें गेहूं दान करें।

वृषभ

मंगल ग्रह का गोचर आपकी राशि से सप्तम भाव में होगा। इस भाव से हम जीवन में की जाने वाली साझेदारियों के बारे में विचार करते हैं। वैवाहिक जीवन में सुधार करने के लिए आपको अपने जीवनसाथी के साथ बैठकर बातचीत करने की जरूरत है। मंगल का यह गोचर आपके अंदर अहम भाव भर सकता है जिसके कारण आपका जीवनसाथी तो परेशान होगा ही घर के बाकी सदस्यों को भी दिक्कतें आ सकती हैं। जिन जातकों की कुंडली में मंगल अच्छी अवस्था में नहीं है उन्हें इस दौरान मंगल ग्रह को शांत करने के लिए मंगल ग्रह से जुड़े शांति के उपाय करने चाहिए। स्वास्थ्य की बात की जाए तो आपको इस समय पेट से जुड़ी परेशानियां हो सकती हैं। मानसिक तनाव की वजह से आपको अनिद्रा की परेशानी भी हो सकती है। व्यावसायिक पक्ष की बात करें तो इस समय आपको अच्छे फल मिलने की उम्मीद है।



आपके द्वारा किये गये कामों को आपके सीनियर्स का समर्थन मिल सकता है, जिससे आप अपने काम में और भी अच्छा प्रदर्शन कर पाएंगे। यह बात याद रखें कि आपके साथ अच्छा बुरा जो भी होता है उसके जिम्मेदार आप ही होते हैं इसलिए दूसरों पर अंगुली उठाने से पहले खुद पर ध्यान दें।

उपाय: हनुमान जी की पूजा करें और उन्हें सिंदूर चढ़ाएं।

मिथुन

साहस और पराक्रम के कारक ग्रह मंगल का गोचर आपकी राशि से षष्ठम भाव में होगा। मंगल का यह गोचर आपको कई क्षेत्रों में अच्छे फल दिलाएगा। इस समय आपके व्यवहार में अच्छे परिवर्तन आ सकते हैं, अपने गुस्से को काबू कर पाने में आप समर्थ होंगे। आपका जोश आपके आसपास रहने वाले लोगों में भी सकारात्मकता भरेगा। चाहे नौकरी पेशा से जुड़े लोग हों या कारोबारी इस समय अपनी सूझबूझ के दम पर अच्छे परिणाम पा पाएंगे। अगर आपको यह महसूस होता है कि आपकी कुछ कमियों की वजह से आप कुछ लोगों से पीछे हैं तो इस दौरान आप उन कमियों को दूर करने की कोशिश कर सकते हैं। आपका आशावादी नज़रिया आपको भविष्य की योजनाएं बनाने की तरफ प्रेरित करेगा। आपके काम करने का तरीका तो इस समय अच्छा होगा ही इसके साथ ही आपका भाग्य भी आपका पूरा साथ देगा। छात्र अपनी एकाग्रता को अच्छा करने के लिए इस समय योग का सहारा ले सकते हैं। जो छात्र प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारियों में जुटे हैं उन्हें अपने किसी क़रीबी



मित्र का बेहद ज़रुरी साथ इस अवधि में मिल सकता है। कुल मिलाकर देखा जाए तो यह समय आपके अनुकूल है। ऐसे में इस समय आपको अपने लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए कम मेहनत करके भी सफलता मिल सकती है।

उपाय: मंगलवार के दिन लाल चंदन का दान करें।

कर्क

मंगल के इस गोचरीय काल में आपका पंचम भाव सक्रिय रहेगा। यह गोचर आपको सकारात्मक ऊर्जा से भर देगा और आप अपने कामों को समय पर पूरा कर पाने में सक्षम होंगे। अगर कोई काम अधर में लटका है तो इस दौरान उसे पूरा कर दें। समय की अहमियत क्या होती है यह अब आपको समझ में आ सकता है। पारिवारिक जीवन में भी आप काफी एक्टिव रहेंगे। यदि आपके माता-पिता को कोई तकलीफ है तो इस समय आपको उन्हें समय देना चाहिए। सामाजिक जीवन में आप अपने बात करने के तरीके से लोगों को प्रभावित करेंगे। हालांकि किसी की गलत बात पर आप सख्त रुख भी अपना सकते हैं। अगर आप अपना कारोबार करते हैं तो आपके अधिनस्थ कर्मचारी इस समय आपके मजाकिया अंदाज को देखकर खुश होंगे। आप अपने कर्मचारियों का इस समय पूरा ध्यान रखेंगे। वहीं नौकरी पेशा से जुड़े लोगों को अतीत में किये गये उनके कार्यों का अच्छा फल इस समय मिलेगा। दांपत्य जीवन अच्छा रहेगा लेकिन संतान पक्ष को लेकर आपको चिंताएं हो सकती हैं। इस समय में आपको जीवन के कुछ महत्वपूर्ण निर्णय लेने पड़ सकते हैं। पंचम भाव से विद्या और ज्ञान के बारे में भी विचार किया जाता है इसलिए इस



राशि के छात्र इस दौरान कुछ नया सीखने की कोशिश करते नजर आ सकते हैं।

उपाय: मंगलवार के दिन गुड़ का दान करें।

सिंह

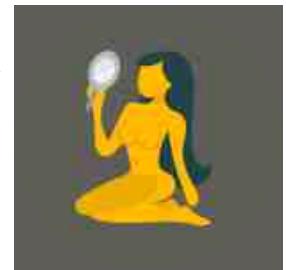
मंगल का गोचर आपकी राशि से चतुर्थ भाव में होगा। इस गोचरीय काल में आपको थोड़ा संभलकर चलने की जरूरत है। विपरीत परिस्थितियों का आपको सामना करना पड़ सकता है। ऐसे में आपको यह बात याद रखनी होगी कि जीवन में उतार-चढ़ाव आते रहते हैं और इन उतार-चढ़ावों से ही आप जीवन में कई अनुभव प्राप्त करते हैं, जब स्थितियाँ आपके अनुकूल न हों तो आपको धैर्य बनाए रखने की जरूरत होती है, ऐसे समय में अगर आप खुद पर काबू नहीं रख पाते तो स्थितियाँ और ज्यादा विपरीत हो सकती हैं। सेहत को लेकर आपको बहुत सचेत रहना होगा, इस समय आपको मानसिक तनाव और हृदय संबंधी परेशानियाँ हो सकती हैं। सामाजिक जीवन थोड़ा बेहतर रहने की उम्मीद है इस दौरान आपका कोई पुराना मित्र आपके काम आ सकता है। पारिवारिक जीवन में संपत्ति को लेकर कहासुनी हो सकती है। हालांकि घर का कोई वरिष्ठ अपनी सूझबूझ से इस मामले को शांत कर देगा। यह समय ऐसा है जब आप हकीकत से ज्यादा कल्पनाओं में खोए रहेंगे। आप अपने भविष्य को अपनी कल्पनाओं में खूबसूरत बनाने की कोशिश करेंगे लेकिन ऐसा करना आपके लिए ठीक नहीं है। वर्तमान में रहना सीखें और वर्तमान को बेहतर बनाएँ जब आपका वर्तमान बेहतर होगा तब ही आपका भविष्य भी उज्ज्वल होगा।



उपाय: चाँदी का कड़ा हाथ में पहने।

कन्या

मंगल का आपके तृतीय भाव में गोचर होगा। तृतीय भाव को पराक्रम भाव भी कहा जाता है और इससे आपके साहस और पराक्रम के बारे में विचार किया जाता है।



मंगल का यह गोचर आपके लिए शानदार रहने वाला है। वैवाहिक जीवन में इस समय आपको अच्छे फल मिलेंगे। जीवनसाथी के साथ रोमांटिक पल बिताने का आपको पर्याप्त समय भी मिलेगा। हालांकि जीवनसाथी की सेहत इस दौरान थोड़ी बिगड़ सकती है। जिन शादीशुदा जातकों के दांपत्य जीवन में कुछ गलतफ़हमियाँ आयी थीं वो भी इस समय दूर हो जाएंगी। पैसों को लेकर थोड़े से चिंतित हो सकते हैं लेकिन आपकी आमदनी में इस दौरान बृद्धि होने के योग हैं जिससे आपकी कई आर्थिक चिंताएं दूर हो जाएंगी। गृहणियाँ अपनी पाक कला से इस समय अपने जीवनसाथी को खुश कर सकती हैं। व्यवसाय करने वाले लोगों को अपने किसी रिश्तेदार की सलाह से मुनाफ़ा होने के योग हैं। छात्रों की बुद्धिमता गुरुजनों को प्रभावित करेगी। आपका कोई गुरु आपके माता-पिता के समक्ष आपकी तारीफों के पुल बांध सकता है। इस गोचर के दौरान आपको जीवन के कई क्षेत्रों में अच्छे फल मिलेंगे लेकिन आपको अपनी उन्नति को देखकर अहम भाव से नहीं भरना चाहिए। जिस तरह फलों से भरा पेड़ झुक जाता है उसी तरह यदि आपके साथ अच्छा हो रहा है तो आपको भी लोगों के प्रति ज्यादा विनम्र होने की जरूरत है।

उपाय: मंगलवार को अनंत मूल की जड़ अपनी भुजा या गले में धारण करें।

तुला

मंगल देव का गोचर आपकी राशि से द्वितीय भाव में होगा। यह भाव धन भाव भी कहलाता है और इससे हम आपकी वाणी पर भी विचार करते हैं। इस गोचर के दौरान आपको पारिवारिक जीवन में कुछ परेशानियों का सामना करना पड़ सकता है। आप अपने परिवार के उसूलों से हटकर कोई काम कर सकते हैं जिसकी वजह से घर के बड़े लोग आप से नाराज़ होंगे। अगर आपको लगता है कि आपके द्वारा किया जाने वाला काम सही है तो आप अपने घरवालों से इसके बारे में बात करें और उन्हें समझाने की कोशिश करें। आर्थिक पक्ष को देखा जाए तो इस गोचर के दौरान आपको अच्छे फल मिल सकते हैं। आपको इस समय ऐसे स्रोतों से फायदा हो सकता है जिनके बारे में आपने सोचा भी नहीं होगा। वैवाहिक जीवन की बात की जाए तो जीवनसाथी से संबंध अच्छे रहेंगे। वहीं इस राशि के कुछ जातकों के विवाह में इस समय देरी होने के आसार हैं। यह ऐसा समय है जब आपको अपने बड़ों से सलाह मशवरा करने के बाद ही कोई बड़ा फैसला लेना चाहिए। अगर आप यह सोच के चलेंगे कि आप हर काम सही करते हैं तो यह आपकी ग़लतफहमी है क्योंकि ऐसा करके आप अपना नुकसान कर सकते हैं। और फिर नुकसान होने के बाद पछताने से कोई फायदा नहीं होगा।

उपाय: मंगलवार के दिन शिवलिंग पर गेहूँ एवं चना चढ़ाएँ।

अगर आप एस्ट्रोसेज की साइट पर जाना चाहते हैं तो यहाँ [क्लिक करें](#)



वृश्चिक

मंगल देव का गोचर आपकी राशि में यानि आपके लग्न भाव में होगा। इस भाव को तनु भाव भी कहा जाता है और इससे हम आपके स्वास्थ्य, शरीर और आत्मज्ञान के बारे में विचार करते हैं। मंगल के इस गोचर के दौरान आपके अंदर की रचनात्मकता बाहर आ सकती है। छात्र इस समय अपने स्कूल या कॉलेज में अच्छा प्रदर्शन कर पाएंगे। आपका आत्मविश्वास इस अवधि में बढ़ा रहेगा। हालांकि आपको इस समय में अपनी वाणी पर कंट्रोल रखने की जरूरत है। अगर आप अतिउत्साह में किसी को कुछ गलत बोल देते हैं तो आपका कोई क्रीबी मित्र या रिश्तेदार आपसे दूर हो सकता है। कार्य क्षेत्र में अपनी समझदारी का परिचय देकर आप कई विवादों से इस समय दूर हो जाएंगे। व्यवसाय करने वाले लोगों को अपने करीबियों को अपने व्यवसाय में ज्यादा दखल अंदाज़ी नहीं करने देनी चाहिए। स्वास्थ्य को लेकर आप सावधान रहेंगे और इस अवधि में शारीरिक रूप से खुद को मजबूत करने की तरफ कदम बढ़ाएंगे। आपको सलाह दी जाती है कि अपने अटके हुए कामों को वक्त रहते पूरा कर लें नहीं तो भविष्य में आपके कई काम इसकी वजह से अधर में अटक सकते हैं। समय की कीमत को पहचानने की कोशिश करें।

उपाय: तांबा एवं लाल पुष्प का दान करना आपके लिए शुभ होगा।



धनु

मंगल का यह गोचर आपकी राशि से द्वादश भाव में होने जा रहा है। इस गोचर के दौरान आप मानसिक उलझनों का सामना कर सकते हैं। यह उलझनें आपके कई कामों को अटका सकती हैं। इस अवधि में आपको कोई सही तरीके से मार्गदर्शन करने वाला नहीं मिलेगा जिसके चलते जीवन में चुनौतियाँ आएँगी। इस समय आपको दूसरों से ज्यादा खुद पर भरोसा रखने की जरूरत है। परिवार के बीच आप खुद को सहज स्थिति में नहीं पाएंगे और इसकी वजह होगा आपका सही तरीके से अपनी बातों को लोगों के सामने न रख पाना। वैवाहिक जीवन में जीवनसाथी आपके सहयोग के लिए खड़ा नजर आएगा। सेहत में गिरावट देखने को मिल सकती है, हालांकि जैसे ही आप मानसिक रूप से शांत होंगे अपने शारीरिक स्वास्थ्य को दुरुस्त करने लग जाएंगे। इस राशि के शादीशुदा जातकों को अपने बच्चों पर इस समय ध्यान देने की जरूरत है। अपने मन को निर्मल बनाने के लिए इस दौरान आप किसी तीर्थ यात्रा पर जाने का प्लान बना सकते हैं। इस राशि के बीच जो दूर की यात्रा करना चाहते हैं उनके लिए यह गोचर शुभफलदायी रहेगा। कुल मिलाकर देखा जाए तो इस गोचर के दौरान आपको मिलेजुले फल मिलने के आसार हैं।



उपाय: मंगल बीज मंत्र का जाप करें।

AstroSage

ज्योतिषी से प्रश्न पूछें

के.पी. सिस्टम नाड़ी ज्योतिष
लाल किताब ताजिक ज्योतिष

अभी खरीदें »

संपर्क करें +91-7827224358, +91-9354263856 Email: sales@ojassoft.com www.astrosage.com

मकर

मंगल देव आपकी राशि से एकादश भाव में गोचर करने जा रहे हैं। एकादश भाव को लाभ भाव भी कहा जाता है। मंगल का यह गोचर आपके लिए कई मायनों में अच्छा रहेगा। इस समय नई प्रोपर्टी खरीदना आपके लिए अच्छा रहेगा। इससे आने वाले वक्त में आपको फायदा मिल सकता है। इस गोचर के दौरान भले ही बाज़ार में मंदी रहे लेकिन आपको फायदा ज़रुर होगा। इस राशि के जो लोग लंबे समय से अपना घर खरीदने का प्लान बना रहे थे उनका यह प्लान इस समय पूरा हो सकता है। कार्यक्षेत्र में भी आप अच्छा प्रदर्शन कर पाएंगे और अपने सहकर्मियों और बॉस के साथ अच्छे संबंध बनाएंगे। आपके विचारों में इस समय सकारात्मकता देखी जा सकती है जिसके बल पर आप सामाजिक स्तर पर लोगों को अपनी ओर आकर्षित करेंगे। स्वास्थ्य के प्रति लापरवा रवैया आपको कई परेशानियों में इस समय डाल सकता है। इसलिए आपको अपनी सेहत के प्रति जागरूक होने की जरूरत है। स्वस्थ शरीर के दम पर ही आप जीवन में सफलताएँ अर्जित करने में सफल हो सकते हैं। वैवाहिक जीवन अच्छा रहेगा इस समय आपका जीवनसाथी आपकी बातों को बिना कहे ही समझ जाएगा। अगर आप अपने जीवनसाथी से दूर रहते हैं तो इस दौरान उनसे मिलने जा सकते हैं।



उपाय: रोजाना चाँदी के बर्तनों का प्रयोग करें।

जानें कब होणा आपका भाण्योदय!

महा कुंडली

कीमत: ₹4105 @ मात्र ₹650

अभी खरीदें >

महा कुंडली 100+पृष्ठ

कुंभ

मंगल देव आपकी राशि से दशम भाव में संचरण करेंगे। दशम भाव को कर्म भाव भी कहा जाता है। इस भाव में मंगल के गोचर के दौरान आपके आत्मविश्वास में वृद्धि होगी और हर क्षेत्र में आप बेहतर प्रदर्शन करने की कोशिश करेंगे। वर्तमान में काम करके आप अपने भविष्य को भी बेहतर बनाएँगे। हालांकि बीते कल में किये गये कुछ गलत कामों के कारण आप परेशान भी हो सकते हैं, लेकिन जो बीत गया आपको उसपर ज्यादा विचार नहीं करना चाहिए। पारिवारिक जीवन की बात की जाए तो आप अपने घर के छोटे सदस्यों को खुश करने के लिए इस समय उन्हें कहीं घुमाने ले जा सकते हैं। आपका कोई रिश्तेदार आर्थिक मामलों में आपकी मदद कर सकता है। कारोबारी लोगों ने जो योजनाएं अतीत में लागू की थीं उनका फायदा उनको इस दौरान मिल सकता है। इन योजनाओं के लिए आपकी तारीफ भी हो सकती है। इस राशि के जातकों को अपने मानसिक स्वास्थ्य पर इस दौरान विशेष ध्यान देने की जरूरत है। जीवन में आने वाली समस्याओं को खुद हल करना आपको सीखना चाहिए। क्योंकि अगर आप दूसरों पर निर्भर रहेंगे तो जीवन में परेशानियां आती ही रहेंगी। छात्रों को पढ़ाई के साथ-साथ खेल कूद में भी रुचि लेने की जरूरत है।

उपाय: गरीबों और ज़रूरतमंदों को अनार का दान करें।

अगर आप एस्ट्रोसेज की साइट पर जाना चाहते हैं तो यहाँ [क्लिक करें](#)



मीन

मंगल का गोचर आपकी राशि से नवम भाव में होगा। यह भाव धर्म भाव भी कहलाता है। यह समय आपकी बुद्धिमत्ता को चुनौती देने वाला होगा। जीवन को व्यवस्थित करने के लिए और भविष्य को सुरक्षित करने के लिए इस वक्त में आपको कुछ महत्वपूर्ण निर्णय लेने पड़ सकते हैं। अगर आपको लगता है कि हर फैसले को आप अपने दम पर नहीं ले सकते तो अपने जीवनसाथी या माता-पिता का सहयोग ले सकते हैं। यह समय आपकी सेहत के लिहाज से भी थोड़ा नाजुक होगा इसलिए आपको इस दौरान नियमित व्यायाम और संतुलित आहार करना चाहिए। वैवाहिक जीवन के लिए यह समय सामान्य रहने की उम्मीद है। अगर आप अपने जीवनसाथी को कहीं घुमाने ले जाएं तो आपके संबंधों में तरोताजगी आ सकती है। सामाजिक जीवन में आप अच्छा प्रदर्शन करेंगे। आपके दोस्त इस समय में आपके मददगार साक्षित होंगे और आपकी कई परेशानियों को दूर कर देंगे। धर्म के प्रति आपका द्वुकाव इस समय बढ़ सकता है और आप धार्मिक पुस्तकों का इस दौरान अध्ययन कर सकते हैं। कुल मिलाकर देखा जाए तो मंगल का यह गोचर आपके लिए अच्छा रहने वाला है।



उपाय: मंगलवार के दिन लाल मसूर का दान करें।

Pioneer in VR
India's First VR Gaming Company

[Visit Now >](#)

OSS
VR STUDIOS

शेयर बाजार में तेजी-मंदी के ज्योतिषीय कारण



एस्ट्रोगुरु
मृगांक

शेयर बाजार में तेजी मंदी पर ग्रहों का विशेष प्रभाव?

शेयर बाजार का नाम आज के समय में लगभग हर कोई जानता है और काफी लोग इसमें निवेश करके अच्छा फायदा उठाते हैं। आज इस लेख में हम आपको बताने जा रहे हैं कि ऐसे क्या ज्योतिषीय तथ्य एवं कारण हैं जिनकी वजह से शेयर बाजार में तेजी या मंदी का दौर आता है।

सबसे पहले जानना आवश्यक है कि कौन सा ग्रह किस वस्तु को नियंत्रित करता है। इसके लिए आप निम्नलिखित विवरण को पढ़कर जानकारी प्राप्त कर सकते हैं:

सूर्य ग्रह

गुड़, सोना, चौपाये, सरसों, खांड, भूसा, लकड़ी, चना, मुनक्का, सरसों, हल्दी, दवाइयाँ, रंगीन वस्त्र, सरकारी ऋण पत्र, वृक्ष तथा रस वाली वस्तुएँ।

चंद्र ग्रह

कपास, चाँदी, सफेद रंग की वस्तुएँ, पारा, दूध एवं दूध से बने पदार्थ, मछली, फल, फूल, रसदार पदार्थ, सोडा वाटर, शीशा, बर्फ और चावल।

मंगल ग्रह

ताँबा, सोना, लोहा एवं अन्य धातुएँ, मशीनरी, चौपाये, गुड़, धनिया, हल्दी, गन्ना, मुनक्का, किशमिश, लौंग, सुपारी, किराना, लाल मिर्च, चाय, शराब, छुहारा, विभिन्न प्रकार के शेयर, मसूर, मोठ तथा गेहूं।

बुध ग्रह

मूंगा, चाँदी, रेशम, रुई, शक्कर, फिरोजा, बाजरा, ज्वार, मटर, मूंग, अरहर, ग्वार, सौंफ, कपास, धी, काली खेसारी,

पीली सरसों, अलसी, मूँगफली, अरंड, झूठ, रेशम, पाट, टेक्सटाइल, कागज और तांबा।

बृहस्पति ग्रह

सोना, चांदी, जवाहरात, जस्ता, हरड़, टिन, पाट, तम्बाकू, खांड, गुड़, आलू, अदरक, प्याज, बैंकों के शेयर, रबड़, नकली सिल्क और नमक।

शुक्र ग्रह

रुई, चाँदी, श्रृंगार का सामान, सौंदर्य प्रसाधन, बारदाना, कपास, वस्त्र, हीरा, चीनी, रेशम, अरहर, सिल्क, सजावटी सामान, टेक्सटाइल शेयर, सोना तथा दवाएँ।

शनि ग्रह

सरसों, अलसी, तिल, कोयला, तेल, यव, ऊन, सीसा, नीलम, तिलहन, काली मिर्च, खनिज, बारदाना, लोहा, जस्ता, संगमरमर, रांगा, कोयले, तेल, गैस तथा पेट्रोल से संबंधित शेयर, कल पुर्जे, चमड़े की चीजें, काले रंग की वस्तुएँ, कोलतार, टीन, सीसा, वाहन तथा गेहूँ।

राहु

फ़ोन, तार, वायरलेस, टेलिफोन, एलुमिनियम, तथा बिजली का सामान।

जिस प्रकार उपरोक्त ग्रहों से संबंधित विशेष वस्तुएँ होती हैं, उसी प्रकार राशियां भी विशेष वस्तुओं का प्रतिनिधित्व करती हैं। तो आइए जानते हैं विभिन्न राशियों के द्वारा कौन-कौन सी वस्तुओं पर आधिपत्य किया गया है:

मेष राशि

घी, चावल, मिर्च, ऊँट, अच्छा, औषधि तथा वस्त्र। शेयर: ऑटोमोबाइल, फार्मास्यूटिकल, डायग्नोस्टिक सेंटर, तांबा, क्रूड ऑयल, हॉस्पिटल, इंफ्रास्ट्रक्चर, जिप्सम, आयरन और स्टील, मसाले, तंबाकू, कैपिटल गुड्स, सीमेंट, हेल्थ केयर, शास्त्र, बारूद तथा धातु।

वृषभ राशि

चावल, जौ, ऊनी वस्त्र, घोड़े, गाय, भैंस, तिल, धातुएँ, रत्न तथा हीरा। शेयर: फाइनेंस, बैंकिंग, पेंट, इन्वेस्टमेंट, पर्यटन, गारमेंट, खिलौने, मीडिया, हॉस्पिटिलिटी, हीरा, एफएमसीजी, होटल, मनोरंजन, ज्वेलरी, परफ्यूम, इंश्योरेंस, चांदी, एग्रीकल्चर, कन्फेक्शनरी, कॉम्प्यूटिक्स तथा चीनी।

मिथुन राशि

तुअर, बाजरा, लाख, शेयर, इत्र एवं सुगंधित द्रव्य, ज्वार, सोना, तेल तथा नमक। शेयर: पब्लिकेशन, मीडिया, एफएमसीजी, इंश्योरेंस, टेक्सटाइल, पेपर, टेलीकम्युनिकेशन, एक्सपोर्ट, आईटी, मोबाइल, इंटरनेट, कॉटन, कृषि उत्पाद तथा अनाज।

कर्क राशि

गेहूँ, चावल, खांड, चीनी, गुड़, सुण्ठी, सरसों, हींग, कपास, रेशमी वस्त्र तथा सेलडी। शेयर: पेट्रोलियम, दूध और दूध से बने डेयरी पदार्थ, तेल एवं गैस, चांदी, चावल, अल्मुनियम, मिनरल वाटर, जहाजरानी, कोल्ड ड्रिंक, पेपरमिंट तथा अल्कोहल।

सिंह राशि

गुड़, उड़द, मसूर, मूंग, तेल, कम्बल, अलसी, चना, तिल, ऊन, घी तथा मूंगा। शेयर: सोना, बारूद, शास्त्र, मीडिया, बिजली, तांबा, कांसा, खतरनाक हथियार, परमाणु ऊर्जा, सल्फर, गेहूं और ग्रेफाइट।

कन्या राशि

लहसुन, चावल, कपूर, अगर तगर, पन्ना, चन्दन, सोना, देवदारु तथा कंदमूल। शेयर: टेलीकम्युनिकेशन, इंश्योरेंस, मोबाइल, बैंकिंग, एफएमसीजी, मीडिया, टेक्सटाइल, फाइनेंस, पेपर, इंटरनेट, कृषि उत्पाद, कपास, एक्सपोर्ट तथा एविएशन।

तुला राशि

सरसों, मिर्च, राई, सुपारी, जौ, तेल, गेहूं, मोठ, खजूर, चावल, घोड़ा तथा मूंग। शेयर: इन्वेस्टमेंट, चाँदी, तांबा, खिलौने, बैंकिंग, इंश्योरेंस, सुगंधित पदार्थ, सौंदर्य प्रसाधन, हीरा, कृषि, मनोरंजन और टूरिज्म।

वृश्चिक राशि

मोठ, लाख, सभी प्रकार के अन्न, गुड़, चावल, गुगल, पारा तथा हींग। शेयर: धातु, तांबा, डायग्रोस्टिक सेंटर, ऑटोमोबाइल, आरयन एवं स्टील, फार्मास्यूटिकल, रेडियम, परमाणु ऊर्जा, शस्त्र, तंबाकू, यूरेनियम, चिकित्सा उपकरण, इंफ्रास्ट्रक्चर, हेल्थ केयर, सीमेंट और जिप्सम।

धनु राशि

कंदमूल, नमक, घी, अनाज, चावल, सेंधा नमक, सुरमा, घी तथा कपास। शेयर: बैंकिंग, एफएमसीजी, फाइनेंस, सरसों, गेहूं, इंश्योरेंस, सोना, कांसा, खाद्य तेल, जहाजरानी,

गारमेंट्स, टैक्सटाइल और अनाज।

मकर राशि

खजूर, अखरोट, इलाइची, चिरोंजी, घी, पिघली, जायफल, सुपारी तथा मूंग। शेयर: चमड़ा, धातु, कोयला, टीन, तेल एवं गैस, आयरन एंड स्टील, कृषि, पशु, खदान, फुटवियर, रियलिटी, सीमेंट, इंफ्रास्ट्रक्चर, जिप्सम और लाइमस्टोन।

कुंभ राशि

जावित्री, नशे से सम्बंधित वस्तुएँ, देवदारु, धातुएं, तेल, भैंस, वाहन तथा नीलम। शेयर: यूरेनियम, एविएशन, चमड़ा, कृषि, कोल्ड ड्रिंक, सीमेंट, जिप्सम, तेल एवं गैस, पशु, धातु, रियलिटी, अल्कोहल, टेलीकम्युनिकेशन, चूना पत्थर, इंटरनेट, इंफ्रास्ट्रक्चर, कोयला, खदान, टीन और परमाणु ऊर्जा।

मीन राशि

शक्कर, खांड, किराना, गुड़, घी, सुपारी, नारियल, तथा चावल। शेयर: फाइनेंस, बैंकिंग, इंश्योरेंस, एफएमसीजी, कोल्ड ड्रिंक, मिनरल वाटर, सरसों, गेहूं, अनाज, टेक्सटाइल, खाद्य तेल, अल्कोहल, फार्मास्यूटिकल, तेल एवं गैस, सोना, कांसा, गारमेंट और मीथेनॉल।

तेजी मंदी पर ग्रहों का विशेष प्रभाव

ऊपर दिए हुए ग्रहों और राशियों के आधार पर कौन सी वस्तु किस ग्रह और राशि के अंतर्गत आती है यह हम जान चुके हैं। अब तेजी मंदी का ज्ञान जानने के लिए हमें कुछ विशेष बातों का ध्यान रखना होगा।

- जब सूर्य गोचर के दौरान वस्तु की राशि से तीसरे, छठे, दसवें और ग्यारहवें स्थान पर हो तो मंदी होती है और पहले, दूसरे, चौथे, पांचवें, सातवें, आठवें, नवें स्थान पर होने से तेजी आती है।
- बृहस्पति वृद्धि कारक ग्रह है इसलिए बृहस्पति का गोचर काफी मायने रखता है। जब भी बृहस्पति का गोचर वस्तु की राशि से पहले, तीसरे, छठे, आठवें और बारहवें स्थान पर होता है तो उस गोचर के दौरान उस राशि के दामों में वृद्धि होती है अर्थात् तेजी आती है। इसके विपरीत बृहस्पति का गोचर वस्तु की राशि से दूसरे, चौथे, पांचवें, सातवें, नौवें, दसवें, और ग्यारहवें स्थान पर होता है, तो उस दौरान उस वस्तु के दामों में कमी अर्थात् मंदी आती है।
- वस्तु की राशि से शनि गोचर में तीसरे, छठे, दसवें और ग्यारहवें स्थान पर हो तो मंदी होती है और पहले, दूसरे, चौथे, पांचवें, सातवें, आठवें, नवें स्थान पर होने से तेजी आती है।
- इसी क्रम में बुध का गोचर पहले, तीसरे, चौथे, छठे, आठवें, नवें, और बारहवें स्थान पर होने से वस्तु के दामों में तेजी आती है तथा शेष भावों अर्थात् दूसरे, पांचवें, सातवें, दसवें और ग्यारहवें भाव पर होने से वस्तु के दामों में मंदी आती है।
- पूर्ण चंद्रमा यदि वस्तु की राशि से पहले, तीसरे, छठे, आठवें और बारहवें स्थान पर होता है तो तेजी आती है तथा वस्तु की राशि से दूसरे, चौथे, पांचवें, सातवें, नौवें, दसवें और ग्यारहवें स्थान पर होता है, तो उस दौरान मंदी आती है।
- वस्तु की राशि से मंगल गोचर में तीसरे, छठे, दसवें और ग्यारहवें स्थान पर हो तो मंदी होती है और पहले, दूसरे, चौथे, पांचवें, सातवें, आठवें, नवें स्थान पर होने से तेजी आती है।
- यदि शुक्र गोचर की स्थिति पर नजर डाली जाए तो वस्तु की राशि से शुक्र के पहले, दूसरे, तीसरे, चौथे, पांचवें, नवें, दसवें, ग्यारहवें और बारहवें भाव में शुक्र का गोचर मंदी लाता है और इसके विपरीत छठे एवं सातवें स्थान पर शुक्र तेजी लेकर आता है।
- वस्तु की राशि से राहु गोचर में तीसरे, छठे, दसवें और ग्यारहवें स्थान पर हो तो मंदी होती है और पहले, दूसरे, चौथे, पांचवें, सातवें, आठवें, नवें स्थान पर होने से तेजी आती है।
- इसी क्रम में केतु के गोचर के दौरान वस्तु की राशि से तीसरे, छठे, दसवें और ग्यारहवें स्थान पर होना मंदी का कारण बनता है और पहले, दूसरे, चौथे, पांचवें, सातवें, आठवें, नवें स्थान पर होने से तेजी आती है।



ग्रहों की प्रकृति के अनुसार तेजी मंदी का ज्ञान

ग्रहों के गोचर के दौरान कुछ विशेष बातों का भी ध्यान रखा जाता है जैसे कि दो प्रकार के ग्रह होते हैं एक क्रूर ग्रह है और दूसरे स्वामी ग्रह। क्रूर ग्रहों में सूर्य, मंगल, शनि, राहु और केतु आते हैं जबकि सौम्य ग्रहों अंतर्गत बृहस्पति, बुध, शुक्र और चंद्रमा आते हैं।

- क्रूर ग्रह जब गोचरवश किसी सौम्य ग्रह की राशि पर आता है तब 12 अंश से 20 अंश तक मंदी करता है।
- इसके अतिरिक्त जब क्रूर ग्रह अपने मित्र सौम्य ग्रह की राशि पर आता है तब मंदी का कारण बनता है।
- क्रूर ग्रह जब किसी सम राशि (वृषभ, कर्क, कन्या, वृश्चिक, मकर और मीन राशि) पर गोचर करता है तब 12 अंश से 19-20 अंश तक की स्थिति के दौरान मंदी लाता है और इसके बाद तेजी का दौर शुरू होता है।
- वहीं इसके विपरीत जब कोई क्रूर ग्रह विषम राशि (मेष, मिथुन, सिंह, तुला, धनु और कुंभ राशि) पर गोचर करता है तब 12 अंश से 19-20 अंश तक की स्थिति के दौरान तेजी लेकर आता है और उसके बाद मंदी करवाता है।

शेयर बाजार में तेजी को जानने के कुछ अन्य तरीके

उपरोक्त स्थितियों के अलावा कुछ अन्य महत्वपूर्ण स्थितियाँ भी शेयर बाजार में तेजी लेकर आती हैं। ये स्थितियाँ निम्नलिखित हैं:



- गोचर के दौरान बुध ग्रह जब भी वक्री होता है तो तेजी की ओर इशारा करता है।
- इसी प्रकार जब गोचर में शनि वक्री होता है तो तेजी आने की संभावना बहुत बढ़ जाती है।
- यदि अमावस्या सोमवार और गुरुवार को पड़े तो मंदी आती है और यदि मंगलवार और शनिवार को आए तो तेजी लेकर आती है।
- जिस दिन संक्रांति होती है उस समय की कुंडली बनाने

- पर यदि सूर्य ग्रह शुभ ग्रहों से युक्त या दृष्ट होता है तो सूर्य से संबंधित राशि के प्रभाव में आने वाली वस्तुओं के बाजार भाव बढ़ जाते हैं।
- इसके विपरीत अशुभ ग्रहों से संबंध होने पर भाव घट जाते हैं।
- इसी क्रम में अमावस्या या पूर्णिमा को चंद्रमा शुभ ग्रहों से युक्त या दृष्ट होता है तो चंद्र के नक्षत्रों के अधीन वस्तुओं के भाव बढ़ जाते हैं।
- इसके विपरीत यदि चंद्रमा अशुभ ग्रहों से युक्त हो अथवा दृष्ट हो तो वस्तुओं के भाव घट जाते हैं।
- ऐन्द्र, व्यतिपात और वैधृति योग जिस दिन होता है उस दिन भी शेयर बाजार में अच्छी तेजी देखने को मिलती है।
- सूर्य, चंद्र एवं बुध ग्रहों का जब जब भी क्रूर अथवा सौम्य ग्रहों से वेध होगा तो उसी अनुसार शेयर बाजार में तेजी तथा मंदी देखने को मिलती है।
- संक्रांति जिस दिन हो, उससे एक दिन पहले जो भाव रहा हो और यदि संक्रांति के दिन वह भाव मंदा हो जाए तो लगभग एक महीने तक तेजी रहती है।
- इसके विपरीत यदि एक दिन पहले वाले भाव से संक्रांति वाले दिन तेजी रहे तो फिर आने वाले एक महीने तक मंदी रहने की संभावना होती है।

इनके अतिरिक्त भी अन्य कई नियम हैं जो शेयर बाजार तथा व्यापार में तेजी मंदी के कारण बनते हैं। लेकिन उपरोक्त बातों को समझकर आप सामान्य प्रवृत्ति तो जान ही सकते हैं।

अगर आप एस्ट्रोसेज की साइट पर जाना चाहते हैं तो यहाँ [क्लिक करें](#)

व्रत रखते समय इन 10 बातों का अवश्य रखें ध्यान



हिंदू धर्म में व्रत का महत्व

व्रत एक धार्मिक विचार है जिसमें व्यक्ति किसी चीज़ को लेकर अपने मन में संकल्प धारण करता है। व्रत को हम उपवास के नाम से भी जानते हैं। हिन्दू धार्मिक त्योहारों में व्रत धारण करने की परंपरा होती है। ऐसा कहा जाता है कि उपवास रखने से व्यक्ति को पुण्य की प्राप्ति होती है। परंतु व्रत को धारण करने के कुछ विशेष नियम होते हैं जिनका आवश्यक रूप से पालन किया जाना चाहिए। यदि व्रत को पूर्ण विधि-विधान से नहीं किया जाता है तो व्रती को उसका फल नहीं मिलता है। साथ ही वह पाप का भागी भी बनता है।

उपवास का महत्व

हिन्दू धर्म में व्रत का विशेष महत्व है। इसे धारण करने वाला व्यक्ति मानसिक और शारीरिक रूप से शुद्ध हो जाता

है। वेद-पुराणों में व्रत को धर्म का साधन माना गया है। व्रत के माध्यम से व्यक्ति ईश्वर प्रिय हो जाता है। यदि सच्चे मन से ईश्वर की आराधना में व्रत का पालन नियम से किया जाए तो व्यक्ति का पुरुषार्थ सिद्ध होता है। उसके अंदर सात्त्विक गुणों का विकास होता है। धार्मिक, आध्यात्मिक महत्व के साथ-साथ व्रत का वैज्ञानिक महत्व भी होता है।

व्रत का धार्मिक महत्व

वैदिक शास्त्रों में उपवास की महिमा का वर्णन किया गया है। इसमें व्रत को मानसिक शान्ति, सुख-समृद्धि एवं मनोकामना पूर्ति का साधन माना गया है। इसके धार्मिक महत्व को देखते संसार के समस्त धर्मों ने किसी न किसी रूप में व्रत को अपनाया है। उपवास सभी प्रकार के कष्टों और पापों से मुक्ति कराता है। सनातन धर्म के अनुसार व्रत

परमात्मा के प्रति भक्ति, श्रद्धा और विश्वास के परिचायक है। इसलिए विभिन्न धार्मिक पर्वों में व्रत का सर्वाधिक महत्व होता है।

व्रत का वैज्ञानिक महत्व

वैज्ञानिक दृष्टि से भी व्रत के महत्व को कम नहीं आंका जा सकता है। चिकित्सा शास्त्र के अनुसार व्रत धारण करने वाला व्यक्ति शारीरिक रूप से स्वस्थ रहता है। दरअसल, उपवास के दिन व्रत रखने वाले व्यक्ति के पाचन तंत्र को आराम मिलता है, जिससे उसकी पाचन क्रिया मजबूत बनी रहती है। इसके साथ ही शरीर में फैट व कोलेस्ट्रॉल की मात्रा घटती है और मानसिक रूप से व्यक्ति स्वस्थ रहता है।

व्रत में इन 10 बातों का रखें ध्यान

- व्रत के दिन अशुद्ध कपड़े न पहनें - व्रत के दिन शौच आदि से निवृत होकर व्यक्ति को स्नान करना चाहिए और उसके बाद साफ़-स्वच्छ कपड़े पहनना चाहिए।
- देव पूजा करें - व्रत रखने वाले जातक को उस विशेष दिन से संबंध रखने वाले देवी/देवताओं की आराधना अवश्य ही करनी चाहिए। इससे उन्हें दैवीय आशीर्वाद प्राप्त होता है।
- दिन में न सोयें - व्रत के दिन सोना नहीं चाहिए। इससे व्रती का व्रत रखने का उद्देश्य पूर्ण नहीं होता है।
- व्रत के दौरान बार-बार खान-पान न करें - व्रत रखने वाले जातकों का संकल्प यही रहना चाहिए कि वे व्रत के दौरान न खाएं, विशेषकर अन्न का त्याग करें। फलाहार ले सकते हैं परंतु बार-बार फलाहार या पानी का सेवन न करें।
- झूठ न बोलें - व्रत वाले दिन सभी से सत्य वचन

बोलना चाहिए। झूठ बोलने से व्रत रखने वाले जातक को पुण्य की प्राप्ति नहीं होती है।

- चोरी न करें - चोरी करना पाप है। व्रत के दौरान यह पाप बिल्कुल भी नहीं करना चाहिए। इसके अलावा इस दिन किसी भी तरह का भ्रष्टाचार न करें।
- क्षमा की भावना रखें - यदि आपने व्रत रखा है और आपके सामने किसी व्यक्ति से ग़लती हो गई है और वह आपसे क्षमा चाहता है तो आपके हृदय में क्षमा की भावना होनी चाहिए।
- दान करें - व्रत वाले दिन व्रती को अपनी क्षमता के अनुसार दान करना चाहिए। परंतु ध्यान रहे, दान ज़रुरतमंद को ही करें।
- किसी की बुराई न करें - किसी की बुराई करना बेहद ग़लत बात है। खासकर व्रत वाले दिन इस बात का विशेष ध्यान रखें कि आपके द्वारा किसी की बेवजह निंदा न हो।
- उपवास समाप्त होने पर सात्त्विक भोजन करें - उपवास के दिन व्रत समाप्त होने पर सात्त्विक भोजन करना चाहिए। ध्यान रखें, उपवास के बाद अत्यधिक भोजन न करें।

अगर आप एस्ट्रोसेज की साइट पर जाना चाहते हैं तो यहाँ [क्लिक करें](#)



 AstroSage Kundli
Download App Now

 GET IT ON Google Play
 DOWNLOAD ON THE App Store

सितारों के आईने में दो बड़ी फिल्में



बॉक्स ऑफिस पर कैसा रहेगा 'मर्दानी-2'
का प्रदर्शन ?

रिलीज की तारीख: 13 दिसंबर 2019

रिलीज का समय: 9:00 बजे सुबह

जगह: मुंबई



मर्दानी 2 मूवी की प्रश्न कुंडली

नोट - यह गणना वैदिक और अंक ज्योतिष का संयुक्त फल है।

- अंक ज्योतिष के अनुसार मर्दानी 2 मूवी का भाग्यांक 3 है। हालांकि अंक ज्योतिष की गणना के आधार पर मूवी का भाग्यांक 1 है लेकिन मूवी के आगे लिखे नंबर 2 को 1 के साथ जोड़ दें तो भाग्यांक बनाता है 3।
- 3 नंबर को अंकज्योतिष में बृहस्पति का स्वामित्व प्राप्त है। वहीं वैदिक ज्योतिष में यह नंबर मिथुन राशि का है जिसका स्वामी ग्रह बुध है। इसका मतलब है कि बुध और गुरु ग्रह के साथ मिथुन राशि इस फिल्म की सफलता के लिये सबसे ज्यादा महत्वपूर्ण होंगे।

- उपरोक्त प्रश्न कुंडली में मिथुन राशि सप्तम भाव में है, इस घर में राहु और चंद्रमा भी उपस्थित हैं। ज्योतिष शास्त्र में चंद्रमा महिलाओं का प्रतिनिधित्व करता है वहीं राहु विचित्र स्थितियों और अमानवीय कार्यों को दर्शाता है। यह फिल्म एक लड़की (चंद्रमा) के कूर बलात्कार (राहु) पर केंद्रित है। इसका अर्थ है कि फिल्म की रिलीज की तारीख फिल्म के लिये अनुकूल है।
- बुध ग्रह जोकि मिथुन राशि का स्वामी है द्वादश भाव में मित्र ग्रह सूर्य के साथ स्थित है। द्वादश भाव में बुध वृश्चिक राशि में है, यह बुध ग्रह के लिये प्रतिकुल संकेत है। हालांकि यह अपने मित्र ग्रह सूर्य से समर्थन प्राप्त कर रहा है, इसलिये यह स्थिर स्थिति में रहेगा। फिल्म की सफलता के लिये यह अनुकूल स्थिति है।
- प्रश्न कुंडली के प्रथम भाव या लग्न भाव में भाग्य का स्वामी बृहस्पति विराजमान है। यहां बृहस्पति बहुत मजबूत स्थिति में है क्योंकि यह अपने ही राशि धनु में स्थित है। अपनी राशि में होने के कारण यह दिग बली अवस्था में है। इसलिये जिस उद्देश्य से निर्माताओं ने यह फिल्म बनायी है वह उद्देश्य पूरा होगा।
- ऊपर दी गई प्रश्न कुंडली में बृहस्पति और चंद्रमा एक दूसरे के केंद्र में हैं। इस स्थिति से एक और योग का निर्माण कहा जाता है जिसे 'गज-केसरी' योग कहते हैं। अर्थात् चंद्रमा (रानी मुखर्जी एक अभिनेत्री के तौर पर) अपने रॉबिन-हुड अवतार में लोगों को प्रभावित करेगा।
- **जरुरी नोट:** कुंडली में एक ध्यान देने वाली बात यह भी है कि शुक्र-चंद्रमा पहले और सातवें घर की धुरी में उपस्थित हैं। शुक्र-चंद्र की स्थिति से पता चलता है कि फिल्म में महिला वर्चस्व को प्रदर्शित किया जायेगा, यह पक्ष फिल्म की सफलता के लिये अच्छा है।
- **ज्योतिष के जानकारों के लिये:** - भाग्य स्वामी बृहस्पति धनु राशि में मजबूत अवस्था में स्थित है, बृहस्पति ग्रह बच्चों का प्रतिनिधित्व भई करता है। यह फिल्म बच्चों और कूर बलात्कार पर आधारित है। इसलिये इस फिल्म का नाम मर्दानी 2 फिल्म के कथानक के अनुसार बहुत अनुकूल है।
- कुल मिलाकर कहा जाए तो यह फिल्म दर्शकों द्वारा बहुत पसंद की जायेगी। खासकर महिला दर्शकों द्वारा।

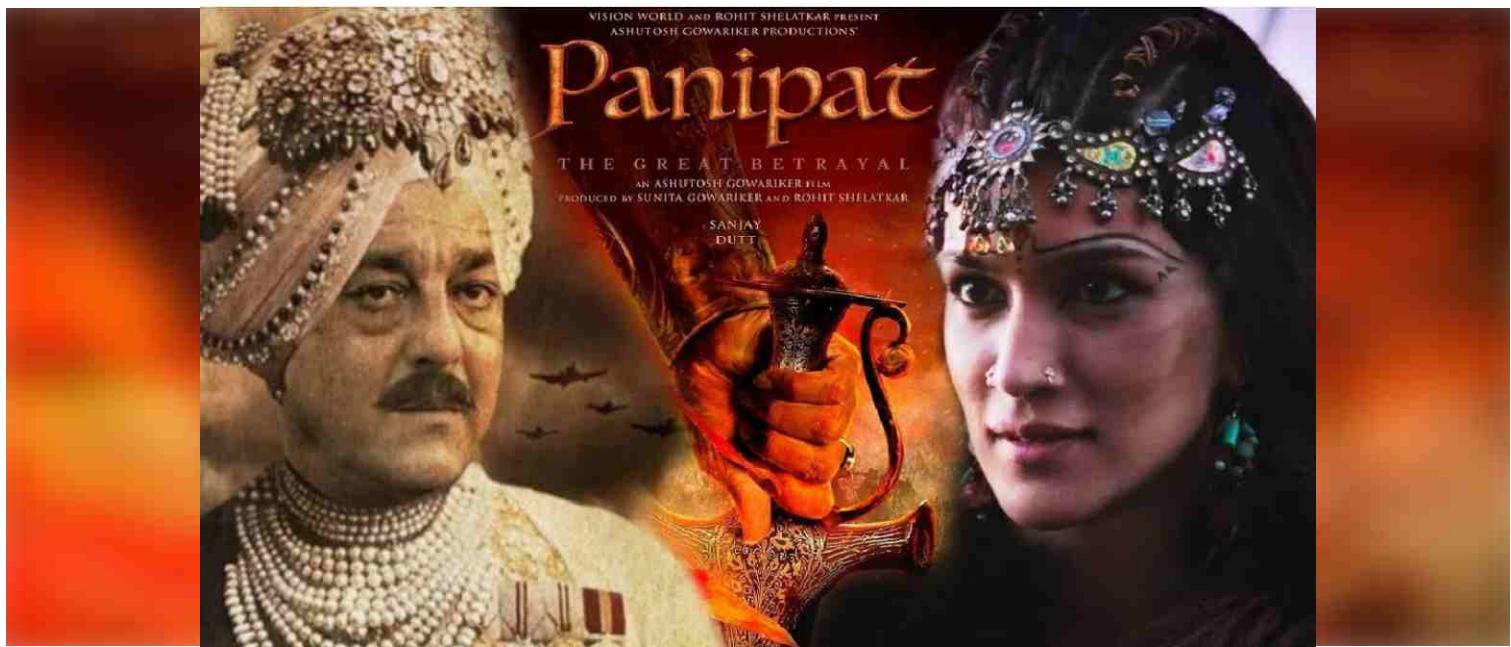


सच्चे प्यार की है तलाश

या इश्क में है कोई अड़चन?

लव रिपोर्ट

अभी देखें »

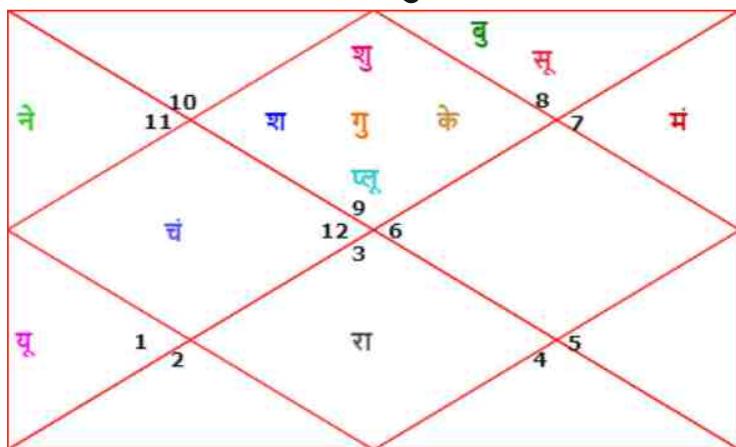


क्या 'पानीपत' करेगी बॉक्स ऑफिस फ़तेह ?

रिलीज की तारीख: 6 दिसंबर 2019

रिलीज का समय: 9:00 बजे सुबह

जगह: मुंबई



पानीपत मूर्खी की प्रश्न कुंडली

नोट - यह गणना वैदिक और अंक ज्योतिष का संयुक्त फल है।

- अंक ज्योतिष के अनुसार पानीपत मूर्खी का भाग्यांक 1 है।

- अंक ज्योतिष में भाग्यांक 1 का स्वामी ग्रह सूर्य है। वहीं वैदिक ज्योतिष में यह मेष राशि का अंक है जिसका स्वामी ग्रह मंगल है। इसका अर्थ है कि सूर्य, मंगल ग्रह और मेष राशि को देखकर इस फिल्म के भविष्य के बारे में बताया जाएगा।
- ऊपर दी गई कुंडली में मेष राशि पांचवें घर में है, इस घर पर बृहस्पति और मंगल की दृष्टि पड़ रही है। बृहस्पति सबसे बड़ा ग्रह है इसकी दृष्टि से जीवन में मिलने वाले परिणामों में इजाफा होता है। मंगल जिसे योद्धा ग्रह के रूप में देखा जाता है, इसकी दृष्टि से आक्रामकता बढ़ती है और संघर्ष और युद्ध जैसे परिणाम इस ग्रह के कारण मिलते हैं। यह फिल्म मराठा और अफगान योद्धाओं के बीच हुए युद्धों पर आधारित है। इसलिये कहा जा सकता है कि जिस दिन यह मूर्खी रिलीज हो रही है वह तारीख फिल्म के लिये अच्छी है।
- मंगल ग्रह, मेष राशि का स्वामी है जोकि कुंडली के एकादश भाव में स्थित है। इस भाव को धन भाव भी कहा जाता है। वहीं एकादश भाव में स्थित मंगल ग्रह तुला राशि में स्थित है यह स्थिति अच्छी नहीं कही जा सकती। इस स्थिति की वजह से मंगल ग्रह कमजोर हो

- रहा है। इससे मूवी के रिलीज होने के बाद कमाई में फर्क पड़ सकता है।
- कुंडली में भाग्य स्वामी सूर्य द्वादश भाव में स्थित है, यह स्थिति सूर्य के लिये अनुकूल नहीं कही जा सकती। ज्योतिष शास्त्र में द्वादश भाव सूर्य के लिये मारन स्थान है और इसके कारण सूर्य के अच्छे फल फिल्म को प्राप्त नहीं होंगे। द्वादश भाव विदेशी व्यापार का भाव भी होता है इसलिये भारत से बाहर इस फिल्म को आर्थिक रूप से बहुत फायदा नहीं मिलेगा।
 - ऊपर दी गई कुंडली में सबसे मजबूत पक्ष बृहस्पति ग्रह का प्रथम यानि लग्न भाव में विराजमान होना है।
 - जरुरी नोट:** कुंडली में ध्यान देने वाली बात यह है कि चौथे भाव में दिग्बली चंद्रमा स्थित है। चंद्रमा चौथे घर में भावनाओं, हमारी पसंद, भड़कीलेपन और खुशी को दर्शाता है। इसलिये यह फिल्म दर्शकों के दिल को जरुर छुएगी। इसके साथ ही फिल्म में इस्तेमाल की गई
- तड़क-भड़क लोगों को पसंद आएगी।
- ज्योतिष के जानकारों के लिये:** - सूर्य भाग्य स्वामी है और मेष राशि पर मंगल का स्वामित्व है। यह दोनों ही ग्रह ज्योतिष शास्त्र में उग्र ग्रह माने जाते हैं। सूर्य और मंगल की युति युद्ध, संघर्ष, आक्रामकता की स्थिति पैदा करती है। इसलिये कहा जा सकता है कि फिल्म के कथानक के अनुसार फिल्म की रिलीज की तारीख सही है। सूर्य और मंगल दोनों ही क्रूर और उग्र ग्रह हैं इसलिये इस फिल्म में खलनायक की अब्दाली की भूमिका निभा रहे संजय दत्त इस फिल्म का मुख्य आकर्षण होंगे। संजय दत्त के काम को सराहा जाएगा और उनको अच्छी प्रतिक्रियाएं मिलेंगी।
 - कुल मिलाकर कहें तो यह मूवी सूपर-डूपर हिट तो साबित नहीं होगी लेकिन इसे एक बार देखा जा सकता है।

EUREKA



Innovation in Career Counselling:

CognIAstro™
Right Counselling, Bright Career

Know More

आस्था का मामला है ज्योतिषः इनामुल हक़



निर्देशक अनीस बज्मी की हाल में रिलीज हुई फिल्म पागलपंती में यूं तो सितारों की भरमार है, लेकिन इन तमाम बड़े सितारों के बीच जिस शख्स ने अपनी अदाकारी से लोगों का दिल जीता- वो हैं इनामुल हक। इस फिल्म में इनामुल ने नीरव मोदी के किरदार को जीने की कोशिश की है। एक्टर इनामुलहक ने एयरलिफ्ट, लखनऊ सेंट्रल, जॉली एलएलबी, नक्काश जैसी कई फिल्मों से बॉलीवुड में अपनी दमदार उपस्थिति दर्ज कराई है। इनामुल फिल्म पागलपंती को अपना मास सिनेमा डेब्यू मानते हैं। अपने स्ट्रगल को बेचकर नाम कमाने से इन्हें परहेज है। एनामुल अपनी 20-25 साल के स्ट्रगल को जंग कहते हैं। साल 2009 में इनकी पहली फिल्म फिराक आई। इनामुल का मानना है कि जंग जीतने के क्रम में उन्होंने अबतक कुछ किले फतह किए हैं, झंडे गाढ़ने अभी बाकी हैं।

यूपी के सहारनपुर में जन्मे इनामुल अपने दर्शकों से न सिर्फ प्यार करते हैं बल्कि उन्हें इंटलिजेंट भी बताते हैं।

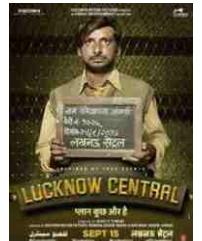


बकौल इनामुल, आज ऑडियंस सिनेमा लिटरेट हो चुकी है, उन्हें बेवकूफ नहीं बनाया जा सकता। यही वजह है कि इनामुल अपने किरदार में दोहराव नहीं चाहते ताकि अपनी ऑडियंस के सामने हर बार कुछ नया और मजेदार पेश कर सकें।

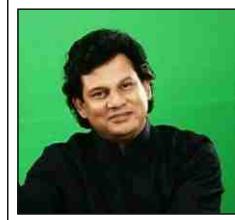
बॉलीवुड और ज्योतिष के गहरे कनेक्शन पर इनामुल करते हैं कि ये आस्था का मामला है। फिल्म पागलपंती भी ज्योतिष के इर्द-गिर्द घूमती है। शनि की साढ़ेसाती और उससे जुड़े भ्रम को मजाकिया अंदाज में परोसा गया है। ज्योतिष पर भरोसा है या नहीं पूछने पर इनामुल कहते हैं कि चीजें लकी होती हैं। जो ज्योतिष मानते हैं वो मानें दूसरों पर थोपें नहीं और जो नहीं मानते हैं वो ज्योतिष मानने वालों को कोसें नहीं। वो आगे कहते हैं कि बॉलीवुड ही नहीं हर जगह और हर काम में ईश्वर को याद किया जाना चाहिए।

अपने फैन्स को फिल्म से परे निजी तौर पर संदेश के तौर पर इनामुल वही कहते हैं जो उनकी माँ कहती हैं। 'नीयत साफ, मंजिल आसान'। इसी मूलमंत्र पर इनामुल खुद भी चलते हैं और अपने चाहने वालों से उम्मीद करते हैं कि वो भी इस मूलमंत्र को अपनाए। फिल्म पागलपंती के बाद इनामुल हक को आप आने वाली वेब सीरीज 'हंसमुख' में देख पाएंगे।

प्रस्तुति: ज्योति ठाकुर



भक्ति का एक मार्ग भजन



ओम
प्रकाश



भजनों का इतिहास वैदिक काल से आज तक अधम धारा के रूप में प्रवाहित हो रहा है। भजन के इतिहास में सामवेद के श्लोक और ऋचाओं का सामग्रण करना, वेदगान के माध्यम से अपने इष्ट का स्मरण करना भजनों के प्रारंभिक इतिहास में शामिल है।

भजनों के इतिहास में “नवधा भक्ति” का विशेष स्थान है। प्राचीन शास्त्रों में भक्ति के नौ प्रकार बताये गये हैं। जिसे “नवधा भक्ति” कहा जाता है।

1. श्रवण (परीक्षित) 2. कीर्तन (शुक्रदेव) 3. स्मरण (प्रह्लाद)

4. पादसेवन (लक्ष्मी) 5. अर्चन (पृथुराजा) 6. वंदन (अक्लूर)

7. दास्य (हनुमान) 8. सख्य (अर्जुन) 9. आत्मनिवेदन (राजाबलि)

1. श्रवण- ईश्वर की शक्ति, स्रोत, कथा, महत्व एवं लीला को परम् श्रद्धा सहित मन से निरंतर श्रवण करना।

2. कीर्तन- ईश्वर के चरित्र, नाम, पराक्रम, गुण का आनंद एवं उत्साह सहित भक्तिमय भजन कीर्तन करना।

3. स्मरण- अपने मन मस्तिष्क में निरंतर अनन्य भाव से परम् ब्रह्म का स्मरण करना एवं महात्म्य और शक्ति का स्मरण करके उस आरुढ़ होना।

4. पादसेवन- भगवान के श्री चरणों में आश्रय लेना और उन्हीं को अपना सर्वस्व समझाना।

5. अर्चन- मन, वचन और कर्म के द्वारा पवित्र सामग्री के साथ भगवान के चरणों में अर्पित करना।

6. वंदन- ईश्वर की मूर्ति अथवा ईश्वर के अंश रूप में व्याप्त भक्तिजन, संतजन, आचार, गुरुजन, माता-पिता इत्यादि को परम आदर सत्कार सहित पवित्र मन भाव से भक्ति करना।

7. दास्य- ईश्वर या भगवान को अपना स्वामी और अपने आप को ईश्वर का दास समझकर परम् श्रद्धा के साथ सेवा करना।

8. सख्य- भगवान को अपना परम सखा समझकर अपने आप का सर्वस्व समर्पित करक तथा सच्चे मन भाव से निवेदन करना।

सदा के लिए समर्पित करना, और अपनी कुछ भी स्वतंत्रता न रखना। यह भक्ति की सबसे बड़ी उत्तम स्थिति मानी गयी है।

भजनों का इतिहास

अनादि काल में गन्धर्व, देवताओं के यहां भावसंगीत गान करते थे। आधुनिक काल में भजनों को दो भाग में देखा गया।



1. निर्गुण भक्ति शाखा 2. सगुण भक्ति शाखा

1. निर्गुण भक्ति शाखा

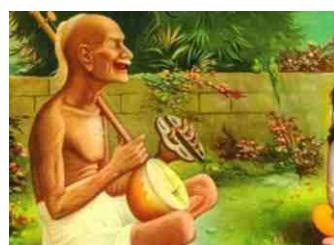
निर्गुण भक्ति शाखा के प्रवर्तक काशी में 15 वीं शताब्दी में जन्मे भारतीय रहस्यवादी संत कबीर दास थे। वे हिंदी साहित्य के भक्ति कालीन युग में ज्ञानाश्रयी- निर्गुण शाखा की काव्यधारा के प्रवर्तक थे। इनकी रचनाओं ने भक्ति आनंदोलन को गहरे स्तर पर प्रभावित किया। इनकी रचनाएं- शाखी, सबद, रमैनी।

2. सगुण भक्ति शाखा

भजनों के इतिहास में सगुण भक्ति शाखा में सूरदास, तुलसीदास, मीराबाई का नाम विशेष रूप से आता है।

• सूरदास

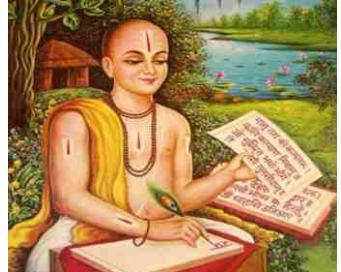
भजनों के इतिहास में सूरदास जी का प्रमुख स्थान है। 1583 में जन्म ब्रजभाषा के महाकवि



सूरदास का प्रमुख संग्रह श्री कृष्ण माधुरी, सूरसागर, सूरसूरावली, साहित्य लहरी, नलदमयंती, ब्याहलो हैं।

तुलसी दास

भजनों के इतिहास में सगुण भक्ति शाखा के महान कवि गोस्वामी तुलसीदास जी का विशेष स्थान है। 1589 उत्तर प्रदेश में जन्मे गोस्वामी तुलसीदास का मन राम भक्ति



से जागृत हुआ। तुलसीदास द्वारा रचित रचनाएं- राम चरित्र मानस, विनय पत्रिका, दोहावली, कवितावली, हनुमान चालीसा, वैराग्य, सन्दीपनी, जानकी मंगल इत्यादि हैं।

• मीराबाई

1498 के आसपास जन्मी, कृष्ण भक्ति शाखा की मीराबाई प्रमुख कवयित्री हुर्यीं। भक्ति के रंग में रंगकर मीराबाई ने स्फूट पदों की रचना की। संग्रह- बरसी का मायरा, गीत गोविंद ठीका, रामगोविंद, राग सोरठ इत्यादि।



इस प्रकार भजनों के इतिहास में वैदिक काल से लेकर आज तक अधम धारा के रूप में कभी न रुकने वाला निरंतर भक्ति काव्य धारा बहती रहेगी।

(लेखक जाने-माने भजन गायक हैं)

हस्त रेखा ज्ञान को समझें



हाथ की रेखा हमारे जीवन के उतार-चढ़ाव को दर्शाती हैं। इसलिए हस्तरेखा ज्ञान हमेशा से एक रोचक विषय रहा है। हस्तरेखा शास्त्र में व्यक्ति की हथेली को पढ़कर उसके स्वभाव, चरित्र, आयु और भूत व भविष्य की स्थितियों का पता लगाया जा सकता है। हथेली पर मौजूद रेखा कई आकार और प्रकार की होती हैं। ये रेखाएं सीधी, तिरछी और आपस में कटी-फटी होती हैं लेकिन इन सभी के अंदर गहरे अर्थ छुपे होते हैं। यदि आप हस्तरेखा विज्ञान की समझ रखते हैं तो इन रेखाओं की मदद से व्यक्ति के जीवन के बारे में काफी कुछ बता सकते हैं।

हाथ की हर रेखा कुछ कहती है और मनुष्य के जीवन के बारे में दर्शाती है। उदाहरण के लिए बृहस्पति से संबंधित उंगली सांसारिक जीवन में अन्य लोगों से आपके संवाद से

संबंधित होती है। वहीं हृदयरेखा शरीर में रक्तचाप नियंत्रण को प्रकट करती है।

हस्तरेखा शास्त्र का महत्व

हाथ की रेखा विभिन्न प्रकार की होती हैं और ये हमारे जीवन के भिन्न-भिन्न पहलुओं को दर्शाती है। इनमें गहरी रेखाएं उपलब्धि व सफलता और टूटी हुई रेखाएं बाधाओं का कारण बनती है। हस्तरेखा शास्त्र के अनुसार हर व्यक्ति की हथेली पर 7 मुख्य रेखा और 12 छोटी रेखाएं होती हैं।

हस्तरेखा शास्त्र में मुख्य रेखाएं

हृदयरेखा, मस्तिष्करेखा, जीवनरेखा, सूर्यरेखा, भाग्यरेखा, स्वास्थ्यरेखा और विवाहरेखा को मुख्य रेखा माना जाता है। इन रेखाओं की मदद से आप इन क्षेत्रों में होने

वाले उतार-चढ़ाव के बारे में जान सकते हैं।

जीवन रेखा: यह रेखा मनुष्य के जीवन की अवधि बताती है। जीवन रेखा तर्जनी (अंगूठे के पास वाली उंगली) और अंगूठे के मध्य स्थान से निकलकर अंगूठे के मूल को घेरती हुई मणिबंध (कलाई और हथेली का जोड़) पर समाप्त होती है। कुछ हाथों में यह रेखा बृहस्पति के निचले स्थान से भी निकलती है और कुछ लोगों की जीवन रेखा अंगूठे के मूल से निकल कर मणिबंध तक जाती है।

मस्तिष्क रेखा: यह रेखा जीवन रेखा के साथ अथवा उससे थोड़ी ऊपर से निकलती है। यह तर्जनी उंगली के नीचे से शुरू होकर हथेली के दूसरे छोर की ओर बाहर के किनारे की ओर बढ़ती है। मस्तिष्क रेखा शुरुआत में जीवन रेखा के साथ जुड़ी रहती है। हस्त रेखा शास्त्रियों के अनुसार यह रेखा मनुष्य के मन का प्रतिनिधित्व करती है। इसका अध्ययन कर हम व्यक्ति की बौद्धिकता और ज्ञान प्राप्ति की इच्छा के बारे में जान सकते हैं।

हृदय रेखा: यह हथेली की तीसरी मुख्य रेखा है। मूल रूप से इससे व्यक्ति की भावना को देखा जाता है। हृदय रेखा सामान्यतः बुध और सकारात्मक मंगल के मध्य से निकलती है। वर्तमान में हृदय रेखा से व्यक्ति के स्वभाव, चरित्र और व्यवहार को देखने की परंपरा है।

भाग्य रेखा: इस रेखा का उद्धाव हथेली में कहीं से भी हो सकता है सामान्यतः। यह रेखा मणिबंध से निकलती है लेकिन इसका समाप्ति का स्थान मध्यमा उंगली के नीचे होता है। कुछ हाथों में भाग्य रेखा का आरंभ मणिबंध के पास से होता है जबकि कुछ हाथों में चंद्रमा के क्षेत्र से होता है। सीधी और साफ दिखने वाली रेखा अच्छे भाग्य को

दर्शाती है जबकि हाथ में भाग्य रेखा का टूटा-फूटा होना संघर्ष और नीरस जीवन का सूचक होती है।

स्वास्थ्य रेखा: मणिबंध या जीवन रेखा से बुध क्षेत्र की ओर जाने वाली रेखा को स्वास्थ्य रेखा कहा जाता है। यह रेखा सभी हाथों में नहीं पाई जाती है। सामान्यतः लंबी हथेलियों में स्वास्थ्य रेखा उपलब्ध होने की संभावना ज्यादा होती है।

सूर्य रेखा: भाग्य रेखा के बाद सूर्य रेखा सबसे प्रसिद्ध है। क्योंकि यह रेखा कई दृष्टियों से महत्वपूर्ण है। सूर्य का क्षेत्र अनामिका उंगली के नीचे होता है। सूर्य रेखा यहाँ से आरंभ होकर नीचे जाती है। यह एक दुर्लभ रेखा है जो कम लोगों के हाथों में ही दिखती है।

विवाह रेखा: कनिष्ठिका उंगली के नीचे, हृदय रेखा के ऊपर और बुध पर्वत पर हथेली के बाहरी ओर से आने वाली रेखा को विवाह रेखा कहा जाता है। किसी व्यक्ति के हाथ में विवाह रेखा एक या एक से ज्यादा भी हो सकती है। इस रेखा को लेकर युवक-युवतियों में काफी उत्साह रहता है। लव मैरिज या ऑरेंज मैरिज आदि बात की जानकारी विवाह रेखा देखकर पता की जा सकती है।



राशिफल, दिसंबर 2019

मेष राशि

सारांश :- ये देखा है कि आप अपने पुरुषार्थ से अपनी उन्नति करना चाहते हैं। जिस कारण आपके साहस और पराक्रम के बल पर आपको किसी भी कार्य को करने से अच्छी सफलता प्राप्त होने की संभावना है। आप एक जिम्मेदार व्यक्ति होते हैं और किसी भी कार्य को जिम्मेदारी पूर्वक करने की इच्छा रखते हैं, जिसमें आपको इस माह कामयाबी अच्छी प्राप्त हो सकती है। आप किसी भी परिस्थिति में हिम्मत हारने वाले नहीं होते हैं। इसलिए आप अपनी मंज़िल प्राप्त करने में सफल हो सकते हैं...

विस्तार से पढ़ने के लिए क्लिक करें - मेष राशि

वृष राशि

सारांश :- इस माह में सोचने और समझने की क्षमताओं पर बुरा असर पड़ सकता है। किसी भी कार्य को आत्मविश्वास से करने में संदेह उत्पन्न होने की संभावना बन सकती है। मानसिक अशांति तथा तनावपूर्ण स्थिति में देखने को मिल सकती हैं। जिसके कारण कामकाज में व्यवधान उत्पन्न होने की संभावना बन सकती है। ऐसे में सोची समझी रणनीति के तहत किसी भी कार्य को करना आपके लिए लाभदायक हो सकता है। धन अचल संपत्ति प्राप्ति में व्यवधान उत्पन्न होने की संभावना बन रही है। तथा आपके सगे संबंधियों से संबंध खराब हो सकते हैं। अपने ही आपको नुकसान पहुंचाने की कोशिश कर सकते हैं।

विस्तार से पढ़ने के लिए क्लिक करें - वृष राशि



मिथुन राशि

सारांश :- आपकी सोचने और समझने की क्षमता प्रबल होती है। परंतु किसी अन्य व्यक्ति के सलाह पर कार्य करने से आपको नुकसान उठाना पड़ सकता है। आप स्वतः निर्णय लेने में सफल होने वाले व्यक्ति होते हैं। इसलिए आप स्वयं के निर्णय से किसी भी कार्य को करने की कोशिश करेंगे तो बेहतर रहेगा, क्योंकि इसमें आपको कामयाबी अच्छी मिल सकेगी। आपकी बुद्धि और वाणी प्रखर होती है और आप एक अच्छे प्रवक्ता होते हैं। आपकी पकड़ समाज में बहुत अच्छी होती है,



विस्तार से पढ़ने के लिए क्लिक करें - मिथुन राशि



कर्क राशि

सारांश :- आप यूँ तो किसी भी कार्य के प्रति गंभीर रहने वाले व्यक्ति होते हैं जो समय के अनुसार अच्छी उन्नति की चाह रखते हैं। परंतु इस माह अनावश्यक सोच के कारण तनावपूर्ण स्थितियाँ उत्पन्न हो जाती हैं। जिसके कारण बनते हुए कार्य भी बिगड़ सकते हैं और मानसिक परेशानियां बढ़ सकती हैं। ऐसे में आप किसी भी कार्य को सोच समझकर और पूर्ण जिम्मेदारी के साथ करें। आप साहसी तथा पराक्रमी व्यक्ति होते हैं और आपके अंदर किसी भी कार्य को करने की क्षमता होती है परंतु मानसिक तनाव के कारण घबराहट और परेशानियां बढ़ सकती हैं,



विस्तार से पढ़ने के लिए क्लिक करें - कर्क राशि

सिंह राशि

सारांश :- आप महत्वाकांक्षी व्यक्ति होते हैं। आपकी सोच बहुत ऊँची होती है। सदा नेतृत्व की चाह और मन के अनुकूल कार्य करने वाले व्यक्ति होते हैं, जो कार्य में विश्वास है। इसलिए आप किसी भी कार्य को पूर्ण

जिम्मेदारी के साथ ही करना पसंद करते हैं। ऐसे में इस माह आपको कामकाज से संबंधित अच्छी सफलता प्राप्त होने की संभावना है। यदि आप जल्दबाजी में तथा गुस्सा में कोई कार्य करेंगे तो आपको नुकसान होने की संभावना है। अतः किसी भी कार्य को जल्दबाजी या गुस्सा में करने का प्रयास न करें। अन्यथा आपको नुकसान हो सकता है। इस माह में कार्य से संबंधित अच्छी सफलता प्राप्त होने की संभावना बन रही है। चाहे आप नौकरी करते हो या व्यवसाय...

विस्तार से पढ़ने के लिए क्लिक करें - [सिंह राशि](#)



कन्या राशि

सारांश :- आप किसी भी कार्य को पूर्ण विचार करने के उपरांत ही करने का प्रयत्न करते हैं। आपके अंदर सोचने और समझने की क्षमता अच्छी होती है तथा आपकी स्मरण शक्ति तीव्र होती है। आप अपने मन के

अनुकूल कार्य करने वाले होते हैं। ऐसे में इस माह में आपको अपने कार्य व्यवसाय से अच्छी सफलता प्राप्त होने की संभावना है। हालांकि बीच-बीच में कार्य व्यवसाय में उतार-चढ़ाव की स्थितियाँ देखने को मिल सकती हैं। क्योंकि राहु मिथुन राशि में संचार कर रहा है। जो करियर के दृष्टि से तनावपूर्ण स्थिति उत्पन्न होंगी...

विस्तार से पढ़ने के लिए क्लिक करें - [कन्या राशि](#)



तुला राशि

सारांश :- इस माह में आपका आत्मविश्वास प्रबल रहेगा। कामकाज के क्षेत्रों में वृद्धि देखने को मिलेगी। आप जहां भी प्रयासरत होंगे, वहां पर कामयाबी अच्छी प्राप्त हो सकती है। आप एक सुलझे हुए व्यक्ति की तरह कार्य करने वाले होते हैं। आप हमेशा हर चीज में संतुलन बनाकर चलने वाले होते हैं। अपने और अपने परिवार के बारे में अच्छा सोचते हैं तथा हर किसी व्यक्ति के साथ मध्यर संबंध बनाए रखने का प्रयास करने वाले होते हैं। इसलिए आपको हर जगह अच्छी सफलता प्राप्त होने की संभावना इस माह भी बनती दिखाई दे रही है। इस माह में धन अचल संपत्ति प्राप्ति का योग अच्छा बन रहा है। तथा आपके सगे-संबंधियों से संबंध भी अच्छा रहने की संभावना है। क्योंकि गुरु स्वयं धनु राशि में संचार कर रहा है...



विस्तार से पढ़ने के लिए क्लिक करें - [तुला राशि](#)

वृश्चिक राशि

सारांश :- आप साहसी तथा पराक्रमी व्यक्ति होते हैं। परंतु जिद करने की वजह से आपको अच्छा खासा नुकसान उठाना पड़ सकता है। इसलिए किसी भी कार्य को सावधानी पूर्वक ही करें। जिससे आपको कामयाबी अच्छी प्राप्त हो सके। आपके अंदर किसी भी कार्य को करने की क्षमता अच्छी होती है। परंतु इस माह में आपका मन विचलित रहेगा और आप घबराहट तथा परेशानियां महसूस करेंगे। ऐसे में आपके लिए अपने मन को एकाग्रचित कर किसी भी कार्य को करना अच्छा रहेगा। ज्यादा से ज्यादा गलत संगतियों से दूर रहने का तथा अनावश्यक...



विस्तार से पढ़ने के लिए क्लिक करें - [वृश्चिक राशि](#)

धनु राशि

सारांश :- इस माह में आपके आत्मसम्मान में बढ़ोतारी होगी। जहां भी आप कार्यरत होंगे वहां पर आपको सम्मान की दृष्टि से देखा जाएगा। तथा कामकाज को भी बेहतर दिशा मिल सकेगी। इससे आपके सभी प्रयास सफल होने की संभावना रहेगी। क्योंकि यह माह आपके लिए काफी अच्छा और उन्नतिदायक होगा। गुरु स्वयं धनु राशि में संचार कर रहा है जो आत्मविश्वास के साथ किए गए कार्य से अच्छी सफलता प्राप्त होने की संभावना बन रही है। इस माह में धन अचल संपत्ति प्राप्ति का योग अच्छा बन रहा है। तथा आपके सगे-संबंधियों से संबंध अच्छे रहने वाले हैं।



विस्तार से पढ़ने के लिए क्लिक करें - धनु राशि

मकर राशि

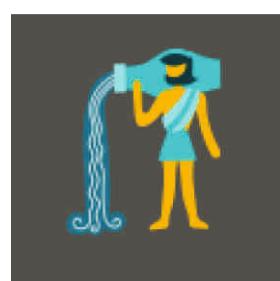
सारांश :- इस माह में आपको काफी भागदौड़ तथा तनावपूर्ण स्थितियों का सामना करना पड़ सकता है। इस दौरान कई अनावश्यक यात्राएं भी करनी पड़ सकती हैं। जिसके कारण आपके स्वास्थ्य को लेकर भी तनाव उत्पन्न हो सकता है। ऐसे में किसी भी कार्य को सोच समझकर करना तथा स्थिरता और गंभीरता पूर्वक विचार करते हुए करना चाहिए। जिससे कि तनाव कम हो और कार्य सफल हो सके। इस माह में धन अचल संपत्ति को लेकर तनाव उत्पन्न होने की संभावना भी बन रही है। आपके सगे-संबंधियों से संबंध खराब हो सकते हैं। मानसिक अशांति तथा तनावपूर्ण स्थितियाँ उत्पन्न हो सकती हैं।



विस्तार से पढ़ने के लिए क्लिक करें - मकर राशि

कुंभ राशि

सारांश :- आप गंभीर प्रवृत्ति के व्यक्ति होते हैं। किसी भी कार्य को स्थिरता और गंभीरता पूर्वक करने का प्रयत्न करते हैं। जिससे आपको कामयाबी प्राप्त होने की संभावना अच्छी बनती है। आपका प्रयास सदैव सफल होने की ओर रहता है क्योंकि आप अपनी रणनीति के तहत कार्य करने का प्रयास करते हैं। इस माह में आपको आर्थिक लाभ प्राप्त होने के अच्छे अवसर प्राप्त होंगे। आप जिस किसी क्षेत्र में कार्यरत होंगे, उस क्षेत्र में आपको अच्छा लाभ प्राप्त होगा। यदि आप व्यवसाय करते हैं तो व्यवसाय से भी आपको अच्छा लाभ प्राप्त होगा तथा आपके व्यवसाय में अच्छी उन्नति देखने को मिलेगी....



विस्तार से पढ़ने के लिए क्लिक करें - कुंभ राशि

मीन राशि

सारांश :- इस माह में आप कंफ्यूजन तथा तनाव में हो सकते हैं। जिसके कारण कार्यक्षेत्र पर बुरा असर पड़ सकता है। निर्णय लेने की क्षमता कमजोर होने के कारण परेशानियां ज्यादा हो जाती हैं और आप अपने कामकाज में सफल नहीं हो पाते, इसलिए आप किसी भी कार्य को सोच समझकर पूर्ण ज़िम्मेदारी और अपने ठोस निर्णय के साथ करने का प्रयास करें। जिससे आपको समय के अनुसार कामयाबी अच्छी प्राप्त हो सके। इस माह में धन अचल संपत्ति प्राप्ति में व्यवधान उत्पन्न हो सकता है तथा आपके सगे-संबंधियों से संबंध खराब हो सकते हैं। इसलिए आप अपने सगे-संबंधियों से सामान्य संबंध बनाए रखें तथा अचल संपत्ति प्राप्ति के लिए प्रयास न करें।



विस्तार से पढ़ने के लिए क्लिक करें - मीन राशि

व्यक्ति को कैसे डुबो देता है जन्मकुंडली में बना गुरु चांडाल योग ?



भारतीय ज्योतिषशास्त्र के अनुसार जन्म कुंडली में अनेकों शुभ-अशुभ योग निर्मित होकर मानव जीवन पर सदैव अपना प्रभाव बनाये रखते हैं और समयानुसार मानवता की स्थितियों को प्रभावित करते रहते हैं। आइये आज हम बात करते हैं आज जन्म कुंडली में बन रहे गुरु चांडाल योग की।

गुरु चांडाल दोष क्या है?

जन्म कुंडली में चांडाल योग राहु और गुरु की युति या दृष्टि संबंध से बनता है, जिसे हम गुरु-चांडाल योग के नाम से पुकारते हैं।

गुरु चांडाल दोष का प्रभाव

गुरु ग्रह ज्ञान, धर्म और सात्त्विकता का कारक है, तो दूसरी तरफ राहु सदैव व्यक्ति को भ्रम में डुबोये रखता है, व अनैतिक संबंध, अनैतिक कार्य, जुआ, सट्टा, नशाखोरी, अवैध व्यापार, आदि का कारक है। इन दो ग्रहों के

सम्मिलित प्रभाव से जातक की कुंडली में बन रहा गुरु चांडाल योग व्यक्ति को प्रभावशील बनाये रखता है।

राहु गुरु के प्रभाव को नष्ट करता है व उस जातक को अपने प्रभाव में जकड़ लेता है और ऐसा राहु उस व्यक्ति में हिंसक व्यवहार आदि प्रवृत्तियों को भी बढ़ावा देता है तथा अपने चरित्र पतन के बीज बो देता है और नतीजतन व्यक्ति अपने चरित्र को भ्रष्ट कर देता है। गुरु चांडाल से जुड़ा हुआ व्यक्ति सदैव अनैतिकता तथा अवैध क्रिया - कलापों में मग्न रहता है। चांडाल दोष के निर्माण में बृहस्पति को गुरु कहा गया है तथा राहु को चांडाल माना गया है। गुरु को चांडाल माने जाने वाले ग्रह से संबंध स्थापित होने से कुंडली में गुरु चांडाल योग का बनना माना जाता है।

गुरु चांडाल योग जातक को बहुत अधिक भौतिकवादी बना देता है, जिसके चलते ऐसा जातक अपनी प्रत्येक इच्छा को पूरा करने के लिए अधिक से अधिक धन

कमाना चाहता है और इसके लिए ऐसा जातक अधिकतर अनैतिक अथवा अवैध कार्यों को अपना लेता है। सामान्य भाषा में कहें तो यह योग शुभ नहीं माना जाता। यह चांडाल योग जिस भाव में होता है, उस भाव के शुभ फलों की कमी करता है और पराई स्त्रियों अथवा पराये पुरुषों में मन लगवाता है। इस प्रकार कहा जाए तो गुरु चांडाल दोष जीवन में अनेक प्रकार की समस्याओं को जन्म देता है और व्यक्ति की गिनती समाज के अच्छे लोगों में नहीं होती तथा उसे अनेक क्षेत्रों में समस्याओं से जूझना पड़ता है।



गुरु चांडाल दोष देता है संघर्ष

यदि जन्म कुंडली के लग्न यानि प्रथम भाव, पंचम, सप्तम, नवम या दशम भाव का स्वामी गुरु ग्रह होकर चांडाल योग बनाता हो, तो ऐसे व्यक्तियों को जीवन में बहुत संघर्ष करना पड़ता है और अपने भौतिक जीवन में अनेकों बार गलत निर्णयों से नुकसान उठाना पड़ता है। पद-प्रतिष्ठा को भी धक्का लगने की आशंका रहती है।

गुरु चांडाल दोष के ज्योतिषीय उपाय

गुरु चांडाल दोष कुंडली में बनने वाला एक अत्यंत ही तीव्र और प्रभावशाली योग है जो जातक को अनेक क्षेत्रों में परेशान करता है। इसलिए समय रहते इसके उपाय कर लेना ही सबसे

बेहतर विकल्प होता है। हालांकि उपाय करने से पहले कुछ विशेष बिंदुओं को जान लेना भी आवश्यक होता है, ताकि उपाय सटीकता से किया जा सके। सर्वप्रथम यह देखना आवश्यक होता है कि गुरु चांडाल योग किस राशि में बन रहा है। यदि वह राशि बृहस्पति की अनुकूल राशि है, तो केवल राहु के दान और उसके उपाय करने चाहिए और बृहस्पति को शक्ति देने के लिए बृहस्पति के मंत्रों का जाप करना चाहिए, लेकिन इसके विपरीत, यदि बृहस्पति शत्रु राशि में हो, तो बृहस्पति और राहु दोनों के उपाय करने चाहिए। यहां नीचे हम आपको कुछ उपाय बता रहे हैं, जिनको करने से यदि आपकी कुंडली में गुरु चांडाल दोष उपस्थित है तो आप इन उपायों के आधार पर उस दोष से मुक्ति प्राप्त कर सकते हैं:

- सर्वप्रथम गुरु चांडाल दोष के उपाय के रूप में राहु के मंत्रों का जाप करवाना चाहिए और राहु संबंधित दान जैसे की काली उड्ढ, काले तिल, नीले वस्त्र, गोमेद रत्न आदि का दान करना चाहिए।
- जब भी आपके लिए संभव हो गरीब बच्चों की मदद अवश्य करें और यदि आप विद्यार्थियों को पढ़ाई का सामान दान करते हैं या स्टेशनरी दान करते हैं तो सबसे बेहतर रहेगा।
- इसके अतिरिक्त किसी गरीब व्यक्ति को आर्थिक तौर पर सहायता देकर भी उसके बच्चों की पढ़ाई में मदद कर सकते हैं।
- हनुमान जी की नित्य प्रति उपासना करना और हनुमान चालीसा के साथ बजरंग बाण का पाठ करना काफी अनुकूल फल देता है।
- इसके अतिरिक्त आपको बरगद अर्थात् वट वृक्ष की जड़ में प्रतिदिन कच्चा दूध अर्पित करना चाहिए।
- किसी योग्य ब्राह्मण के द्वारा गुरु चांडाल दोष की शांति कराना भी उत्तम रहता है।

- समय-समय पर और विशेषकर अमावस्या के दिन गौ माता को हरी धास खिलाना बेहतर रहेगा।
- शिवलिंग पर प्रत्येक सोमवार को नियमित रूप से जलाभिषेक करना और शिव जी की आराधना करना सर्वोत्तम उपाय है।
- इसके अतिरिक्त आप समय-समय पर रुद्राभिषेक अवश्य करवाएं।
- गणेश जी और माता सरस्वती की आराधना करना भी अच्छा फल प्रदान करता है।

- गुरु संबंधित शुद्ध उपायों को अपनाएं और राहु संबंधित वस्तुओं को स्वयं से दूर करें, अच्छे लोगों की संगति करें, ताकि गुरु चांडाल का प्रभाव आपके ऊपर से धीरे-धीरे समाप्त हो जाए।

इस प्रकार उपरोक्त उपायों के द्वारा आप अपनी कुंडली में बन रहे गुरु चांडाल दोष से मुक्ति प्राप्त कर सकते हैं और काफी हद तक उसके प्रभाव को कम कर सकते हैं।

Know when your Destiny will shine!

Brihat Horoscope

Buy Now >

Price @ Just ₹ 999/-



पुर्नीत पाण्डे

ज्योतिष सीखें भाग-3

पिछली बार हमने प्रत्येक ग्रह की उच्च नीच और स्वग्रह राशि के बारे में जाना था। हमने पढ़ा था कि राहु और केतु की कोई राशि नहीं होती और राहु-केतु की उच्च एवं नीच राशियां भी सभी ज्योतिषी प्रयोग नहीं करते। लेकिन, फलित ज्योतिष में ग्रहों के मित्र, शत्रु ग्रह के बारे में जानना भी अति आवश्यक है। इसलिए इस बार इनकी जानकारी।

ग्रहों के नाम	मित्र	शत्रु	सम
सूर्य	चन्द्र, मंगल, गुरु	शनि, शुक्र	बुध
चन्द्रमा	सूर्य, बुध	कोई नहीं	मंगल, गुरु, शुक्र, शनि
मंगल	सूर्य, चन्द्र, गुरु	बुध	शुक्र, शनि
बुध	सूर्य, शुक्र	चन्द्र	मंगल, गुरु, शनि
गुरु	सूर्य, चन्द्र, मंगल	शुक्र, बुध	शनि
शुक्र	शनि, बुध	सूर्य, चन्द्र	गुरु, मंगल
शनि	बुध, शुक्र	सूर्य, चन्द्र, मंगल	गुरु
राहु	केतु, शुक्र	शनि, सूर्य, चन्द्र, मंगल, गुरु	बुध

यह तालिका अति महत्वपूर्ण है और इसे भी कण्ठस्थ करने की कोशिश करनी चाहिए। यदि यह तालिका बहुत बड़ी लगे तो डरने की कोई जरूरत नहीं। तालिका समय एवं अभ्यास के साथ खुद व खुद याद हो जाती है। मोटे तौर पर वैसे हम ग्रहों को दो भागों में विभाजित कर सकते हैं, जो कि एक दूसरे के शत्रु हैं -

भाग 1 - सूर्य, चन्द्र, मंगल और गुरु

भाग 2 - बुध, शुक्र, शनि, राहु, केतु

यह याद रखने का आसान तरीका है परन्तु हर बार सही नहीं है। उपर वाली तालिका कण्ठस्थ हो तो ज्यादा बेहतर है।

मित्र-शत्रु का तात्पर्य यह है कि जो ग्रह अपनी मित्र ग्रहों की राशि में हो एवं मित्र ग्रहों के साथ हो, वह ग्रह अपना शुभ फल देगा। इसके विपरीत कोई ग्रह अपने शत्रु ग्रह की राशि में हो या शत्रु ग्रह के साथ हो तो उसके शुभ फल में कमी आ जाएगी। चलिए एक उदाहरण लेते हैं। उपर की तालिका से यह देखा जा सकता है कि सूर्य और शनि एक दूसरे के शत्रु ग्रह हैं। अगर सूर्य शनि की राशि मकर या कुंभ में स्थित है या सूर्य शनि के साथ स्थित हो तो सूर्य अपना शुभ फल नहीं दे पाएगा। इसके विपरीत यदि सूर्य अपने मित्र ग्रहों चंद्र, मंगल, गुरु की राशि में या उनके साथ स्थित हो तो सामान्यत वह अपना शुभ फल देगा।

अगर आप एस्ट्रोसेज की साइट पर जाना चाहते हैं तो यहाँ [क्लिक करें](#)

ज्योतिषी से प्रैन पूछें



- के.पी. सिस्टम
- लाल किताब
- नाड़ी ज्योतिष
- ताजिक ज्योतिष

अभी पूछें »

स्पेशल कीमत:-

₹299/-

संपर्क करें

+91-7827224358 ,

+91-9354263856

Email:- sales@ojassoft.com

www.astrosage.com